विश्वनाथ सिंहकृत रामायण

श्री

नी रामकथांकलि मल्हिषभंज़ांनी रसिकनमनरसरंगवरषनी संस्कृतसोकसंतापकरषनी जासु
वरनवरसघटसुलोचन पेकउकरनअघोषवलोचन षटसंवादसहितसोइ कथा गुरप्रसादकहिहौं
मतियथा जोमेगुनगनगनरामके दमनदंभपाषंडग्रामके समनप्रकृतनसोसकलत्रासके जंनम
नशातिकथनुहुलासके मोहहिरनाकसिपुनहरिसे कुमतिकदलिनिकरुकारिसे दोहा सुमिर नर
नतीगुनरामकेहोत परमचितचाउ गुननगुरनअघगननसवत्रदतरामपदनाउ ७ चौपाई राम
कथाआनंदरसजोरी होतमगनसेहरमतिभोरी सारदसेसुपाउहिपारा कहौंअज्ञकिमिसोश्रुति
सारा दंभकपटपाषंडलपेटा कामक्रोधकीन्होमोहिचेटा कुमतीकुरकुमारगचाली संगतरुहिसी
उनकहंमाली अधमधुरंधरमननहिनेकौ औगुनसदननसदगुनयेकौ पैदयालरघुनाथउदा
र करेसरनकोंयेकअधारा कविगनसमतिजातिनहिमरकी निगमअगमकीरतिरघुवरकी नद
पिजयामानिकथारामकी कहँहितोनिधनधरमधामकी सोरठा करि "मतिप्रसविलास विचरन
सकलविहंगरस रामकथाआकास जदपिनपाइनपारकहु दोहा एकसमयहरहरषसोंवेठेगिरि

हकृपाअनादिपहकहहिंसुनीसनपाहिं सुनहिंसुमुषिसोरामरसरहहुंभगनजेहिमाँहिं १० चौपाई माया
मयजगजहँलगिकोई मनविलासजहँलौपुनिहोई नैननिश्रवननिदेषिपुसुनिए नहंलोसगिरिग
जाथरगुनिए व्यापकसर्वभूतमहँजोई जाकोकबहूँनासनहोई अतुलरूपसदृदिननधारी जियत्र
सरगिरिराजकुमारी सासीचितआनंदअषंडा समनाहिविप्रव्यापकब्रह्मंडा परआतमपरब्रह्म
सरूपो नाहिनिरक्षरनिगमनिगाइसों नेजअसंघ्यतरनिसमजाको कहिनसकतवेदहुंवणवाको
प्रियासोपरनेंपरमधुरामा मनहरजासरूपअभिरामा दोहा सोइनिरक्षरानोनहैंसोईवसतगोलो
क द्विभुजधनुधरमोदमयकारनापरमअसोक ११ चौपाई सरजडसकतिहिंअक्षरअंसा ब्रह्मनि
रक्षरकलाप्रसंसा रामनिरक्षरं नीतभवानी जाहिभजतमुनिवरविज्ञानी भनतासुक्षरजानो ॥ इहां
नेजनासुअक्षरउरआनो तिहिप्रकासघननिरषननीको आउनिरक्षरानीनाहिंठीको परमगोप्यप्र
मनजोइजानो भगतिवासनाकेउरठानें रामरूपजेजगहिनदेषें रामभगतवधुतिन्हेंनलेषे ज्ञान
विज्ञानजोगतपध्यांना करिसमाधिरामहिनहिजाना तोनिरफलसाधनमनमोरे ज्योंकेवलश्रमकूस
पछोरे दोहा सकलनिदम्भकेनामसववसरसएकनेरक सम्मकलो रामनामसविवेक ॥

बाल॰
२

कैलास ध्यावत रीं सो रूप उर बाढत परम हुलास ८ चौपाई ॐ सेन लसत के हरी छाला बर अंग चलित वि
भूषण ब्याला कुंद वदन विलस हि छवि छाए आवत उर बांहु सोहाए इंदु अमल अति सोह लिला
र छवि मै छाजनि सवत नछारा कलगल भलि कपाल मय माला नैन नलिन कछु अरुन विसाला॥
जटाजूट गंगाजुत सोहैं अनिवर अमर निकर भव जो है परमप्रसन्न पेषि पति रूपा पारवती किं प्रम
ल अनूपा कोसर को अक्षर सो बताओ कहि निरसार कहि कहि गांवो नाहं केपर जो कछु होई सो जन नाथ

नाम

न राषे उगोई दोहा अजगोनीत परेम्ह हानिरूप्य धाम चरित हुति मि अस कौन कि मिकारत तुम अ
मिराम अगुन अनूप अनंद मय कौ व्याप कपर काम कहहुं नाथ तुम जपहुं केहि जो सनि होहु रुला
सर ८ चौपाई सुनत सषी अति भए महेसा रोम हरष नैन प्रनसमुवेसा रहे घरी है मगन महाई सो
सुष दसहि सकहि को गाई बहुरि ग्यांन ध्यान हि उरधारो गदगदगर बरवचन उच्चारो धनि हिंसराहि
गोविंद गुनाली भवन भरी जल आंखि विसाली धंन्य धंन्य भूधर धिय भागी जो हरि कीरति मैं अनुरा
गी मिसि कर वचन न हरि आन हुं काहीं करति कथा सह सुनि छनु मांही से सङ्खुनि नबनि सादर कहहीं नसजोग
वलि क्रम भरहा जसो मनहीं कागभसुंडि गरुड़ प्रति गांवहि सुनै सानिकनि सदहि सुनावहि दोहा षल्ज

आनंदआलयअमलअनूप दोहा चारिद्वारगोलोककेमध्यसरससाकेत तहंसवदिनश्रिंगारम
यरघुवरकिएनिकेत २४ चौपाई वनवसंतचकदछिनद्वारा तहंषेलतरघुनाथसिकारा अरुपछि
मवृंदावनसोहै निरषतहीमुनिगनमनमोहै गोपिनकेसंगतहंविहारा करतकृस्नचित्तसउदारा॥
भेदनरामकृस्नकेरूप करवंसीकरधनुषअनूप अरुउत्तरआनंदवननीको ललितकेलियलरंजन
जीको विविधिविनोदकरैसियराम लैसंगसषिनसवंनअभिराम पूरुववनअसोकअभिरामा फूल
निरारिकरतछविधामा जुथ्थपसषासजनापीनामा जेहिसंगविहरिलहतविश्रामा दोहा वरवांननके
जेदकोजवरघुवरमनलेइ मध्यसषसषीपुनीतअतिहोतलंकपतिसोइ दछिनद्वारपरपहरतजप
छिमविभीषनभ्राज उत्तरअंगदहरवहुसोहसुग्रीवसमाज सोरठा अनुपमआनंदपानि सुछि
विधिविहरतईसनृप सुमिरहुंसदहिंमजानि तासुवेषवररापिउर दोहा ऐहेमकाररघुनाथकोलीला
ललितउदार एकयुगअरुमगरएकसुनिवरकरहिंप्रचार २५ चौपाई सत्तासाकेतहिंनहिंभेदा॥
वरनतमुनिपुराननवरवेदा निजिकिसोररूपनहंलोनो पलभरिविलगहोंहिंनहिंदोनो अतिप्रकाश

बाल
४

कारनकारजफलहुँ पहहरिविधिमोहिमयजांनु निगममूलजेमनवकोमलपाहिउरआंनु १२ चौपाई मुक
तिजीवब्रह्महुकोरूपा अंतरजामियहिनामअनूपा सबकोकारनपरमप्रकासक स्वयंप्रकासलोकसब
व्यापक अषिलसंतापदोषअपहारी सुमिरतहींपरमानंदकारी परमजोतिरूपैसियरामा गुनातीत
यहनामललामा सकलसिद्धमंत्रनिकोनायक सर्वेवरनउच्चारनलायक कहतमधुररसनहिंउप
मावै जिहिजपिसहसनामफलपावै अघजारनमहं यहिबलजेतो करिनहिसकतअघीअघते
तों उलटजपतपरमफलदाता मोहिमोंनाथिप्रजांनहिजाता दोहा मनवपाहितेमनवनेगायत्री
श्रुतिमांनु तातेरामाप्रणवअग्रजमनुजसमैविख्यात सोरठा जनुसुदमंगलषानि विरतिविज्ञानस
मेममप्र अंतपरमपददानि अधमउधारनविरदजेहि १३ चौपाई धातुरमहुँसुषदितमहिमाहीं
तातेयहिसमयहैसदांही विज्ञानीमुनिब्रह्मसरूपा तेजरमहिसुनामअनूपा अवहुउसादर
त धामरामकों अजगोतीगेलोकनामकों सकललोकपरमममहाई सुमिरतहींमुदमंगलदाई ज
गतमूलपैप्रकृतिरहितहैं सतचितआनंदसकतिसहितहैं जाकोंआदिमध्यनहिंअंता सदहिमसस
हिसुरश्रुतिसंता अवनिलोगनतनतरुतहंकेरे सरवरभूधरधामघनेरे नित्तिअनादिब्रह्ममयरूपा॥

उदार होइ सोईजो नृपति बिचार मोसमानको अनहिराजा मही मगरि हैंसहित समाजा मागु मागु बर
फिरि अनुरागी बोले मोमुदित नृप बडभागी जोमो परपर संचर शाला तो दीजे पर प्रेम रसाला सोरठा
बाल भाउ सुख सार पाऊं में आनंद घन जब लगि रहत तुम्हार तब लगि जीव न होइ जग दोहा होई
सोई प्रभु कृपा सोमा गुन नहिं अवराति तब समति रूपो मुदित अति बोली जोरि सुबानि सोरठा रहैं मोहि छ
बि धाम सोंनसहित सुत प्रेम पर एवमस्तु कहि राम अंतरधान भए बिहंसि १८ चौपा नृपति सति
पुनि तन तजि कछु काले बसे जाइ सुख सो सुर आले फिरि अवतरे अजोध्या आई भए चक्रवर्ती जिस छ
ई दसरथ ध्यान भई अग्र रानी पतिव्रत रूप सील गुन खानी भोगति भोग निवेस सिरानी तब अंश बनिय
सुत चिंता मानी सकल मुनीस न बिनय सुनाई गुन बसिष्ठ निज सोक जनाई ह्वैं प्रसंन तिन जाग
करायो पुत्रेष्टि नृप इ लिन पायो नास ऋषि धर्म कौशिल्या हि दीन्हो रहे उ सो उभय भाग भुनि कीन्हो तामें
ऐक सुमित्रहि दय ऊ ज्यो सो जुगल भाग फिरि करेऊ दोहा ऐक भाग तामे हर रषि दीन के कई कोह ज्यो सु
मित्रहि पुनि दिये जे हिं जां नि नृप नाह किये मुदित रानिन अस न नृपति सनीति विलास देत प्रजन सुष
धरी कौल कछु बिन सो सुख न आस १९ चौपाई भेद षभरी षलन अघभार भूरि भाग प्रजन भो संसार सेवरी आ

बाल ५

निधि अवधनिवासा सियारामकों आनंददासा लीलायुग्मनाहिं कोकहिपे गुननगुननपरसे महिलहि
पे बालआदिविय जहंलगि धरहीं विश्वविलास विविधिविधि करहीं सोलीला प्रगट करावै सु
मिरत निरखत मन हरखि वहावै लीला प्रगट करन के हेता महिइमि मगरन कृपानिकेता मनुसनिरूप
धउनपकीनो नेजआधिकनन भोअनिषी ना दोहा विधि हरि हम वरदे नहि तिन गए नहां पहुवार चेला
नचित तेहिं धीरकों चाहि सो राम उदार १६ छंद सेवक स्वामी प्रगट भयो तनधनदुग्नि हारी अमरं
नधारी अंबर छन छवि स्व छवि छयो करधनुसर सोहैं मुनिमन मोहैं नेहियनभड भूमतिमिरिग
यो विधिहरि हरज्ञा की वपछवि छकी रसहिं निरंनर नरे निरगुन नगुन आगर आनंद सागर
रूपरूपमनलेनहरे वांनी हरिरानीजुमहंलोभानी जाकी दुनिपर सो दमई सोइ सोभित सीता पर
उनीता वांम भाग दरसान भई दोहा रोम हरखतन नकंप अनि गदगद गरनपरांनि कहन चहन कहि
न कुनन नहिं बुधि हो उनृपलो भानि चौपाई फिरि धरि धीरज होउ कर जोरी कीन्हो अस्तुनि बहुरस बोरी
कहो रामवर मागुनृपेसा मोहिनकोटिकसहकलेसा मोकोकछु अंद इनोहिनाहीं मुनि नृपहरषि क
ह्यो मधुपांनी लखमबहुडे वरहिंकि मिमागहु नुमसम मुत सुमिरत अनिलाज हु बोले हंसि हरि तान

रमानंदसमाना तातेमुदमयभयउजलीना जाकरंजससंजोगसरसाई ताकहंजसआनंदअधिकाई ज
जनमहरखफिरिउजरावभारा धरमवृद्धिपुनिमोदअपारा श्रवनिमुजनरूमधधारनिव्राजा मोच्चति
महिसवआयुसमाजा कोकनदनिरजनीरतनारी समिटेराजहंसधुनिधारे निहिमिमिसजिसारि
नजुनगांना रामदरसलालचेअमाना नदीनीरजलजससमुदाई नैनउघारिरुसीछविछाई लहरु
रिकरानिमभुमिलइनिकांती फेलायेमनुतेहिंछनमाहीं दोहा निजभिदलिये फगागमुदकारनसघनवु
हवाइ मसरितमोदमसंन्नमनहूरिउसाधुविकाइ स्वपंजलिनरसिनशिवाहननमुअगिनिनिहारि
छस्वरनिधंनतिहचैकिएलिपमअजनमविचारि वापगांनन्नत्मंकुंकारजसुरगंध्रवगनमोइ देनसव
रिअंनरजुनभभयेपोनिरंजरसोइ २२ चौपाई वनगिरिवरमतिध्वनितेछाए निमिबगकुलनिमध
रघुनिभाए मंगलमयपविलसहिंवृहुंधाहीं देवराजतेहिअवसरमाहीं सहससद्रिगनिवहृदिसिमुद
देखी गौतमश्रापअसीसेलेखी अतिकमनीयतनयसखदांनी नकिंचकिछकीकोशिलारानी ललि
तनतहुरिसालसेमिरीनी भरीसुछविउपमनतेहीनी अरसीसुमननिदरिअंगछाजे अरुनअधरकर
चरनविराजे जोइनिरखनसोइचकितछकनहैं नहिनपपेकोउखवरिकहनहैं सवनतहिनपघ्रवनानिसु

रा.उ.
६

द्विरद विविधि विधि आमिष आपमला सुष दुषनिधि समुद्र सावलताँ नमएजव पेककालमहंसमिटे
तेसव जगदुष देषिदया अतिकीन्हो प्रकटमिश्र गरि बेपरमति दीन्हो निरगुन सगुन अंगवर जाके जाकी
छबि लखि महरिषि विधि छाके सोदसरथ मन आपोरामा सुरनर मुनि दायक ... विश्रामा कौशिल्या मन सो
इफिरि भासो नव जनें औरै तेज प्रकासो निज निज जगमंगल छायो अवध अनंद जाइ किमि गायो
सोरठा रागरंग सब लोग राग नाच जुत गृह लसै विविधि भांति के भोग रिधि सिधि लीन्हे गलिनर
चौपाई समजन मकर अवसर जानी आए नहैं मुनिवर विज्ञानी वारवार सरवर षहि फूला मा
रुत विविधि धिवहत अनुकूला नावहिं नभ सुरतिय बहु भांती गावहिं गंध्रप जौतो किन्नर जाती ब्र
ष सादिक सुर खूंदे विमाननि षरे लसै विगसित नकमलालन दिगमसंनदत नजल जसुलायो आनंद अ
नुपम भयो भरिभासो षेर भैर सनसन हरसंगीलो मनमथ अंबुधि बढत छबीलो षरीषरी पुर आगम जानी
साधत लगन सुभमति रससानी हरष भरे नपषवारि लेहां वहि घन छन महं अलिगन चदह वावहि दोहा॥
जोगलगन ग्रह सकल सुभ सफल होन के हेन धरि धरि तन नलिप हराषि अति वैठे सुभगनिकेत मधसित न
वमी दिवस मधि अरि तम अभिजित नछ्त्र पर ... सतत चित आनंद सत्व २९ सहजाहिप म ६
मि

मरजूमिलीसुषसार ३३ तजोसषषनगुलाल विचवीचनाचहिवाल सांवनसोजघनैमनो जनुचपलावम
कैषनो दोहा एकहिगहिगहिकलसकरधांवहिंषूटेकेस चंदनचूरकपूरयकमलनी सुषनिसदेस २४
चौपाई यहिविधिनारीअतिरंगराती लाजविहाइफिरैमदमाती रागरवेषवरंगेरंगधावै भोदरमृगम
दमलयउडावै नपसानंदवएनिनहिजाई जनुत्रिभुवनसुषसनतुलपाई सुषकोशिलाजाइकि
मिगायो जेहिआनंदकोआनंदजायो सवहिनिजनिजनिलपलुटाये प्रमुदितनिनदीन्हेजिनपाए
छत्रचवरभूपतिपहंवाचौ दानवीररंगसोमुषराचौ रामस्पलोचंनजवदेषे भरेकोसनहिकोउस
रेषे सत्पासषलषिसषिताछाके मासएकरहिगेनहंवाके छंद करिआइसुरमुनिराधिभूपतिदांन
वहुविधिकेदिए गजवाजिमनिगनभूरिसुरभीनोदसोमुनिजंनलिए सुरूरषिवरचहिंफूलउनिएं
निविविधिवाजनवजावही नषिरामजनमउछाहमंगलगीतप्रमुदितगावही सोरठा जातकर्मसवकी
न भूपतिभारीमोदसो फिरिफिरिविप्रनदीन वेसुअनेकनभांतिकी ३५ सुतककमनीपकेकईजायो
आनंदमैआनंदनपपायो जन्मोसुमित्राजुगलकुमारा कोकहिसकेअनंदअपारा उनसवमेउत्तसव
भोजैसें कीन्होजातकर्मनृपवैसो नामकरणअवसरपहिचांनी वोलेगुरवसिष्ठविज्ञांनी सवैभूसरकं

चौ०

५

बानी लहेउ जो सुख सो अकथ भवानी सोरठा पुरी भई छबि धाम मलां मोद मैं नारि नर मगट जहीं परराम श्र
वृजारी अवधनाम मनि २२ चौपाई मंगल गाइ उठी सब रानी सुरतिय आरतिकरहिं सयानी जनम कौशि
ला सुत उरनारी सुनि सुनि भरि भरि ननननियारी करतल मंगल गान पधारी मिली तिन्हहिं अपसर उ
सिधारी सहजहिं सारबु सदि नदुनि वारी प्रति अतिहरष हंस नि छबि सारी इमि जिन मुख निछरनि
सिधराई रटो ने जरवि मंद जनाई जाइ नेई सब लिसुहि निहारी भई निछावरि रननि सारी नुपकनौ
प्रचहुं दिसि नेपूरें भारि रवगि रिकंदर फूरैं हं नै निसान मानन दे हरे जय धुनि कि षन भमंउल पूरे छंद॥
जय जै तिधु निजन पुरि अंबर बाजन ने सुबजावहीं करताल नूपुर ठीनंझ भेरी वे नुडलितन सगावहीं न्हइं
डोरन जकनु छ नाचहिं सरस गति उपजावहीं [illegible] श्रुति हरष सो तन न षबरि भूले नारि नर बहुं भांवहीं छं
द त्रभंगी सब मंगल गाए नगर सोलाए जल ज बिछाए चौक छजे वरवंदन वारे चित्रित द्वारे रतन संवारे के
तन सजे बहुनौमत बाजै जनु घन गाजै [illegible] जैनृप गन राजै भी रकि ऐं बहु मंगल आवैं हय गय पा वै भ सु
जन गावैं सुदिन हिऐं छंद लिपे बीन हांथै प्रकै गीन गावै पे कै लै मृदंग गेउ मंगे बजावैं एकै रंग गारे गहे ए
क वां ही एकै चीर षैचैं हंसे मोद माहीं छंद कर कंज लै पिचकारि भरि रंग मेलहिं नारि बहि गेल सो रंग धार

नीकीनीलीलसहिढोढ़ानिसां किलकिकिलकिकरचरनचलावहिं पगअग्रटनपीवतनखषपांवहिं परे
उतानहिपलिकानिसोवहिं घनमहंहंसहिछनहिंमहंरोवहिं कवित्त पासपरमप्रकासीउदाइप्र
तछविदुलरावतिझुलावतिफूलैंधरें लषिलषिविधमुषअतिहिअनंदितहैसमुषिसोवावतिसोंगा
वतिहेरेहेरे वानीहरिरानीमहारानीकौसल्याहैभागनिरषेंसकलसुरआनंदभरेभरे अनमअपारसब
वदनकोसारसोईश्रीरामअगूठपेषैंपलनापौढ़े दोहा धरिधरिरहतसमाधिमुनिजेहिलगिननछिविसा
रि तेहिलैलैचूमहिंसुषहिंअवधनगरनरनारि २७ चौपाई अवसरगुनिनृपगुरपहंआयौ प्रसनीहि
नसुभसुदिनधरायो ग्यानिभूपसबनेवनिबोलाए आइअवधअतिहौंसुषपाए बालविभूषनतिन
पहिराए मधुलिराउतन्हहिंजुनसजनभाए मनिमुठकीघनूषनासुहाए लषहिलगाइदीठिमुदछा
ए पांयसादिपरकारबनाए रंगनायकहंभोगलगाए नेहलैकछुसिसमुषनिछुड़ाए महामोदसोम
वमिलिषाए उठिसंगअचैपानमुषदीन्हें विविधिसुगंधनिकेसुषलीन्हें उनिप्रमुदितदसरथगृह
आए भूषनपटगजतुरंगमगाए दोहा जथाउचितदियसबनिकहंसाहितप्रीतिसनमान छकेछ
लेसुवेनछविगएनेअरनवबाज बंद महिब्योमसुहाईबजहिंवधाईदेषनआईसुरप्यारी रतिसची

जानेसमै बिज्ञानीमुनिज्ञामेरमै आनंदसिंधुजासरुपभासे सीकरतेंभवभरिप्रकासें जाकेनामअनूपअनं
ता सुमिरनअभयहोहिंसबसंता निरगुनसगुनअंगजेहिंभूपा लीलाजासपरमसुबरूपा सोरठा ज
पहिंजाहित्रिपुरारि ब्रंह्मादिकसुरआसजेहिं वेदनिसारविचारि रामनामताकोकही २६ चौपाई सक
लजगतकोपालनकरता ताकोनामभरतभवहरता लछिमीजुततिहुंभुवनअधारा ताकोलछिमन
नामउदारा जोसत्रुनमारैसुरपाले तासशत्रुहंननामविसाले इनचरिहुंनमहंएगुनअहहीं येईना
मइनहिंअनुहरहीं मुनिसबकहुसुनामनिभाषा सुनिसुरनरमुनिअतिरसचाषी नपबहुदिसिनृप
निवृतितुलाए जिनतनवसनमानिटिकाए मंगलमुदितभनिविदाभएसब नपबहुगयउवेरतननदिए ए
तेव चलनचरनपगपरननधरकों छकेरूपलषिसजनमनहरकों दोहा दसरथअनुपमभागसबवि
एसराहतनेह अवधनगरवीथिनफिरतमुनिवरमनसनेह २६ अथआदिकौमार चौपाई छनछन
लषहिंसुतनजननिरानी नजरहतिमतिसुखविलोभानी मोतिनमनिनकुलेहरासोहैं हरषिहरषिचारि
उसुतनमोहैं केहरिनषकलकंठविराजै कारकमलनरेसमगनछाजै सेनकोरडिगअंजनकीन्हें रंचाविल
कडिठौनादीन्हें ठवारिकमुषछियैंदतुरिसां जननीजनककधारमनहरिसां पीनसुकरिकारीकरपनिसां ॥

हीगेरेकहैंलालकहांहोहूदेमरुनारी आंनंदसोंभरीकौशिल्यापोकहींमोसमएतनभागितिहारी अ
य अंनकोमार चौपाई इहिविधिहरिकछुकालबितोए नृपरानिनउरजननछकोए मेचकरुकुंचित
कलअलकावलि देनीगुहीलसेमुकतावलि अंजनअंबुजदृगअनियारे जंत्रमंत्ररक्षितनसुख
कारे अंगअंगरागलसहिंगलमाला बालविभूषंनचनकाविसाला पीतनीलवरअंबरधारे स्या
मगौरतंनघनभापसारे कौसल्लेसकौशिल्यालालितलालि बालविनोदविलोकहिहसिहंसि प्रेमप
योधिमगनमनहोऊ कहंलोकहैंसुकमनकविकोऊ मेमसंडकेमनुजभवानी निरखहुंबालच
रितसुखदांनी दोहा सिषतनपीनताकरिमनहुंहोंनचहतउरपीन छरीछवीलीकरलसेभालदि
ठौनादीन मातुदुलारेसुतसकलकियेपरसपरप्रीति मनिआंगनमोदकलियेफिरिहिषानासिसु
रीति २२ चौपाई सुदिनमंथुरातहंचलिआई कहिसिसुवनसोकछुमुसकाई बगरावहुंसुषचा
रिहुंभाई माषनकेंदकौरदेउनाई सुनतशत्रुहंनवदनपसारो तुरतसफूलपेकनेहिडारो लगेहन
नरिपुहंचरिसिहाई हंसतसोगेनृपनिकटभगाई कौतुकलषनहंसीसबरानी हंसिकैकेकइविज्ञ

भरत्रीनीगिरासशांनीरमालेभांनीमिलिनारी पलनापौढाइमंदम्रुलावैकलसुरगावैछकितभली लषिसिसु
छविछलकैललगैनपलकैपुनिपुनिपुलकैरंगरली रोला सबसोवीनेउक्तालकछुभेकछुतनयससांन॥
नृपरानीसछतीमजाकराहिरूपरसपान २६ अथमधकौमार फिरहिंघुटुरुवनजिरतजहत्तहैं गूं
दीलसहितटुरिसांसिरमहुं भालतिलकमसिविंदुवनाए कछुकछुअरुननैनछविछाए संगरकर
काउलाकविराजै किंकिनिनूपुरधुनिसुषसाजै लीलामृगनिगहहिंकहुंधाई उरहिंनिधाइलेइउठा
ई कहंचंदलविमचलहिंआंगन चहंमहिमुषरानीअनुरागन धारनभरिजलसमिदरसावहिं फि
रिमचलहिंजवपकरनपावहिं मनिमयमंजुलतवापनिसाकर रावहिंआनिमुषसुषसुषमाकर
जननीकहहिलेहुअबचंदहिं गहिहंसिसनमनभरहिअनंदहिं रोहा कहुंमसूरदधनिसुमिचकि
तजोसुपानिसेभागि अतिसभीनलोचनकिएजोहिमातुउरलागि कहुंहसिनेग्वनकछचैफेरन निकों
मनिमयधार हंसिहंसिरानीलषिनजुनचूमतिमुषमुषसार सोरठा ननुरोहैवचनरान चालियहरोहैं
पगनिकहुं नृपउरलषनसमान पुनिपुनिचुंमनववरनविधु ३० क० एकसमेमुनगोदलिपछकि
जोहिरसींमुषकीछविभारी रोमवरेजलनैनभरेपटकाहेकसोहरिमातुनिहारी हेसुनभाउमेरे

बिश्रामहिं आश्रम अरु धलषोसन सोई बिहरत अवनिप आंगन रोई निरषत नताहिं रामहांसिद सुषऊ
लषवत किए सो मुष मह गए जु नर हृसो उस मूह बिलोका बहु बिधि हरि हर लोक प लोका नरहुं रा
म द्विज नठौर न देष्यो सबहृ सो उस मजुहिं मस पेष्यो दोहा नलोंबि ताए कल पवहुं पनिमु षवाहेर आइ
तोई दिन सोई घरी लषि वायस अकुलाइ २५ चौपाई फिरि बिचारि रघुनाथ प्रभाऊ अस्तुति कर
न लगी श्रुति चाऊ उलकि तन नलोचन जल धारे गदगद गर हरि गुन नि उचारे नौमि नौमि हर
मन सर हंसा नौमि भानु कुल के अवतंसा परं ब्रह्म जय बालकृत्त्प रुपमका मजे हि ब्रह्म अनू
पा जाय न तस्व मत्सु भवि भिन्न तहौ अंतरज्ञ अरु अनवाछिन्न हौं सेवक संसम अति सुषद भगन के
आदि मध्य अरु अंत जगन के बिश्वरूप बिश्वंभर कारण नौमि नौमि जन संश्रित तारन तुमहि
कोउ अनूप करि माना नहिं कोउ सरूप जु वें पर पहिं चाना नहिं छंद कोउ कहहिं सापक परिच्छिन्न तुमहि
प जु वें हैं भांति कौं परधाम नाम उदार लीला गान वे जन कांति कौं तुवं । प्रबल माया बिवस सेवें जं
न भ्रमें जग नहिं छूटहीं मोहादि षल दल बलन को भल को पकारि करि ज्ञांटहीं सोरठा बिना भजन
तुव राम पावहिं जिय बहु भांति दुष सुमिरत लहि बिश्राम रहहिं मगन आनंद जेन २६ चौपाई ॥

हि अनषानी कहुँ पछिन पकरन कहुँ दोरहिं सुनि पिक सिषि धुनि नै साहिं बोलहिं कहुं बैठि एक संग हिं गां
वहिं गेंदउ षालन कहुं अति भावहिं कहुं मीसनि के महलनि माहीं लगहिं विरावन निज पर छांहीं
दोहा देषि विराजन निज हुं पुनि त्रास सहिं पांउ ३ उताइ फिरि न कितै सहि रोस करि मारहिं चरन चलाइ
२३ फोरन दरपन धाइ न पाहीं मचलहिं जाइ न पकरन काहीं बांह पकरि कहुं हसि हंसि धावहिं
कहुं जुरि जुरि नृपुर निवजावहिं सषन संग फगरहिं सब भाई कंदुक हंनि हंनि चलहिं पराई लप
टि जाइ कबहुं उनि भाई हंसि हंसि भाई दैहि छुडाई फल आदिक राषहिं जंन आगे लै उनसाहित
अति अनुरागे तिन के पात्र भूषन नि भरहीं लेहिं न सकुचत ते अपडरहीं नवम सुदित नृप रानि हुं
धाई कहहिं लेहु ते लै गृह जाई इग्यंन मृदि षेलत मुदमाने वनि वायसु भसुंड नियराने दोहा वेद
ब्रह्म पार नहिं कहं लीला है यहि भाइ ॥ अवतो मम उनाल षडुं जव पद्ह संदेह सिराइ असगुनि भागो
लै पग्रां मभु मो कौतुक कीन धाए ताके पीछ हीं कौक छु अंतर दीन २४ चौपाई भट को सात पताल धा
मसों जेहहिं लषन त तहं वैठ राम सों ॥ आव त गहन एक वउ धावें पल भरि कलन काउं का कनपाई सांतलो
क उचे हुं चढि गएऊ रामहिं न हहुं विलोकत भएऊ फिरि चहु ओर विलोकेउं रामहिं पासो नेकन कहुं

बतहुंधाई दोहा भागसभागुसनेहुसुषिगजगांमिनिसुकुमारि अमितजोदोरहिगएनसुजपरममनोहरचारि
दो० ३१ फिरिदेषैममुदितसवरानी अनुपमछविनहिंजाइवषांनी किंकिनिनूपुरसोररसाला मनिमंदिरनिभ
तोनिहिकाला सवमिलिपकरिलिएसुनजाई नहंभागेदोउमचलिछजाई अमकीपकरेहंसिजोई क प्रति
रनिछजाइभगेफिरिरोई मातनअमितविलोकिगयेगहिं षकिसुरषविजोहैंजपजसकहि केकइएम
सुमित्राभरतहि गहेहंसजसोपोकौशिल्यहि वकुरिलषनरिपुसूदनपाछे धाईसवमिलिमुदसोंआंछे जा
इगहेसुनरोवतसोहे करपदपटकतननपंनलतलोहे दोहा मांनमिपारीसुजनगहेनिरखनसुदिनसुवाल कौ
शिल्यहिसौंपतभई अकपसेभाइरसाल ३२ चौपाई त्याइतनसवंनविलोकेराजा महांमोदसोंआनन
भाजा सुननसुछविलषिसवसुषसांनी भूपगोदमहंदीन्हेंरानी वामजसरिपुहंनवैठाए जंघदाहि
नेभरतहुंभाए मध्यरामलैनृपमुदछाए चेचलतलषंनसषीरहिचढिगेए गहिसिरचरनचलावतहुं
महिं आनिकोमलपदगहिन्हिनृपभूमहिं नषदुतिदिसनप्रकाशितकरहीं नूपुरधनिकरिन्यमनहरहीं
दसिनअंजसोलषनहिंगहें गोपकरगहिभरतहिरहें रघुनंदनजनरषुपतिलषिलषि चूमहिंसुषसुषर
सडानिचषिचषि सोरठा मूषहिसिरपलकात पनिपुनिसुनिसुनिसिसुवचन अवहिंनसनजलजात ॥

निजमायातेंमोहिछंडेये तुम्हसंजनजनकारसंगकरैये जोसुषसनसंगतममतेंहोइ सोमुकुतिहुंमुनिकहहिनको
इ तिन्हिकारनपुनिपुनिसोइमागहुं जानेउंवेंचरितनिअनुरागहुं हंसिगेलेजनवरघुवररानी अतिअहुपं
मआनंदकेषानी तुवंआश्रमाहिनव्यापीमाया लहिहिभगतिजिन्हिकारिह दाया ममसासनगुरहुउंडं
उपदेसा सुनिहैकैहोंसंशिपगेसा कालनसुननरहिहोममगुनगन रहिहि सदांसिसुरूपमगनमन म
लपकुंमहंनवनासनहोइ रहिहोंसिउरसकलदुषधोइ दोहा येहिविधिअसुतिवहुनकारिकागवकु
नवरयाइ देषनलाग्योसुमहैवालचरितसुषछाइ वहुविधिविलरनफिरनसवसुनकोतुकिनविहा
रि भयउतलशावनवारवहुंमहिपतिमुदितनपुकारि सोरठा चिरंजीवहोराम भरतलषनरिपुदवनजुं
नआवहुंसवमाधामं चमहंसुषवढिवारभे ३७ चौपाई नृपतिनिकटवालककेजाइआए सोइकारिकु
हमजेअतिभाए वालभामनमहंलाललुभाने फिरिफिरिरेरहुंनहिंनियराने सजीसिरोमनिदसर
थरानी तनपसनेहसवहिसोसानी सुनपकारनकहंमनिअंगनाई हेआतुरदौरतअतिभाई ननरो
मांचनयनजलछाए गौरअंगकुनस्वेदसोहाए श्रवनतपसोधपपसोहरे षसनकुसुमकेसनिसोहहे को
नकंकलसमतुअमिकनटरही जनुनभनेतारागनझरही चंचलसतनहिपकरेजांई हंसतसुमिचौत

बिग्रह मोर है जे तीरथ नेहे न काहि हित नमगत कतनभूषकि सोर है जेभक्ति रूपिनि नरी भ्रूषिनि अंब अंबु अमो
लरै मद मुक्ति मुक्ति अनप उन्नत कलि नल लि नकलोल रै दोहा सुजसी सुंदर हाँनि वरवीर धनुर्धर धीर
परम धरम मन समारि पज रु जय रघुवंश गंभीर ८२ चौपाई जय रघुनंदन सखा मन कीने जे विधु वदन रुधार
तभो नें रूपशील व परा मरि जैसी प्रेम पसोधि मगन मति नैसी गुन संपन्न निमल ननधारी प्रभु हित परमभि
पच पसुषकारी जय रघुनाथ पदास पर से मो नित्य नंद पज जग छेमी भूरि भूति जुन अवधनेवासी जैजैजैस
बओं नंद रासी असकहि ब्रह्मादिक सुर देषहि ब्रंसा नंद न गर कारि लेषहिं निंदन निज लोकनि जलोकन
लागें नृपहि सराहि सवै अनुरागे अवधनेवासी जेहिं सुष छावें भाग्यहीन हम सौ करि पावें दोहा॥
जो पर सुषस हि अवधमहं सो नहि परगे लोक मातु पिता के मोद महं राम भरत मुद सोक चौपाई जो र
रव तप प्रबल हंमारा होइ अवधसि अवधहि अवतारा उत्पल नना त्रिनन रूप सरूपसी सेवल सरजु मी
त कीम सी इन्ह हं महं कोउ रूम लोवै सौ प्रभु पद रज लहि सुष सोवै इमि उन के दिन ललषि रघुनंदन वर सिसु
मन गे करि वरुवंदन एक समै हरि मुनि उर धारे रूपभौन कहं हरषि सिधारे सीस जटा ननदुति अति भारी।
जग तप तेज लसन वउ धारी अलिन्क कैोर बक्रन लभाए उठी सुन नराजीस षपाए ले निज स्वनगुर दिग जाई

ग्र   निज

गदगदगराखंमहिंमुषमि ४० चौपाई मुनपतिगोदललहिंसबरानी धंन्यभाग्यअतिआपनमानी जेहिंछन
नृपइकछकिसबगई पुरानंदमैवूडनभई चढेविमाननसहितसमाजहिं सुरसुबसकलसराहहिंरा
जहिं आसिषदेइअनेकप्रकारा जयदसरथमहराजउदारा जयकौशिल्याजयसबरानी परंब्रह्ममुत
मुषजेसानी जयतिरामअतिरामसरूपा राघवेंद्रमुतरतनअनूपा वातसल्यरससिंधुगुनाकर
सज्जनचातकघनवरषाकर गुनातीतअवतारनकारन हरिहरविधिवंदितजगतारन दोहा॥
जयतिसच्चिदानंदघनपररूजेपरमअनूप पुरपदधनुभंषनसबैमतचितआनंदरूप जेलछिम
नमभुपानप्रियभूपभाग्यथलवीर नमसत्सच्चिदानंदतनत्रिभुवनभूषनधीर ४१ चौपाई जयति
अनंतजगतत्रयधारन जयकंदर्पदरपसंघारन जयतिभरतभवभरनप्रवीना समचंद नचितच
दतनसुंदरमीना रामचंदचरनारविंदअलि मुजनसुवरफलकीरतिमुविमलि नपसीलादिकस
तगुनधारे जयतिशत्रुहंनजननिदुलारे पितुहियकमलफलावनिहारे प्रभुप्रतापमयवंधुपिआरे॥
सतचितआनंदघनतनधारी गुनमंदिरहंदरसबकारी जयतिअजोध्याअमलअनूपा सतचित
परमानंदसरूपा धामनगमहहरिहरविधिकेरी परतमपरापरीजेतेरी छंद हरिनेनतेउतपन्नसरजूदिव्य

केकईसदनसिधाई दोहा दासनदासिनजुतभई नकीउतविहंगअनेक गीतवाधवहुभीरतहंमुक्तगनक
रहिंविवेक ४६ चौपाई मृदंगमधुरधुनिमनुगर्जत सुनिमयूरनाचतअतिहर्षत कुलिसखंभमय।
निरचितचंदेवा फटिकसफरसमगंधनिधोवा वेठेभूपसिंघासनभ्राजे चमरचारुआलिनकररा
जै अतिकमनीयकेकईरानी हंसतिहंसावतिकहिमृदवानी हरषहिंनृपतिभरतषेलाई धुंम्राधाइ
समैतेहिआई लिपेरामअतिहीछविछाई जनुबांवनलैअदितिसुहाई नवनीरदनीरदतनरंगा॥
तडितविनिंदककुलहीअंगा रतनछरीकरकलितरंगीली सोहतिसरतिसहजछवीली दोहा॥
मातुपिताकेपगनमहं परनसिषायोधाइ परेपांइनृपमुदभरेगोदहिलिएउठाइ ४७ देषिवदनदुति
दसरथहरषे मुदजलवारिजनयनवरषे सादरलिपोकेकईरामै अतिअनंदभरिउरअभिरामै सीं
ससंघिपुनिउनिमुषचूमै लगीमेमसुतनगहिगहिझूमै रामरूपछकिबोलीवानी भूपतिसोंप्रमुदित
हंसिरानी मेरोशीतिरामपरजैसी सुनहुभरतपरभूषनतैसी कहनृपसनिहैराजकुमारी रामहिपरअ
तिमीतितुम्हारी लषनशत्रुहनपउनहंआए सहितसषनकरकंदुकभाए कौशिलाहिरानिहुंतहंआ

बाल
१३

परीछिं इमि मुघां इ पराई दोहा करसिर धरि चिरजीवँ कहिं सकल कहहि सिसिहारि बेढि बरास नभाऊजु नति
पेगोदसरथ चारि ४४ चौपाई रानिन सों प्रभु दिन मुनि बोले कुसल होहिं सुत परम अमोले बूझी गुरहिं रा
निस कुचाई गाघ एक अचरज अधिकाई सपने नए चा सौ सब काहीं परम प्रकास रूप दरसाहीं नजहुं सं
कहरिस मइन जानी सुनि मुनि सब इमि सब हरषांनी कहौ कौशिला जहँ मन हँ षेलहि उरहिं न नेकहुं
फिरहिं अकेलहिं रिसिय जानेउ औरिन लागहि भूप प्रेम न हरि हिने भागारे हंसि सिसु रसन करी सुनि रा
ई कहौं हाथ देहौं निन आई उपरोहित नील ई पहिं जाल असकहिं चलन न छ केछ विगारन दोहा॥
धनि रानिन जुन नृप अवधि तिन के गुर हंम धंम आउहि कौ हैं नर तुहैं नहि गनि निज सम अंम्र
गए भवँन मुनि उन न इमि रस न ग्याज प धारि नित प्रति परमानंद मगन होंहिं ब्याहि सुत चारि ४५
चौपाई परन रस्वामि नराकृत धारी मात अंक बिहरन सब कारी ताहि अवसर धंमा धाई भूषन बसन
कौल कन आई निरषन ताहि राम मुद छवे उठि विहंसत न चलि गो रहि गए लै सादर बोली मृदु बानी कहें
कुं आपनी रुचि मैरानी बैठे भूप के कई धाम कहहिं कौसिला अति हरषाई
लहिसां सँन सो करि सिंगारा लिए उताइ स्तन सब छवि अगारा लै संग सिस न सषिन सब राई सुदित

पैजी सो मै निपट अयानि नि हित ऋनहित कछु जानहुँ नाहीं हंसहुँ मतनमनि मंदिर मांही राजराजसु
ग्रनी सब चाहें सोइ करिं मगर हुं रहीं उछाहें नुउं विवाह की सुधि बिसराई जिन संग हं सहि नृपु दुं
ख बघाई ॥ छंद ॥ न वक्त रुपो रानी कहें हिं कारन कहत नई सिकुवरी भई एक समय नारद अवध आए
हरषि नृपमति सुष छई ॥ पुनि कहें प्रेम सु आगमन कहें तेक हो मुनि अज औ नमें फिरि लगे वरन
न देस सव कुम उं देस वर न्यो चेन नमें नहि दीख कंन्या कन हुँ ध्या के कै कराजन कुमारि ज्यो नृप वर कुंनार
द गए अस कहि जनि प्रभु सुं नर मुरारि ज्यों न व भ्र ९ पठ ई वे जि दूति निदे षिन जो ति निसा गई नृप रु
प्रभु नकुल राज वर परना पुजस न वरन न भई ॥ सोरठा ॥ सुनत न हिरखो लुभाइ नव तुम्हार मन नृप प
र कारन कहें हिं तु भाइ अन मन ललिख रछो जंननि ॥ १० ॥ चौपाई ॥ जब तुम हे तु वंता से जाहीं बूझो
जननि जो गिनि हिपा हीं सो वो ली विहसत न अस वांनी औ रहे तु नहि जांनहु रानी तु वंतन मोर छो
नृप कथा मैं वरनी सब नृप पले जथा जब तें दसरथ वरन न सुनै सो न जे सा धो कामन गुने सो सुनि रा
नी राजा पहु गई सिगरो चरित न सुनावति भई केकै कठो उचित सब भांती दसरथ समर पगु ना।

वाल०
१४

ई जयस तु अरुप सो छवि छाई दोहा लेचा सौ सत तव निमधि विलसन नर पस्वछा वर मरम्म वहुं सचिन
चिव मनु सोह न सुरराइ सोरठा केकै राजकुमारि तक्रिम पहुं रूंष तहं तुरत सजी सब सकुमारि पति
मलमाल नमल लसे ४८ चौपाई रानिन सो अवनिप इमि कहेउ भरी भाग ते पेस तन लहेउ सहित
भाव सनमान सनेहू सजि हि जन चरनौ दक लेहु कैम संन्नवि मल वर हीने वदि हैं दिन दिन आनं
द भीनै पेस तनलाल न पालन जोगू करहु सोई जेहि रहहि अरोगू बोली सब सुनि सब करवानी
सुनियै धर्म मूर्ति गुन वानी हम सब करहं सेआन पियारे इजवडजजे लिरहहिं सुषारे रंगनाथ
की कृपा जो होई वधु न सहित सो हंहि सुषभोई वरवार न पर राम विराजि है चमर छत्र भाइन क
र सजि हैं दोहा सकल जनन मजान व ग नवहि हं मतु मनिर खवराम सुनत लहिं उठि गे हुं वरीरे सो
नरं तकि वाम ४९ चौपाई हंसि बोली नव केकै नंदिनि सुनिए कौशिल्या कुलचंदिनि मो हि मंथरा स
ला वानि ठाढी धौपहि किरि किकार न रि सवाढी असकहि गई जो निकट भवानी गहि कर गेउ पर
सहांनी है आसन धरि हिय कटिलाई बोली वहुत सने हजनाई तुम जो निज मति रूप गुमानिनि

बोलिसुनाई गए गे आतुर अतुर धरि आए तासुपरमछविलषिसुषपाए नृपतिभवनगएमुनिराया देषतउठि
धाएरघुराया अरघपाँवड़े भजनकीन्हों करिदंडवतसिंघासनदीन्हों हाथजोरिफिरिआयसुमाग्यो नवबो
ल्यौमुनिअतिअनुराग्यो हमअरथीकछुजाँचनआए करहुअसनअबनिजसोइपाए छंद पाएबिनान
हिकरबभोजननृपपतिबहुजीजिए नृपकह्योप्रभुसबइजनकोजोइच्छाहिएसोइलीजिए मुनिकह्योके
कैराजकंसाकाजजनप्रनिनकीजिए ताकेसतनहिंकोराजप्रहसबसुषहिंसोप्रविदीजिए सोरठा नृपमन
कियोविचार सुनिमुनिवरकेवचनइमि उचितकाजसबसार राजकौंलेउकैसकल ५३ चौपाई॥
मेरेसुभसुतहैहैजेई कुलमरजादनछंडिहैंतेई पुनिगुरुमंत्रिकुंवरकिभुवाला सुषसोंबोलेवचनरसाला
प्रभुजोअनुसासनतुमकीनो सोईमैमननिरुचेदीन्हों असकहिसादरमुनिहिजेजाए पुनिमुनिविधिवि
धिकरवाए सौतिनज्ञानमोरुहिनाई तातेनुरजहितोहिचेनाई निपटहिकठिनलजांनिजिहियनीचोली
वोनीअतिरिससोनी देतिनिमकुनिजोरिमैजांने उचितनैअपनेवचननराषोंने मारेभेदबुधिनहिपापिनि॥
कारहुंजीभजोकहुअवराषिनि दोहा अवहींअसमनिरामपरुकहरीकुरंनवारि सोकहिमानैसोकहतलषुनि१
नि पुनिउहारिनिहारि ५४ चौपाई दसोदरसरषननृपबड़भागी करनीकहांवारबहुलागी त्यागुकुरिपसबदवननिज

राल
१५

कलकांती मानहिं मुनिज्ञानि जनलाए नित्यकर्म करि सचिव बुलाए सभामध्य अवनिप इमि भाष्यो मैं
मन नमित विचार अभिलाष्यो दोहा कन्या दसरथ नृपति करहु दीन चेह करहु मुनि बोले सब सचिव
गन प्रहसें वचन अनूप ५१ चौपाई भूपति भली बात उर आनी येहीं मैं सब के मन मानी सचिवं
एक बोल्यो अति बानी दसरथ वृद्ध बहुत हैं रानी तब बोले मुनि गरग प्रवीना सुनहु पेक इतिहा
स नवीना अलकानाम पुरी मैं गएऊं सुरसमाज मिलि बैठत भएऊं तहं रावन उर संकित देखो
पूछे उनाके ऐकर भेदा बोले लछि कि रघुवर वेसा होइहैं दसरथ अवधनरेसा तिनकी रानी
विदित विचित्रा कौशिल्या केकई सुमित्रा राम जनमं अवनि रिहैं आई भरत लखन रिपुसूदन
भाई छंद ते मारि हैं दसकंध देवहु देरू तजि संसै महा प्रभु सुने उभै निहिं सभा प्रमुदित गरग
मुनि प्रिय सो कहो विधि रचित इह सै व्याह पैक छुक रि विचार कीजिए तुवं सुता सुत कों देहिं मं
हि नौ सुना हरखित दीजिए दोहा सुनत नृपति मुनि सें कहो आपहि अवधहि जाइ जामें सब काज
सधें सोई करिय उपाइ ५२ चौ० नव मुनि कह्यो वहुत हैं नीको कारज तो विधि लीकिय ठीको मुनिमं
डली लिये मुनि चले जनउ उगननमधि उडपति भले प्रथम अवध पुनि नि विचाइ दसरथ कहुं सब

हि

१५

ऊपनैसी दुषितनतवहिं ग्रहकोंनेवैसीं सुंदरसतनसनेहसुषसांनी निजनिजगेहगईसवरांनी जिहिकैरति
नरामपरहोई मनुजरूपषसुजांनिपसोई ब्रह्मादिकसुरसकलसुजांना सनकादिकमुनिगुनपनिधांने
सेवहिं आदिपारषदपूरे मनुआदिकविज्ञांनीरूरे दोहा कमलाआदिविभूतिवरजोगीजनतपजोगरा
मत्तुरएरांचिंनहिंसदांत्सागिस्सागिसवभोग सहसनिविसमिनहै उमाकस्योकहींवृषकेतु सुषदाय
करहुनाथपरजवरीहरषादेतु ५७ छनएकरहेंछकितसिरवैसा लगेकहंनमुनिमुदितमहेसा ए
कसमैलौमसमुनिआए अवधमजानकिपलकिनधाए देवरआसननपूजिमवांनी औसहिमसत्न
कीनमृदुवांनी नवमुनिकहोस नतसवजाहूं दैनविरोचनवलनिजवाहूं जीनिसवरनैभैपोसुरपु
राजा भईविकलताषिवितधसमाजा दियगुरुमंत्रइंद्रदुजवेषा जाइविरोधंनदानिहिंदेषा जांचु
नआयसुजांनिहुंलीन्हों ब्रह्माभक्तसोसवसोंदीन्हों भयेसुषीसुरनिजपुरपाई भये अनाथअसुरदुष
दाई दोहा श्रोनितसौंजिनसुरलोकनैभोगिभागिनवआइ यंस्फेपतालन्हिसमिरिसवसोचहिंसीसनवाइ
५८ चौपाई जोअवसांमिजुकरैसहाई तौलिवालकअवनिवलसुरराई सुनाविरोचनकीछविछाई माया
मईसंपराआई कस्योसुभरतुमधीरजधरहूं अवव्याइवजनिसोकहिकरहूं द्वैसांमिनिमें लेहुलराई॥

मांनहि खलेश त्रुहं नतहूं हरषानहि नसे सब नम धिरि पुहंन पाल्न नतु सन कारि कविचवुरबांरन जाइउ
ठाए करग हिरांनी कुंवरी अचल गहीं तब तांनी कह्यो देन सुनिश्रम नहुं स्वामिनि सपन कह्यो दे छाडि गवांरि
नि जांन रे कि उठि सोरि सलांनी डांटे सिवालन कहिं मृदुवांनी कुंवर कंदक मारयो रिपुहंन रोवति गिरि
कुंवरि निहिछन हंसन सब न जुन मातुल वांशी आए पितु समीप सब पाई दोहा रोवति आई मंथरा
कुरन छाती सीस देषत नहीं रिपुहंन तहां भागे भै अरबीस ५५ चौपाई परी भूमि अंग न पटी छारा ॥
कहि सिल षुहुं नृप लाल हं मारा मारयो मोहि तुम्हांर कुमारा वज्ररूप देषन कहुं वारा रोवति कहति कुंव
री ठाढी गिरत उठत पीरा अंग गाढी कह्यो समित्रा सो ग निरोई तुव सांसन मारयो सुत सोई रोउ वमा
रवता लसभाता मोहि मारन मैं नहि सिषाता धंन्या कह्यो वज्र न हिलोई कंदुक लगे बहु तन मैं रोई रि
पुहंन कंदुक वज्र समाना लाग्यो पीठि हरत मम मांना धन्यां पहलें तुम्ह रैकीन्हां असकहि रोइ ऊंच
सुर लीन्हां सोरठा जात निकुंवरी रोइ झार सभा जा कहि सकल यह बोले भूप हुं जोइ हंसन सकल निय मं
थरहिं ५६ चौपाई जनि रोवहु सिकुंवरी सुषमोरी हरदी पीठि लगाउ वजोरी मोहि मरवाय हुं पकवि तुका
जरे जा मीजिहु लोनै पर राजा पेहहुं फूल तुम हंम पर निमाना कह्यो केकई भांगु कुवांमा सचु निकरी यह वडी

नलरनमेगई नातेंपहगतिमेरीभई लगीकलननहंहैतकमारी कुमारीदेननदीन्हिसिगारी नवनौंचदीस
वहिपरचारी अवलाअवलवेदकहिदई कौनेवलनेंजनगई दोहा कौउकहंसाकेमनहिंकीवानन
जानहुकोइ गईदिखाइ ननिजवदननवहिंविबुधमुहिजोइ ९३ कोउकहंवासझभूलिगएहैं नाककां
ननहिंकाटिलएहैं रोवनिचोलीफिरि मंथरा नारिअवधमगरअरुधरा मासोमोहिदंदवउपापी नाई
कौनहिदूषनथापी हरिअधर्मग्रहबाहिसिपायो कहहिंसमनपापहिछायो भरतकुलजनिजननी
वधकीनो घालिअसुरनिअमिअमरनहीनो कहहिसवहिहोविषप्रवियोगी आपसहितश्रीसव
रसभोगी आपहिंकहिंअगम्यपरनारी रहहिंसरहिवृंदावनधारी आपहिंदसाभनपरकहंहींमहो
मलप्रउंनिआपहिंकरली दोहा जैसेंहरिएकरमजुननेसेंतिनकेदास हरिकेहिनमहलादहहिपिन
हिकरापोनास ९२ चौपाई अवहरिमोसोवैरवढायो हैहोताकेफलमनभायो वज्रघानपीडितजोमरिहों और
हिजनमविरोधहिकरिहों कुवरऔहरिमनरेमरी कासमीरकुवरीअवतरी सषीकेकईकीसोभई केकराज
कन्यहिसंगदई पूरववैरहिनाहिविसरायो रामराजकोतिलकनसायो परमकुवुद्धिमंथराछाई पाहिकारन
अवधहिआई अरिमांवहियाकोमनरहई नहिअमिअरमुनआनंदगहई तदपिअंनहूंरूपनिधामें ॥२५

जितिह हुं रचिहि हंहुं सो इउ पाई चढे असुर नव सैनहिं साजी आए सुररहुं चढे गज वाजी भए दुहुंन संग्राम अपा
र भजि जहु असुरन मंथर हिय हारा पास लिए नवरे तिनि आई सव सुरन वां हन वांधि सिधाई तकि सुरसंक रहु
रत हि जाई नारद हरि कहं हष वरिसनाई दोहा आए श्रीपति सुनत तहीं निज आयुध धरि लीथ छुटिवंध
न ते लषत तहीं सुरन नवाए माथ ५९ चौपाई हरि नवकत्यो जुद्धनु मकारहूं नारि विचारि न डर उर धरहूं
जैसी तिय सत वरिविधि वधजोगू करनि समर परहित जेहिं जोगू अतिहिं असंक असि तियहि मारो सु
न जइ इन तेहि धाइ स्वचारा सो मारसो वज्ज माथ मैं ता के गिरि विकरत सुधि हु नहिं जाके षोर सोर दिग मं
डल भरे डोली मनहि दिग्गज थरथरे भागे असुर महा अभिमानी आए स राज जहं सारंगपानी नाष हु
रिहिं दुहुं दिसि समर चहिए जन असुरन रन के अरि लषिए सिद्ध संम मे सव कहं हरी अहंहीं जे ज समा
न हिं नम फल लहहीं दोहा गए विसुर वैकुंठ न तु सुर हुं गए निज धाम देत हुं सो जुन मंथरहिं आरप्पु
ल संग्राम ६० चौपाई वोली देषि मंथरा असुरन मो हिं नारि हुनजि भागे तुमरंन जैसहुं के अव षारपरहुं
चौजे वर औषधि कारि मोहिं जिआजे दंत्री कारि कुटो सिर मेरो जहिं नवजु को लगो दरेर कंपिन असुर दे
वन न डर मैं डोली करि तेहिं त्साए घर मे दिषत न हिं रोइ उठी सव नारी ऊवरी देत न हिं न्हि सिगारी ॥ इन के रे

सोभाई नवसवैरराम हिमनराखी पुलक हस समे जो संन भाषी दोहा कहोंसि वांसानंद अवकहि सवरित्र रघुना
थ जो सुनि गुनि लहि मे मपर जग जं नहोहिं सनाथ रामरूप छ किछनक नव वोले हर हरषाइ सुनहुं सुनीसं
न सोक हीं कथा अगस्ति जो गाइ सोरठा जानहुं तुम हुंभ ज्ञानि पै अवबीने काल बहु नाते कहों बखानि पर
म गोप संवाद सो ६५ चौपाई एक समै एकादस जानी सरजू फल विसेखि उर आंनी सरगद्वार नृहैया वे
जा चले अवध सुर सहित समाजा चहैं सविधि वांनी भ्राजें सिवासहित नमि सुर वेष विराजे … सु
ची संग सुरपति रथ चढे द्रसंन सख उमंग सो मढे सव करा जराज गनराजा मोर मोर पर खर सम छाजा
रिषि मुनि पितर सवै दिगपाला कहौं कहांलगि जे सुर जाला कृतिम विहंग विचित्र विमाना जिन पर क
रहि अपसरा गांना गजपति सतन सिर सोह निसांनां पहि विधि भयो अनूप पयांना दोहा कहन जो हिंमग
मुनि निकर सरजू अन्न धप्रभाउ सुनन गुन नव प्रदन परम सवही के चित चाउ ६६ चौपाई गंधर्व किन्नर
चारन गांवें उरी महा जिम मुनि निरि फावें न जि लोक न जद … नेम हि देषी परम भाग सव आपनि ले
षी अ प्रातु राम दरस न लहें मपाउव नृपनि सो कहि कछु वन तजाउव कौने हुं मिसि सिय पद पेकज परसव आनद जल
लोचन नेवरसव कहत मनोरथ श्रमि सुख सांनै सवन महा सरि सलिल न्हांने फिरि चलि भरत खंड अभिरामे

जेहि

जइपलहिमजनहंहरविश्रामै दोहा देषकामममहंरषुवरपरमनलाइ नउमुक्तिभागीसवेवेदनिदिसोवताइ ६२॥
चौपाई रामचरनचिंतनरनचिनजेहिं मुक्तिमुक्तिदुर्लभनहिकछु रामहिजसयहभक्तिपिआरी नसक्रत
संजमनहिसषकारी भागनमिलेजोछितिसतसंगा होइरामपदप्रेमअभंगा तेहिसुषसमसुनिविषकछु
नाहीं सुष्टुतिस्वर्गअपवर्गहुमाहीं भगतिविहीनमुकुतिनहिहोवै चहितेहिवितुरघुनंदनजोवै वहुका
न लरिहुंतेप्रतहोइहै सिकैहुंतेकोउतेलनिचोरै कवहुंकससासरेगदरसावै मगत्रसाकहुंप्यासबुझावै मूल
हिंकमलनमहुंकहुंनीको धलउपकारकौसबहीको दोहा नउचारिविधिकोमुकुतिविनाभगतिनहि
होइ भुजाउठाएकहतलौनिगमसारमैजोई एहिविधिमजनमबोधकरिगेलोमसमुनिराउ मुनिसि
वमुषइंसिउनिउमाकहरीमसनसुषपाउ कवरीवैरीविसुनजिन्हिंहिजानश्रीराम वैरफलहिंभागीक्रि
पोकहिमसानसुनधाम ६४ चौपाई मिथहिमसंसिसंभुनननकहेउ कवरीमरनसमयमुनिगएउ विसु
विरोधहिंमैमतिछाई देषिनारदहिंपूछनभई विवुधनवलतेविसुमतोरै हरिस्वतंत्रईकी कोउमारै न
वमुनिएककौतुकैविचारी तिहिहिएकीअरिवृन्दनिहारी रामचंद्रपरतनत्वषानै जदपिअपारैनाक
हंजानै सुनिसरवज्ञमहामुनिवानी कवरीनीतिइकहेउरआनी कोरमननरुआएहुराई करोवरोउमहीं

रिप्यार ॥ ९९ ॥ सचीसखीपतिनउननखिलोकी नउहिंदेवरनिरखितिनरोंकी रघ्योसाविवीअजसोअस अव
धप्रभाउनाथकहिऐकास हरषिकिएविधिउरहिप्रनामा पुलकितसुमिरेउंउनिकरनामा रामरूपम
हंअतिअनुरागे अउधपुरीउविरनन लागे हिमगिरिविंध्यमधकीधरनी मुनिवेकुंठहिंसमपहिव
रनी नेहिमधिउंनिपुरूपुरीअनूपा कहिनसकेमहिमाअहिभूपा परमउममममसहैसुहांउनि अति
रसवनीरसलत्वभोउनि सदांधेपुरीहरअरुमेरी आनंदआकरनिगमनिदेरी दोहा ज्ञानप्रेमको
पोनयूरूसवकेपरवरधाम जाहितजननलिहिघनहूंभरिसहितजोतुकीराम ॥ ९९ ॥ चौपाई चारिप्रका
रमुक्तिकीदाता पुरीअजोध्याजगविख्याता उत्तरदिसिसरजूबहुपावनि दरसननेसवकलुषनसां व
नि त्रसइरूपाकोजलनीको परसनतेहरनतापत्रयजीको साकीउपमाकहूंनपाउन सोमनसोजिला
जफिरिआउन जोगंगाहरिपदतेआई ताकीसमताकोउनहिपाई मंजनतेनमनुजजेचलहीं पगपग
परहयमखफललहहीं रोजहिसरजूरामनहांहीं तातेसाकेसमकोउनाहीं ॥ अकथअलौकिकसरजु
महांनी समुजितदहिसेवहिविज्ञांनी दोहा किमिकरिवरनैकविकोजसरजूउपिप्रभाउ जिनहिनिरखित
परमचितवादतनिजमतिचाउ ॥ ७० ॥ चौपाई करनसनतनहमिसुरनियराने रहेपुरीहितकिअसजमान

नहँ फेर तीरथ दरसाँने लगे करन पर नाम बिसेषी कहँ सुरेस सो सची सो देखी काहि न बहि पेमि गरे देखा मो सं
न कहहु नाथ पर भेखा छंद पेन बहि सब के हिं देव तीरथ देस सो ई बताइये नव कस्यौ सुर पति भरत बंड सु
कर्म करि फल पाइए मे कि पैो रुपां समन जन सानेइ इ पर पाबन भेषा धनि बिंध्य हिमि गिरि मध्य जें न जि
न जो हिं मो मन सब बघ पेो जग नाथ थां न समुद्र नर जह मो ह मनि बिन अ म कहें पहरे बका सीराम
कहि श्रुति भक्ति दे शिव सुबल है पह निरष गंगा पापनार नि हरि पा हि प्रगट न भई पहग या गराज
ति पिन रगार निल सुगदा धरष्य विधुई दोहा सकल मनोरथ सकल करि लषु पह जीरथ राज बुसहिं
तीरमह त्रिबेनी तीरथ कि पे समाज ६७ चौपाइ पहुन काचित्र कूट अति चारु जेहिं निरष तन मन न [illegible]
जन पसारु गिरि महँ दुर दुर पुंनि देषुहुं अवनी के निनं बदो उलेषहु सज सुरि स मानु नगासो
हैं बंक रहें सदेष मन मोहैं करहिं सेनु हंपा प्रभ समति सधा रमायन पहसुनि सप्रबंधा रहदे देषु हारा
बनी मो हाइ अजहु कस्तज हरहलो भाइ मा सा मथुरा पुरी विलोकहु हुंदावन पुनि सादर जोहहु निज
रसनि सरदि नज लहें होवें सुमिर न मोह सो कबमषो है सब तीरथ सरसा सबताए अवधलषन लोजन ब
जल छाए दोहा ज्ञानि पुनीत पहु अवधलषजहुं परई स बिहार न बहु पाइ पुनि पुनि सचीवा सब कहहु

नहिहरें दोहा अवधनगरकेलोगसबकीडहिंलहिंसुबसार परमपुरुषबहुरूपधरिमानहुंकारनविहार ७२
चौपाई नीलमनिनगृहदीपकधारी चकितनवोढानारिनिहारी कहंहिंवातयहअचरजकारी जीनत
नेजहिंइननमभारी महलनजरितसुगजमुकनापन लसहिंमनहुंनिहचलतारागन केसधूपधूंन
नि धूमहिंहारी मोरमानिघनन्वहिंसुखारी सौधसिखरकलसाअतिलसहीं निजदुनिमुरजांननदुति
हंसहीं धुजपताकपतुसघनरहेफवि जहांअवनिनहिनिरषितकहिरवि सेतपताकव्योमफविफहरें अं
तअकासगंगावहुलहरें मिलेपीतधुजससिमृगभाजे इमिउपमाकहिंकविसुषछाजे दोहा सेसकुंडली
परस्वदपीतवसनअंगधारि अतिसुंदरषंनस्यामतंनमानहुंनिकरमुरारि ७३ चौपाई जरितअनेक
शक्तिमनिगननतें देहिमनोरथनुरतसदननतें सुरबिहारथलमेरुलिंहंसहीं निसिदिनपरिहिंप्रकाशितलस
हीं जहांकुहूंनिसिहूंअधियारी मनिकिरननिग्रहकरहिंउज्यारी गृहंनिअरामहिंजहंसुखकारी चंद्रकोति
मनिरचितकियारी तातोंसिंचनश्रमोनहोई फूलहिंफलहिंसदहिंमुदसोई जिनकेपवनसुगंधसुधीरा जिते
जांहिंनियसांससमीरा तासीतेमनुमिलिकैरहई धोअनितेहिपरवारेवहई मिलेचंद्रिकाहिंफूटिअंबारी परति
पजनुसरतियपनमचारी दोहा ऊंचेमहलनिकेजरांमंजुझरोषनिचाहि वैठीतियचंदमिलिचंदजांनिगनितजांहि ॥

अद्भुतछबिसोइकहौंबषांनी सुनहुसुनीसैनआनंदषांनी जेहिंनिरषतसुरनिमिनजिरहे सोइअभ्यास॥
अबहुंलोगरहे जाहिबिलोकिबिधिहूंसकुचाने निजकरतबहिंनकछुउरआंने रतनरचितकलधौतसु
धामा सुबरनमईरेनुअभिरामा जसहिफटिकमनिफरससंवारी मिलिमसिकरदुतिदुतिपसारी म
निमंदिरबिचित्रनिजेउ जैंनगोंइनबलबिचित्रनतेउ बहुरंगउडेबिहंगबरआवहिं तकितिनछांह
गहनसिलधावहिं सोहा परमसुगंधितजहुंगृहंनिहोदनिभरोसनीर केलिकुसमललैसंगसाबिनबिहे
रहिंसालअधीर ७२ चौपाई मनिपिंजरमैनासुकबोलहिं निगमागमअरथासपषोलहिं जेहिंउर
षमपनेहुंनहिंआवै परघरहोंमधुमअतिभावै बारसोवेदनिबेदुबापढहीं कलधुनिसोनभमंडलम
ढहीं हरेकुंजसोनजाचककुंपावहिं सबैमलोधनधनदलजावहिं निजरनिरुजमंजुनरनारी जिनपै
रतिपतिरतिदुतिबारी नीवनउचधामनिनकेरे सबजेंनसबनहिंजोहिंनिवेरे गावहिंनहिंतिसब
उभांती सुनतलबनअपसरालजाती चमरछत्रजुतगलिनसुजाला कदहिंचढेगजरथसुषपाला
छंद बहुंचंदमनिकेसरनमसिकरपरसितिलोकरवरषहीं कलनलनतेजलअमलछूटहिंतापग्रीषं
मकरषहीं णबसहुवरसनचढहिंजवेअटनिनीचेषनपरे जहंउनिसमंतकधांमगविसमसिसिरमहंसी

विविधिरतनविरचितसोपानै रचहिंजेनिजछविछटंनिविनाने पुरिविविधिबहुसरसोभितधरनी सुछविकुतीस
न नजाइबरनी अतिप्रकासमयओरीसोहाई परिषाअगमअगाधबनाई जनुत्रिभुवनछाहेरहरिकीनी बलम
रेषअंकितकरिदीनी दोहा बिसकरमाजेलिखनकलविचित्रनिपुनिसीसडोलाव कहहिंअमरआईजराकि
मोकंपपहिचाव ७६ पुरिहिंमेषिसबसुरमनमोरे पुछहिंपिनामहहिंकरजोरे निरषहुनामअवधनरनारी॥
सोहहिंसबअनुपमछविधारी इनकेगुनबररूपसमाना साँचेहुकोनिहिंलोकनआना अवधसरिसबैकुंठ
नअहई औरलोककोउकिमिकरिकहई जससबइन्हकेनगनमत्रैलोकाएकहिलेनकरहिमषजोका हमसबक
इंद्रमहानमताई कहिप्रकिपाजुतवेगिबुलाई विरंचिकहुपोविधिमनुपहजाई आवहुसंसैदूरिकराई त
बमनुढिगसबसोचतगए तकिमसेचचिनिपुछनभए दोहा कहियएकसंदेहबडिमसुनिजहृदयं
विचारि केहिहितजपजपमषकरहिअवधनगरनरनारि ७७ चोपाई अवधनगरजननिरषहुनी
के सकललोकपतिपरिगेफीके सकुचहिरूपनकतमनसिजरति भोगलषनलाजतसुरपतिअति
बाधीसबमरजादनाथजुत स्वर्गसरिससषरचेहुनहीसुत स्वर्गअधिकमहिसबविधिसोहै इंद्रअधि
कनरसबकोउजोहैं अवधविलोकनसंसेभारी करियेनाथबुझाइसषारी काहेजतनस्वर्गहितकरिहैं

बाल
२१

पुरनिपजितुसुरअंगननिकरनिमिषेकछलाइ कपिकरासमुषतेरंहितेमोइ अबहृदैरसाइ ७४ चौपाई बनउपब
नवापीसरकूपा जहाँलषेसुरसबेअनूपा मगरेसकतिसहितसबनेऊ पारिजातमंदारकल्पतरू हरिचंदनसंतान
कबनअरु चंपककुंदमअसोकनमाला मंजुलवंजुलपनसरसाला इन्हहिंआदितरु दिब्यसोहाए बिलसहिंष
गअलिकुलनितुभाए पाइंनकेपन नवपल्लव अद्भुत कनकलताकुसमितमधुकनजुत नृत्तनविंसतन
भावनाहि खेदसहितसरतियजंतुभावहिं अतिविचित्रवापीवहुवानी सिरहिललीअलीमुषमची
थंद षटरितहिंफूलहिंफलहिं पवनवागननसबभाषनी अतिसरसराजहिंरोमसारिनिलगीवहुंजातिन
मनी सकुमारराजकुमारषेलहिंचारुमृगनिमिकारहैं जिनजोहिंफीकोलगहिंनंदनसुवनसरनिविहारहैं
अतिअमलअंबअगाधआयतनानासिंधजितेलसे जिनतीरनरम्यनिविंवछत्तमेनाकपसनजुनवसें त
दभूमिनाजीसुगतिआनतविंवमिसिसयराजहैं जहँकरीछाहनिव्याजराजहिंदेवदंतिसमाजहैं दोहा अ
तिसितकुमुदनिकांतिमिसिजकसोहहिवहुचंद स्यामसरोरुहअलिनजुतहालाहलदुतिमंद ७५ विगसेवा
रिजजहँवहुलाले लषिजंनजानहिंविद्रुमजाले हीरषलरुरिछलउरमांहीं तिषानंगिनिनिमहंनकराहीं २
जहँबड़वागिधूमसंचारा देषिपरतनिसिस्यामसिवाए अदितमरालधुनिनकपटनहीं जहाँरमानूपरसुनिपरहीं

२१

बानी बिचरत रीति गन सयानी ॥ हेरत नाके लाग हि लहीं ॥ आगि मित्र हित सोनेहि कोमलहीं ॥ दोहा ॥ नीरद हिम रहे
मोह जहं परम सुजान कों लोभ ॥ चापहि मेहं गुन छेद है कर नगान तरु छोभ ॥ ४० ॥ चौपाई ॥ काम बिथा निसि को क
हि लहई ॥ रुचि भेदभ मनि हि प्रजन हई ॥ जहां दुमूढ़ बिगहील नई ॥ रैनि सो सकमलन हिं कोमटई ॥ जहं अ
त नग्र नवदेवं सहें ॥ जहं निलज्ज एक परमहंस है ॥ कनक दंड जहं छत्रन्हि माही ॥ पर जहं लषिय वेदिहि
नयांहीं ॥ सनि सबरस्तर नारद बर बाची ॥ भए रथी जैन भाग पवषांची ॥ भए एहि बिधि देषत पुर आनि चारु ॥ स
रत्न पालि नउ भरे करतारु ॥ जहां पुरी मनि बिबि चित नलसी ॥ मधि जल जंतु अमरावति बसी ॥ बिहरहिं जहं
ग्रु द्रुनी सम सुरराई ॥ कर्च कुंकुम हरषीत वनाई ॥ छंद ॥ बहु रंग मनि सो जारित राटक घाट जलं बहु भांति कें
जलें करहिं कलरव हंस कलजल चर बिहंगवर बहु जाति कें ॥ इक्षाक कुल की धास मरजू जे सबैं न सिद्धार
हैं ॥ सुष कमल अवलय नयन पनउर ई नपत्र परजेहि चारु हैं ॥ दोहा ॥ दसनक मुद कुल करल हरिहां सफेन कु
चहंस गोरप्रलिन पय अमल पयपोषणि सियरघुवंस ॥ नारि नजु न नजहं सुरस बिधि रतनदान दिय न्हाइ
कुन जलहिं नपति बशिष्ठकहं ९ रहयो आनि सुषपाइ ~~कोनि तु नन कंस रमविधि रतन दान दिय न्हाइ~~ कि पश्र नाम
मुनि जाइ जन कंलि प्रविधि हृदयं लगाइ ॥ करसौ भये कुल कमल तुम निरष रुनि नरभूराइ ॥ चौपाई ॥ श्री महराज

अवधआइनरअतिसुषभरिहैं मुनिसंतोसोचहिंमनुदेखा विदितनअगमअवधकरभेखा तहंनारदवो
लेमृदुवानी संतैतजहुंरामपुरजानी दोहा देवनदरत्नमयमहपुरीजासप्रभाउअपार सुमिरिसुमिरिजे
हिसंतजनलहहिंसकलसुषसार ७८ चौपाई अघगनमगगंनविदितवाधिकहै सनहुंस्वर्गतेंअ
वधअधिकहै ~~सनहुस्वर्गतेअवधअधिकहै~~ जननमरनदिविमहंनहिंजावै पुन्यछीनस्वर्गीअवि
आवै कीटपतंगजमनअघकारी नजितनअवधदिव्यवपधारी वरवैकुंठहुंऊपरजाहिं तसहिं
सदासंतानकमाही तहांकालगतिकालनयेको दिव्यभोगसवकरहिंअनेको अवधलोगएस्वर्ग
निदरहीं हरिमिसहितनमषजपतपकरहीं तुमहिंविचारिलेहुमनमाहीं अवधलषनभ्रमकरियेनाहीं
सहिपरदंडजतिनकरपाहीं भेदकाव्यरसवर्ननमांहीं दोहा चितहिंचोरावनरूपजहंकुटिलकुंतलहिं
मांनि चपलचमरगतिनीचजलविषमनैनहरजानि ७९ चौपाई नर्कसाश्रमहंवादविवाहा दानदेनहीं
नहिंमरजादा संकरवरनचित्रमहंपेषी कंपधजाहिंमहंजहांविसेषी ग्रंथनमुनिसभावविचारी मदवि
कारजुतकरीनिहारी मूलपेकमसवहिंमहंलेषी छपस्नेहदीपमहंदेषी कंजहिंमहंद्विजराजवैरजहं॥
होइजहंविसोगसपनहिमहं अंगभंगजहंएकअनंगा भेदनगजगेउनकरजंगा कंदकजुतजहंविटपव

नछबि आरतिकौरे दोहा द्वारगए सब सरन के लखन हेत परलोग आए उनके ठिनकहत यह अचरज सं
जोग ८३ चौपाई द्वारपालतेहि अवसर धायो द्वारखडे सब देवजनायो स्वामी तो अनुसासन पाऊं॥
तो सब सरनि सभहिलैआऊं राजअपन यह सब उनहीकों आयो ते रछ न नहि नीको असकहि न्
पतेहि तुरत पठायो सो करि विनय प्रवेस करायो रामगोद लै चले उनपे सा मिले विचहीं सकल
सुरेसा निरषि लाज मदसो नृप भरे सादर सबके पायें नपरे सा तुजराम हुं कहुं पग पारयो बिथिल
गाइ उर बदन निहारयो पानि बिधि विहंसि नृप हि लै संगा देषत चले सो सदन उतंगा छंद जे
हि रंग रतन देवालतेहि रंग मिलि कपाट बिराजहीं बहुरंग चौक ठचारु तकित हं द्वार जंन अनु
मा नहीं जहं नील मनि को फरस गृहमधि रचित सित मनि सो हई जनु तरनि भय तेम वनम
हं छबि छपास घसो सोवई दोहा निजदुति गरवित अयनसो मानि मनि आसित हिं जानि रंध
जालमिसि रविकरानिमन हुं लषावत राति मरकत मनि वें गला छजनि किरिनि समूहं नि का
हि ससि सारविरपरै खयह हरित दुवेललचांहि ८४ चौपाई सुरो सुरभियासे निजजांनी कहहिं

मृग जानि

कुसलदशरथकैहैं कुसलरामजुतभारतलषनहैं कहतशिष्यमुनिकथातुम्हारी निसिबासरसबरहतसुखारी या
मैोसनजुतअतिछविछाजत प्रथमनामकीदसरथआवत सुनिविधिविहंसतनसादरबोले मुनिसोंतिनिंस ने
म्मतसबबोले भूपभवननदेषेंनहमआउब नहहिंरामलषिबहुसषपाउब परंब्रह्मजहंलियअवतारा
जेंनरंजनभंजनभवभारा जाकीनाभिकमलमेंभयो जाकीकृपापाइजगठयो तुमहुंजोसबजानत
अहौ कहैअजोंनइमिकाहेकहौं दोहा पुजनीयहमसबनकहं दसरथनंदपसुधाम परमानंदपरे
सपरमयजासुछविराम चौपाई नृपहिजनावहुजाइमुनीसा आवतनतुम्हरेनिलपगिरीसा नवब
शिषतुरतहिंफिरिआए बोलेबचनबिनोदहिंछाए तुवेंसमनरसनहेजणरेसा आवहितुम्हरेनिसदि
नसुरेसा नृपभागवतबभारीभई सुनिनृपमुषदुतिहंनीछई जैलिविरंचिजुतसुरसमुदाई मविसे च
उरीपरमछबिछाई लषनराजयचालतिनबजारु पहुंचेअतिविचित्रनृपबारु हरितमनिनचौक
ठिजहंछाजे षचितविविधिमनितिनमहंराजे कनककपाटबनकदुतिसोहैं जोहिजोहतमुनिकुम्मनमो
हैं छंद लगिरहेद्वारलोभायचबलषिसछविअतिसुषदायनिहैं जहंचित्रपंजरीबैषेलैमानिकछटाति
अरुनसपानिहैं जेकदलींजंनतेहिद्वारसुंदरमभातेइतिननयपरे जंनजांनिसरपनिसुरननारीथकि

सवकेतपफलतनसनिहारे गएमुगरजगकेरषवारे करिहैंजोनरइनवैप्रीती जेहैंनासवकिपामद्वभीती
जबभरिलोकलोकपतिरहिहैं नवतनगिरनकेसभजसकहिहैं सवगुनतत्वरनिकहांलोककहिए इत
नकेसंमभगवांनकिलहिए सुनतसषीअतिभएप्रभुज्ञाता नारदमुनिआएतेहिंकाला भूपगोद्य
हुंरामहिंदेषी रूपसिंधुमुनिजूडिविसेषी दोहा पुनिपुनिनिरषरामतनअतिहरषितमुनिराउ
भा धरिधीरजबोलतभएप्रअकपअलौकिकभाउ ८७ चौपाई भुजंगप्रयात नमामीपरंब्रह्म
आनंदरूपं अजंनिर्गुनंव्यापकंईसभूपं विभुंसंदरंज्ञाननिधिध्याननगमं महाजोगवीजंगुरुं
जोगिरम्यं परंज्योतिरूपंस्वविज्ञानसारं परंपूर्नऐश्वर्यदानीउदारं सकललोकनकारी नमामीश
कासीअजोध्याविहारी छंद भगततनत्रषकारीभवभयहारीअकथ्यनिहारीप्रकृतिलसे जैभु
क्तिनिदानासुक्तिविधानासुनिगनरतनारूपरमे जयपरदगनआगरकरुनासागर सुजसउजाग
रविमलभलो जैनदुषितनिहारीवहुतनधारीकररुषुषारीदनुजदलो दोहा परिछिन्नहूंतुवंश
क्तिहैंअपरीछिन्नतुंसोइ तुमवानीवुधजेपरेषछकतनतेनवपुजोइ जोईव्यापकसवजगतसोईधरेसनु
ना प ठभयसंसनौतनरूपतुवंजपतपरामअनूप ८८ चौपाई जगतरूपजगपालनकरता जगतजन

नभ हूं दिसन पवड दामी मीनाकारी षंभनि अनूप फंसन जाल जिवै विचित्र रूप जिन विच विचित्र रतननि वि
राजै जनु जगमगा लरि नजुन छवि छाजै कनिनकं गूंदी रूगा पै झीनी तिन विच नि रषहिं तिय सुष भीनी चा
रु चौपरा चौक निभ्राजै बहु विधि मनि सोपांनि विराजै दे जु अयन सब अयन सुहाए अति उतं
ग सिषर बनाये मनिमय नजरि वाग वहु भांती कुंज हिं जहं मनि विविहंग नि जाती गुंजहिं
मत्त मिलिंद निपाती कनिम सममल सुगंध लो भांती दोहा नीलमनिन तरु सों मसनि डारै अ
ति कमनीय पन्न न पत्र अने गरंग मनी कुसुम रमनीय २५ चौपाई चिंतामनि विरचित सब
ठौरै दसरथ सभा छई छवि ओरै लषत सधर्म हि नहि कछु माने साहि जनरेस हिंजे हि सभु लं
ने मुनिन सहित मज्यौ कं मला सन पुनि हरगं नपति पूजि तुरे सा महामुदित मन भयो नरेसा
रंभानुं वरा दिसव गायक करि अस्तुति वै ठेनि जलायक करजोरे नृप वचन उचारे जन्म कर्म गृह सु
फल हमारे ध्यान हुं अगम रूप तिन केरे ते इमे लोचन गोचर मेरे दोहा मो सं मभागी अँ निन हिम
यौ केनाथ आजु पुनि पुनि इमि सव सों कहत नवल किंत दसरथ राज २६ चौपाई हंसि बोले तब अज
भजु रागी सांचे हुं नृपति तुम बडभागी तुम समान तिहुं लोकन कोई भए हम हुं धनि तुम बसु नजाई ॥

सदाकुमारा करियेसोउसवसुरकरिप्पारा भूषितवातानमारसवांनी सुनिसवकीमतिअतिरससांनी
मगुदिनसवैदेवुहंसिकहें औसहिंकारवछाकिनपुंनिरहें पुंनिगनेससोअजअसकहेउ नवमभाउस
वकारजसधेउ नमसकारगनईसतुम्हारे जयगजवदनमहेसपिआरे तुमहींप्रथमकरहुंसुतरस
न सुनिमनविहंसिगनेसविचसन दोहा हर्षितभवनचलाइजुगमेउडंउपसारि लगेमडांवन॥
वोसन्वहुंरसनलेनसुरारि उरिअसअधरसिकोरिहरिसिमुलीलाकरिरो६ नातगातलागेतर नफिरि
फिरिगजमुखजोर ८१ चौपाई चुपड्डांवनहिनशिधिनिसुरानें गारिवदननकिअधिकसकांने नवविधि
करससोरसनकीनें चलेपंवसवअतिरसभीनें कल्पोदिकोमसउरमधिमाहीं कालहुंकीजहंकुछभ
गनाहीं नवहुंकोउकीहरिनरगांने कल्पोधडाननउठिहरखांने हंसेजेतुमममषरमुखदेषी रोवहुं
करागजाननपेषी सिसुलीलामहंमतिगतिसांनी पारवतीवोलीहंसिवांनी सहसुतनमिहिलनकत
हसांनन तुम्हहिउरहिंकिमिकहौषउाननं सुनतहुंससेसरराम्रहुंहसे लषिकौतुकहंसिरससरपलसे॥
सोरठा पुंनिसिंनिमियवतरानि पहिसरामरस्सासवे रामसछविउरआनि चहिनिजनिजवाहनगए८२
चौपाई नवनपभीनरसुननपठाए कौशिल्यालेकंठलगाए निहिअवसररानिहुंतहंआई करिकमतेस

धरा

कृपरवजगसंहरता बासुदेवनारायनमाधौ तुमहींबिस्नुबिरंचिउमाधौ दइत्येरिपरपीराहारी धर्महितधरानि
बिहारी नौमिहंसवलसुखदारामसरूपा मत्स्यकमठबाराहअनूप नौमिहंसकलकलिकलुषनसावन नौ
मिबौधकलकीबपुधारी जयतिमहागोद्विजहितकारी सबमयतुमहींसबपरहौ निजसुरूपंसजगत हि
सबकरहौ सीतापतिगोउरकेबासी नौमिब्रह्मपरकासप्रकासी सोरठा सबदसनामननरामना
मधांमसीलासबद निर्गुनसबसमाधाम करतननरतमुनिउकिरलसो १९ चौपाई तकुविनृपति
करहुनिबिज्ञानी हनिएकिछुनिजदासहुजानी ममसमनमाजईसगुनगायउ सोमुनिसबदेवोर
अतिपायउ श्रवनसहुंसेसिसकरिराया सपीमयेसनिसुरसनिराया रक्षनहितमुनिछुयेसुमाथा
बाढौउरआनंदकोंगाथा पुनिदैकंबहदयकरिसुरउज चरनपरसिअतिरबिनगाएउ सबकेहेउ
निपरमसज्ञानो रमिकशिरोमनिपहिपहिचानो परासिरामपदचतुरबलोपहु प्रेमपयोनिधिमगन
भलोयहु करननृपसबकेक्रीफरहारा बिधिकहहुकादसीउदारा दोहा मधमहेंफरहारनभोजनपा
पहिंजांतु बरनिरजलहरिकीरननकरिजागरनहिंहांतु २० चौपाई त्रिप्रभएतवदरसनकीन्हे रोजहि
श्रसनकरहिंतुवदीन्हे जोरिपांनिपनिकहंसोनृपाला रक्षियसबमिलिएममबाला जिहिमहजीवहि

प्रथमप्रथमयोगइ चौपाई उनसाहितनृपरानिनसंगा लषनलगेमुतभरिसुषसंगा काकपक्षसुंदरसिर
सोहैं रत्नरचितकुलहीमनमोहैं तिलकवनाउवरनिनहिजाई कंठकंठश्रयरेषसुहाई कछुआसमतउ
रन्नाइतनजीकों रमारेषसुभगपदनहंनीको पीनीकटिकिंकिनिधुनिनवलीयेजहिंअलिजेनुकुसुदि
नअवली नाभिलषितजनुकुंभादिनअवली डिसुधाकी पीतकछोटी तडितप्रभाकी अंगनिलसहिं
कंगुलिसाफीनी इपदीतिमिसोहहिरंगभीनी पदपदुमनिविचरनिमनभाई चोरतिचितनहिंनषलअ
रुनाई सोरठा कलकपोलकुंडलडुलहिंमकराकृतिछविदेत अलकैंअहिसिसुमनुससीनिकट
अमीरसहेतु २५ गाविहिंकिन्नररागनिवेरी नाचहिंअपसरसगतिघनेरी सुमनेतहिंविश्वावसु
आयो द्वारपालराजहिंजनआयो मुदितनृपतितेहिंतहंहिबुलायो जाइतियनिजुनसोंसिरनायो॥
लतिसोंसनगंधर्वनईसा वैठोदेवहुभांतिअसीसा वोलेउविहंसिआजुमहंराजा तुम्हहिंरिझैहोस
हितसमाजा असकहिमंजुमृदंगवजायो वंसीटेरिसवहिंसुषछायो संततारविरचितअभिरामा लै
वीनापरिवादिनिनामा स्रुतिनग्रामसरग्रामअलाप्यो मंत्रवसीकरनैजंनुजाप्यो सोरठा वीनसुरन
मिलिकंठस्वरजनमनलषितनहोइ लरुअप्रलवस्त्रडुंनसुषगएमोहिसवकोउ २६ चौपाई मोहितअस

वषवरिसुनाई गनमुषतेसुनत्रसोनुस्मारो रसनहितसवकरहिंपसारो वेगिकछूउपकारहिंकरहूं अतिकी
भीतिमीतिकरिहरहूं कौसिल्लासोइवसकरलीन्हो अंगअंगमेत्रनिरसनकीन्हौ पनिवहुविधिकेदांन
देषाये नेवशिषलेसदनसिधाए मातनिनिजनिजगोदहिलीन्हे प्रनसनपप्पांनहिंकीन्हे पुनिसोनि
सिखवेचननिसुषछाई त्रेमेमषजननिनिअरुधाई सोरठा करहुहिसुनीछषवेन सरआगमभागनभ
से यो रहेहिंवनजुनचेन रसिनईसअजादिअव दोहा शिवमुषप्रहसंवादसुनिउमापरमसुदपाइ क
ह्यो कहियभागिलचरितजुगईसनिनअघाइ सोरठा एमकथासभषांनि घनछनसनशिववीनअ
से नेअतिधंसभद्रांनि असकहिलागेकहंनहर ६३ चौपाई प्रंचमवरषसतनकेजांनी गुरुहिंसुधि(?)
नपमुंडनठांनी नेउतेभूपतिजेसवआए सुभदिननृपकुलगुरुगृहल्याए विविधिमनोहरवाजनवा
जे मंगलमषपरसद्नाविराजे सिसुनालियेसुनिअपनेहिंगोदैं मुंडनकरदांवहिभरिमोदे मोरकछ
रनिषवाइनजांनैं रंगनाथमनिमंदिरमाहीं सतनसहितमुनिवरअतिसोहैं जंतुलियदांनवारिफल
६ कौहैं लसेधेनुरियनअवनसुहाए गलविभूषनपटपहिराए रंगनाथकेपांइपराये गोदहिलैदसरथगृ
हआए दोहा रानिनजुनसानंदनपरतनहवसनमगोइ देहमसंघीसवनपनिविराकिएउछाह २७ २६

चौ देवनमधिकोल्यौ हंसिग्रासत्र मैंरोविभरउताहिंकोपासत्र दसरथभूजो हतहं मरहै उनकेबलदनुजेंनद
लदेहै तिनकोकरुणेयरिकिमिसकैं जिनकेप्रेमनेमहंमछके हमजुत्तककिसंगधरवबनचारन कोकार
कोपकीनकेहिकारन विनभूलेकठोरकहिबांनी हंमपरविनअपराधरिसांनी ताकोफलमैआगेदै
हो श्राकोतिहुंपुरअजसकरैलो दोहा लोजुइहैअचरजहिंमेदसरथपरमसुजान नारिवातनकोंन
दैहैभलभयेअसांन ९९ चौपाई असकहिचतुरचारपठवाये तुरतहिंसोदसरथपहंआये कहयो
सनसबहिदोऊकरजोरे इंद्रसंदेसविनयरसबोरे कहियेतोहंमहूंसबआवें विस्तारसबकीकहुंऐ
बतावें सुनिभूपतितबतासोंकहेऊ हतबचनतुरमेसुखलहेऊ प्रथमहिंमोरिप्रिनामसुनाई
उनके कहिसोअसहरैससोंजाई प्रेमतैलालनजोय उनहीकोमेरोसबभोग्य हतनाइसिरषेरगयेोगा
हंसिदिविपतिहिंसुनायउनभयौ सुनिसुरनायकसुखसोछेये रामहंमातहिंगोदहिआये दोहा वि
सहुसबबसिअवधमहंअनुपमभोग निजनतनसुनिगानतेहिंलोग १०० चौपाई लेरामहिंकोशि सबेसराहिं
लाभवानी लसेगेवनिजअतिसुरषानी सदनसुमित्रादसरथजाई लियेरात्रुहंनलषनउठाई नहुं
कौशिलासवीपककआई भपगोदसुनतजिकछविछाई पुंनिकिरिकोशिलाघरआई रामहुंसंगरखेदोउभा

उठिवारिउभाई बैठेतासुगोदमहंजाई अनमिषचषुचषसषजलभरिलाई सोऊतननमनषवरिसुलाई छकि
छकिनावगोननजिदीन्हे रामरूपदरसनसुषभीने परमभाग्यआपनीवषाने दुलराउहिसुतनसवय
सयाने मोहितसिसुनदेषिसुषछये नृपनेहिगोनसराहतभए फिरिफिरिदानविविधिविधिदीन्हे
करिपूजानसादरतिनलीन्हे मातापुनिपुनिसुतनउलावै रंगेरागरंगतैनलिआवै विसमित
भयेभूपओरानी कौशिल्यातोलीहरषानी सो० विस्वावसइतनहीवसो लालनलालनहेत राषवहंम
सनकारसोतुमतिंजुदुवसमेत ५९ चौपाई बोल्योविस्वावसुकरजोरी तुमसवभांतिनिस्वामिनिमोरी
देवराजसोंहरषवजाई फिरिअवधहीवसवहमआई जाउदेखिआउहुंतुमगायक नाहीनहिकोरि
हैंस्वरनायक कोपीसुनतकेकईरानी विस्वावसुसोंवोलीवानी सुनतनुभाइछलीकहंजेहे नृप
पतिसासुससुरकहंदेहे तुहिभयवातकछुकहिनहिसकिहै जोकहिहैतोमरनभिदिगिरिहै असक
हिधनुषवानलैआई वोलीभूपतिसौरिसिहाई वांनवांधिपत्रिकापठइये वासवकहंविरतांतजनइये
दोहा विस्वावसुइतनहीरहै करिपेसुईसुवाल सुनिभूपतिनेसेकिएकौतुकहितनिजवाल ६० चौपाई
गिसोजाइइंद्रहिकेआगे दसरथवाननजांनिभयपागे वेगिउठाइपत्रिकावाची छनमहंषवरिस्वर्गमहंमाची

रघुराया ॥ खेलहिं संग भरत औरि प्रहैन बिहरहिं राम संग महं लछिमन ॥ प्रेरो राम अनुसारहिं
जोरी ॥ करि दीजै नृप यह मति मोरी ॥ जौं तुम कौ भ्रंम मनेकु न होई ॥ मुनि गुरु बचन कीन नृप सोई
॥ दोहा ॥ राम चरित छकि भउं न निज गराव शिष्य उ नीश ॥ बिचरहिं सुत जो एैकि एनि रखहिं मुदि
म न मरीस ॥ ३ ॥ चौपाई ॥ कही सुत सोनक मुनि गाई ॥ सुनहुं शिशु सो उ कथा सुहाई ॥ एक समै न
पतीन्हे रामै ॥ अन्न लोकन है सुख सुख धामै ॥ दसरथ ज्ञानि वीरसिंघ नामा ॥ रति नालिका तासु
प्रिय धामा ॥ [illegible] चढी आपने सदन अंटारी ॥ छकी विलोकि राम छवि भारी ॥ गिरत भूमि मिति हि
लषिन संभारी ॥ धरि धीरज कछु कहं सुकुमारी ॥ हे लाज्जि नत हमो नैग से उ ॥ परी से जा फिरि मैं
दन कहेउ ॥ जिय मन अस सुन गो दषे लै हौं ॥ तबहीं अंबु अन्न अब षैहौं ॥ लषि ललषि दसा वीरसिं
हना की ॥ लगे करावन जतन न विधा की ॥ दोहा ॥ कौशिल्या नें हिं दुखित सुनि निज कुल संबंध विचारि
लै संग सषि देषन गई जो दलि ये असुरारि ॥ ४ ॥ चौपाई ॥ आवन जे बहिते रांनी ॥ वीरसिंह बोली लषी
मृदु बानी ॥ आजु भाग्य मम सगरी भारी ॥ मन्दिर निलै राम पधारी ॥ अस कहि दै सिंघासन डारे ॥ प्रभु मुदि

ई करमन हीं मन सपनकि माया कैमति भ्रम कारहुं उपजाया चलि संभ्रमित नृपति पहं गई तेसखिंचाखि विकि
नऊपति भई पूंछ्यो नृप आचरजित ऐसी आवहुंजा हु भई गति कैसी कर रूपो सुसन मुष होउ करजोरी सको
न कछु कहि है मति मोरी दोहा अब भय देहुं जो महिप मोहिं नीकहि कारन जाउं अति अचरज प्रकालष
ति हों तुम सो कहन डेराउ ११ चौपाई करूपो सुंदरी लहि नृपसासन ऐसन लषहुं कौशिलहिं वांगन
ना ते मैं मति भ्रम तिमहाई कौं पति देह कछु जानि न जाई सुनति नृपति अति विसमित भए देगहिं कौ
शिल्या गृह गए आप कहुं लषिरिष सदंन लछिमन चढे अंटारी चंचलदन न गोकन लगे झरोखं नद्वा
र दोउ गृह देषहिं नेई कुमारा है आचरजित हैं तु विचारहिं जिरन परएक हुं उरहिं न धारहिं नव्व
शिष्ठ कहं दोलि पठायो अति आतुर मुनि महल न आयो रतन न कौं नृप संछन भएऊ गुरसन निक
शु कथा न उरधरेऊ दोहा माया या गंधर्व कीक रूपों विर्ते सिमुनि राउ बोली ईश्वर जन न हीं राष्यो
सो इस न भाउ चौपाई नृपन वान कहि जो लिपठायो सोऊ सुन न लै तुरत हिं आयो विश्वावसु कौं धी
घेचर्ड रिषिहं न लषन मोद सोमटे निरषि तिन हिं नृपति सुसजों नो विश्वावस कछु भेद न जान्यो॥
भए फेरि ते अंतरध्याना बोले बिहंसि वशिष्ट सुजाना देषहुं नृपति गंधर्व माया अब भ्रम कहो करो

बसे नरगर भव परहीं नहि विज्ञान कर्म सब दहहीं नहहिं ज्ञाइ विधि ध्यान हिं धरहू चैत शुक्ल नौमी व्रत
करहू पंच अगिनि आदिक सब साधन करि करि करहुं ईस अराधन पंनिरषने दनवाल सरूपा
धारहुं सुराम नाम होउ प्रानी पैहौ हरि सिसु परस बषानी द्वापर अंत गोकुला ग्रामा बी
एसिं हदै हौं नंद नामा रतनालिका जसोदा हैहौं रामकृष्ण लै गोद बषेलैहौ दोहा पुलकित गुरवचन सुनि
निधरि आए होउ निज गेह भई तीव्र वैराग्य उर भेरा मास सिस नेह ७ चौपाई अति आदर सुत लाइ गत
बदंपति दीन्ही दुर्जन सदन सब संपति होऊ विहाभूप परंभये बदरी वन दिनो दस जोगए जाइ जहां
तप तैसहि कीन्हों प्रगट राम तिन कहुं वर दीन्हो द्वैपर अंत हि नंद जसोदा दंपति भये भरे उर मोद
सुत सुष निरषहि दिन नतहं राम कृष्ण रूप के सुषमा धामं रामकृष्ण महं भेद जो करई सो नर परम पा
प सो भरई इनके गुन गन जो कोउ गावै सो बिन श्रम कलि कलुष नसावै सौनक नवमी व्रत सवि
सेषा कहहुं सुनहुं सुभ सुषद अलेषा दोहा चैत्र मास नवमी सकल लेन राम अवतार होइ पुनर्वसु
पुक्त जो सो विसेषि सब सार ८ चौपाई जिमि तरु मधि सुरतरु उर आनो तिथिन मध्य तिमि नवमी
जानो जे जंतु निरजंल रहि उपवासे भुक्ति मुक्ति पावें अनयासे दिज सज्जन मउ तस वसुर भर हैं ॥८॥

नमनिमानिकवहुवारे कौशिल्या नवभीतरगई रतनापालिकाविलोकतभई उठिसंभारितहंतुरतरहिआ
ई दिव्यसिंहासनमैवैठाई रामहिअपनेअंकहिलिया दुषदाउ नतनमनकौंगयो मुषचूम्यो पुनिकं
ठलगाई सीससूंघिअतुपंमछविछाई अहोईसअसछतनमोहिदेहूं कहिमनहीमनसलितस
नेहूं सोरठा रानिनसुजनकीन्ह सुमनमालजंगरागने मलहारतनमयदीन हाररामकरवि
हंसिके ५ चौपाई देषिमुदितरानीगृहआई जान्योदुषसषषकरथराई दैंसौंसोनकपि स्यो
रिरषाई कलियप्रतनसोइकपाटुजाई सरतरुसंमररघुनायप्रभाउ करकीन्होंनिनर्मति
सुतराज करपोलतनकरसम्मतजाई वैठेदंपतिमुनिसिरनाई कहेउवशिष्टवधानहुंहेतें
जिहिहिनआयदधर्मनिसेन्न तुमस्रावतमनीरजसोंई कालिहंमकिहिविधिकारिहिहि
ई नवमुनिध्यानधसौअभिरामू हरसरूपपराआएरामू इतिआयसमुनिमनअनुमाने वो
लेदंपतिसोदुषमाने सोरठा अतिउनीनसंकल्पतुव्हहैकियेकलेसजाइमुदितनपकरहु
जइंनानारासनवेस चौपाई जगतविदितहैयामकलापा तहंहिसिद्धसाधककरिजापा जहां

करो मरजुनसाइमोदउरमरो चौरनकथाकलौविधिमुनी कारिदायाअपनेमनगुनी सरगद्वाराहिंवपुस्य
नकरतो अरुनसाइअघडोषवसाडो रामजन्मस्थानहिंजाई कारिदरसंनचासोफलपाई पुनिसवनी
स्यदरसकुंपरसकुं पाइप्रेममलोचननजलनवरसकुं असकहिमुनिमेअंतरध्यांना पापिनिकीस्रोप
रिहिपशांना पहुंचेसवुसमीपजहंजाई धरेदेहदिव्यपुरीदिखाई दोहा दिव्यगंधपटआभरणाल
सहितसमुछविछाइ लिपेछत्रकरचमरजोहिमेवाहिसछविसमुदाइ १११ चौपाई सरमुनिजा
कीसिक्षाकरहीं जोईपुरीध्यांनमलधरहीं मुनिप्रसादतेपापिनिदेवी भयोतिनाहिंआनंदविशे
षी चौरनसनमुषहीउनिधाई रहेताहुदेसवेडेराई जिनकेदुखितकादेतनलधारी धरेआयुधं
नअतिअंगभारी लखेहिंअजोध्याहिंभागेसवे चौरनपुरीवोलितिपतवे जिनकाहंनिजजीरयन
हवायो सादरनोमीव्रतकरजायो तेपापीपापनतेछूटे चित्रगुपितकहंपासिरकूटे लिखतपापव
हुवर्षविहाए तुमछनमहंकागदफरवाये दोहा सुनिसमुझायोजमनिनाहिंकहिकहिअवधप्रभा
व नाहीअवसरफिरतजंमदूतलखेअघराव १२ चौपाई जाइसमीपहिंपूछतभए बोलेदरितद

निसिजागरनसविधिजेकरहीं दशमीपारनकरहिंसुजांना तिमिसेंमलहरितोषकनहिंआंना जोहिरि
नजेनरतनरूपनकरें तिनकेपितरछ्वनहिंतेहितरें नीलनलिनदुतिदुभुजसरीरा वरसरचांपधरेकें
रधीरा पीतवसंनमनिमुकुटविराजत मुनिमधिसिवजुतआसनभ्राजत दुहुंदिसिभरतसत्रुहं
नसोहैं लछिमनअग्रभागभुजजोरैं दोहा करिबनधावहिंरूपअसजपहिंरामसुभनाम त्रिनत्रं
मशावहिंपानफलवसहिंसदांपरधांम कीन्हेंपलिवरत्रतहिंकेहरिसतसवतिनपाव करोसो
जुनहुंनिरोंसमैनोमीपरमभाऊ ९ चौपाई दुरगमभारवारमहिजाए पापीपंचपंचअवछाए
करिचोरीजोरेउधननाना विमलातमानामनृपजांना सिरमुडाइलेसंपतिसारी सानीनृपदिस
निनहिंनिकारी बनवसिहिंसाकरहिंमहाई निसिदिनभटकतवैसविताई एकसमैनवमी
तिथिजांनी जातीचलेअवधमुदमांनी पापिहुंचलेतुरावनहेता मिलेउनअवसरंगेसाकेता
नहोंसज्जनकेंअघनअघधारी लागेबांधनदेमपभारी असिजमुनीस्वरतिनहिंनिहारी बोलेपापिनि
हीननिहारी दोहा करेंमुनिजांनहुंतुमनहींश्रेमवत्रमहरेपाप अवधजानरोसोप्रगटिभोइनकोअ
तिताप ११० चौपाई ममहरसंननेदुरिसबगए नुवहकर्मअवप्रगटेनए सविधिअवधकीजात्रा

गए लोक इन नसहित महिमा करत बषांन १४ अस कहि सकल मौन ह्वै गए नहं सो नक उनि बोलत भए रहे
कहन कहिए अब सोई सुनि तुरि नाम न त्रिभिन होई कहपो सतन सुम संमन हिभागी हो सरी लील
हिके अनुरागी राम चरित जे सुनत हिं जे गावहिं गोपर कहं सो पावन नाऊ हिं अस कहि सिसु रूप
हिं उर धारी पुनि गिरजा सुत गरकृपा उचारी अजु जस षंनतु नराम उदारा कहु कुकवि देकर विवि
धि विहारा अथ मध्य पो गंड चौपाई सिर जटा कुसी सपग री राजै ससि मुष उञ्च नासिका भ्राजै
गोल कपोल विसाल लखुं जो हैं पारस पीन षीनक रिहां हैं दोहा विलसाहिं भुषं नव सनव रसु
ठि सुंदर सब अंग धरधनुहि पिन सरन करबि चरहि षाल उमंग १५ वृषभ कंध पय कसषासु
हायो ता के कंध राम सब षायो मरजादि रुति मिमा नतनि मोहै निज निज सषं नि कंध चहदिसो
हे वमर पो न चल अलक विराजै केसरि षोरि चोरि न छाजै रसिन जंत्र मंत्र सुषदाई कहि हों न
रऔ रसव भाई नहीं लगे बूजुंन रघुराई गए नातक लंह महि हि विलाई कहुं नकी बगे सरज मज
न आजु जे दस सौ रघुनंदन चलो चलो कहि चरन चलापो लैहरि रुप संम सषा सो धापो राम सं
ग को टिन सिसु धाए निरषि नारि नर अति सुष पाए दोहा गए नृप तिके निकट ई मि चा सो आनंद

सहदुखछए अरु कांतार देस मरहंजन मो अघ रूंम घोर रहे असन तन में पांच पातकि नतु नरवष पाए जा
त्रिन संग गहें मरहंइत आए रुनि सव कपाह नरिसि लाई जाइ जमहि सो इकिसा सनाई नाथ करतप
हुउ रीठि ठाई पापिन हं सुभलो कपठाई धर्मराज तब बिहंसत बोले नौमी जन महात्म कछु बोले
सकल पाप वहं विधि जेहु करलीं नौमी अवधजा इते उतरलीं सुनहुं हनतुम नीकनकी न्हीं ॥
असमन अवध उपरझारि लीन्हों दोहा चलहुं कारा बुझ अब छमा असकहि जमतत काल चढेव
हि वआए अवध वोले जनरसाल १२ चौपाई मैं हौं मातु सरन अवतोरे बिमल जै तिन वोकर
जै जोरे एम मूर्ति आदि भगवती नौमि नौमि जे पशिस वती सरजू जुत अघ वोघ वंडिता जे ह
रिहर ब्रह्मादि वंदिता नौमि भगत भगवंत पियारी सरन सरन भव तार तिहारी मुनि तुव महि
मा सकु विवधा जाहि दन संद मति सो किमि जांनाहिं मातु मोर अघ करहुं हरि अब उधरन सर
नागत न विरदन तव सुनि जमवि जय सो वेम सो लाई हे परसन्न परम छवि छाई प्रगटी नव वहि भ
जो ध्यापुरी देव रदंन तुरत फिरि हुरी दोहा करि असनानस्व जान जं मत तट वनाइ निज धाम

रचित नाही पुरव सकल सम्हारे तप ठानी आएन तो विस्तुवर दानी दोहा परम कृपाव सम अद्रिगनिव
देषवा हनु वारि लिय अज अति आनंद जुन अमल कमंडल धारि उनि बर लहि बिसु बिस्व कीर
वना करि बहु काल रघु सो ताइ पावन पथ हिं रचि सुभमान सनाल चौपाई जब मनु हृतन रक्षा
कन नरेसा अति विख्यात नृप अवधेसा कस्यो सुनि य कुल गुर मुनि नाथा करिये तीरथ जल
हि सन्याथा त्रिकाल ज्ञ मुनि मानस गयाई करि दुरु कार न प सारि रिसाई लहि बर आने उ इन सो
इ गारी नृप इमि हरि चष उपाजे हमारी नित्य रहहिं हम अवध समीपा मगद कृपा पहु कलीप
रीप मम मधि जे नर रामालिं ध्याव्रहि भक्ति मुक्ति वर वहु विधि पाव्रहि इस कलि भई सो अंतर
ध्याना नृप समाज अति अचरज माना तहिं गुर सासँ नृप पयरु आए सनत बेला व्रत अतिदुल
रपे छंद सँग राम के अति राम के अभिराम विहरहिं संघा नाम व पाविए जय विज यमुसि राश
मु सं हंन सुभ सकं ठ वपाहि जानिए अति विक मी सब लास्व औ हरिद सुगंन गामी गुनी गुन रू
प वे स सं मान अजि जित नाम मे कलं लो भनो दोहा साम गौर मनु अनुहर न अभरन बसन अनू
प मन रुं अव धमलं धरन मे राम लष न बहु रूप १९ चौपाई चौकन गलिन बजार विचरहीं आषि

छंद निरषि मु कौतुक लजन नन्नप गुरजुत भरे अनंद ९६ चौपाई चृमिवृंदन विधुअंकल गाए फिरि सर
जनके पाँइ पराए गुरु अरुझाइ सदा नदेषाए लहल नसमो हरिहि जे पाए पुंनि तहाँ सिसबसो हाँ पहु
तरई कीन्हीं असतुति मुनि मन भाई नमसकार करि बारहि बारा कहहु उर धरिये मारु कुमारा हे
परसे न्नदिवुवषु धरिकै पगरी सरजू सुषउर भरिकै लषि मनाम सजन जुन नृप कीन्हो सो
उ आसिष दै बहु सुषलीन्हो राम अंक लै मुक्तामाला पहिराई जुत मीनि विसाला हीस सु
षि तो लन तुंनि भई सरजू सुछबि छटयनि सो छई सोरठा सकल जगत के ईस नवबालक के हैं र
घुमन जोतन अहैसु नीस बसहिं हंमारी कुसमन ९७ चौपाई राम आदि दै बालक जेते कु
लि हिं माहं रुलषाए ने ते देखि भए पवहुँ विसमय मानी पुंछन भए नाहिं मृदु बानी कहहु जन
नि निज कथा सुनाई सरजू कहे उ सनहु मन लाई हरि कि नामि न लिन नजाए ब्रह्मसम
ग्रविधि विसमय पछाए लषि जलमय समाधि कवलपपक फिरि अधार को लियो विवेक नाल
रंध्रमग नीचे जाई षोजि बरषसत नमूलन पाई बहुरि स सोचा रिके माधिन्ताही तहं सुनि गिगन गि

लगे बतावँन नृप पेसु भेदा सोरठा जागि भोरहि रघुनंद एक बेरि तुलसी धनु नरकसी सानुज छठो प्रेअनंद गए
नुष इस रजु जूथ लिन २१ चौपाई नहँ रुचि सब बन मिलीन निसांना लगे चलाव नन निज निज बांना कोउ कहैं
पहिले हिं हमहिं चलाउब कोउ कहैं हम हीं लहब गिराउब कह रघुराम उसरी करि लीजै रहै न कलह है सो
इत्तबु कीजै करि मगां नर रघुनायक बानी कमलीं कमधनु सर संधानी नुहिहं निम अनिसांन रहिमां
हीं रिझि परसपर सब हरषांही रंगे ब्याल रंग मूले उघांम् बीते उस बरिं तरहहिं जुग जांम् रघांनृप
असनकर नृपगधारे तेहिं अव सर सब सजन नहंकारे लै पालकि निकहार सो धाए जाइ निकट
बोले सिरनाए सोरठा कीजै बलि जेव नार भई बार परिषे महिप सुनि तिन बचन कुमार लगे नि
हार नचित न धरे २२ चौपाई बोले सब नषेल न नहि छाडब कछु क काल महंहं स बैसि धाउब कहँ लिप
हँन राम हिकि पाछें चलिहैं हम हिं सुन हु सिस आछें थंत्रु षफेंकि रैना ल सो हाए पिनु सांसन हनिर
धुबर धाए बोरे सकल सब सब समुदाई कहँहिं परस पर चारि उभाई घोफोंप्र थमें पहुचे धाई पीछ लगी
पलकी आई मनि न छद निरविकर निलजाई धक्के नारि नरपर अनुमाने कत आनि आतुर आनुप
ग्रानै एछे मरु रनक हे उब आई भए मुदित अति भेंट हिं धाई रोसा गए पाकसाला सबै पितु प्रनाम कीए

नेओछावरि हिं जहं जिनके लिए गये मानैजं तु जिनके हंसि हंसि कंदुक बेलन आवहि सीस हथि
हि सर थनु ष बहु छाड़हि जाहिं सब नलेभी ना धाए रजक नज्नुन अलकंन अति भाए लषन गोद लै पै
डहिं तमन न माता बरषहिं जल लोचन जल जाता सबंन सहित नरेंभोजन करहीं अति प्रिय
मृदु बचन निमनहरि लेहीं निति निहिग बेलाहिं अनुरागें निरहहिं कबहुं कअवं नियुआंगे
इसिष्ठ न इव बढ़ हि बसदिनाई बढे अधिक सानुज रघुराई तोरन किपन पवेद विधांन ॥
गुरसों सन बहान बंधन तव सुने पंन सन मान सोमुद मंगल महिमदो २० अथ सेषपो गंड दो
हा पीन पगरि लांछ मनासिर चितहिंचोरापे लेति मरकत मनि गिरि रिति घुरपरमनु छन छन
घ बिदेन २१ चौपाई उक्षुकं धउर आ पनसोहैं रुचिर जने जमुनि मन मोहैं अलकें कुटिल
लसै अति नीकी मनहुं सुभग सजुग हेरति पीकी अंग निरतन विभूषन भ्राजे बिबिध बरन बर
बसं चबिराजे नबिवाल नविद्या अधिकारी तो सोन पगुरस दंनाति धारी जलचाउ जझनस बर्हि
नुराए मयमस संम मुनि भेद बनाए सकल सास्त्र उनीति सुनाई आपबेदजुकत निपट ही ॥
बिघ उम निसि बिलिपर कवारें फिरि विशिष्ट अंज्ञा अनुसारें मंत्र रुस सहित धनु बेद ॥२२॥

केरंग २५ चौपाई सोतन तजि धरि दिव्य सरूपा दिखत हिं चढे विमान अनूपा गीत वाद्यं नगनिकागन
नाके ऽभ्रमरनवसें नलसतअंगराके दूजो मन मनसिजै सुलापो परिपदपदुंमनि नाउस्वनासो बिल्व
गंधर वहों भगवांना कीन्हों नारदको अपमाना ताते मलो महि विजंतनलहेऊ आपकर्पाते छूटि सोग
एऊ मुनिवर श्राप परमहित कीन्हों जाते हरिल भदरसें नदीन्हों अस कहि जोरिपानि जुगलीनो पुं
नि उनिसांघ नवप्रसौमवीनो लापो करन अस्तुति अंतरागी एमरूपमें मति गनिपागी चंद जैजै पर
एमासव व्रह्ष धांमा वेषम मनोहर धारी हरि हर विधि ध्येया रूप अंगेशा परम पुरुष अजु तनारी कलांन
सरूप अकप अनूपा मुषवरु विविधि दुनिसारे अस्तुति अस करि के सिर पग धरि के रहि गो मुहिं
निहारी सोरठा बोले राजिव नैन मम दरसन निष्फल नहीं विल्व बोरा नै वैन चितचिंतितिनवरमा
गुअव २६ चौपाई विल्वनाथ संत कुशहिं तोरा हरिहिं पापिये अस मन मोरा जेहिं संबंध नाम मम
चलै हर विराम याष्योते हिं पलै क्रूरषो भोगि कैं भोगन निनाना अंत अवसिपै हों निरवांना कारिमना
मर्है विल्व असो कैं एविराम उरगोनि जलो कैं तेहिं पलजाहिं जेमाघव्रमासा तिनके अघ छूटहिं अ
नयासा आइ सरजु नरप्रकपानि कैता श्रमने व्रारिसव बसवंनसमे ना विहंसन तजुन अजनग्रहआए न

म सहित संष निषाद हरषि तीं षगाइ अभिराम २३ चौपाई लगे करन भोजन मन भाए दसरथ उर आं
नंद बढाए ईंछै उन पढहें सिपलकिन गाना लछगिरा प्रभु की नहि जाना जाते बौ ना नानि पूजन नहिं जांहि
लागे बपल निसां न निमाहीं सबद बेधि हूं सरहिं चलाहीं अस अभ्यास हि मेम न लाही कहौं कौंप
न कछु हौं पतंमारा पितापदाबुजु परम भकारा दिषु अस्त्र हूं म सबहिं सिषाउब सबद बेधि हूं बौन
बनाउब सुनि पितु बचन सबै सुष छाए संगे अंबे सुबीर न षाए धांइ न जु जमात न दिग जाई बे
लन लगे बिनोद बढाई दोहा एक दिवस रघुनाथ उठि भोरहिं सषंन समेत रहे गमन सोहीं ग
से सुंदर सर जुरेत २४ चौपाई नहां कहेउ के दुइ कर जोरे प्रभु पग कम हि षर हन महि बोरे अंन कम
हि षास बबल तंना लषन नरजको करन सो अंना कुसाकी सकानन संचारी षावत दिस न जासु र
बमारी सुनन कुरुकरि धाए बालक राम कुंज लेकरुम चलि धालक जाइ घेरि बंन धनु छुटे कोसो ग
तु नि धुनि महां मरहि बसों दो सो उरनि बनन छिनि करि दगलाना मिदहि जासु श्रृंग न षुन माला
जाकी डोर महि षपरु आई बालन कहपी सो बांन बलाई राम हिं के सन मुष सोइ आओ तिन गोसी हरि गां
न बलापौ हेरो महिष माप मिरि देवि धि महि भ विरो आउ भिषंग लषि सासकाति सबां नि मुष षपा गरब

परसपरकिंप्रीपप्रांना हिंसकभोगहिंनरकनिनाना संनिवांनीमेअतिअकुलांना लगेउसंगआए
उउरज्ञांना ॐअव्रधहिंपाहिअसवलआई गएराव्रुरोरूपव्रुताई दोहा धरेउधांननेधीरहेनजिं
हिनव्यापार गएकालवहुकाप्रममभैवलमीकअज्ञा २९ चौपाई परमक्रपाकरिवासिमप्रभुपरसो
दियदेरुलरिंजवपरदरसों असकरिंवहुविधिअस्तुतिकीनी ःप्रनिभ्रुतिशुवदवेमरसभीनीं जो
लेरामधांमजोइन्हाहें ममनसादनेनरेंसिधावें उंनिउंनिपदपरिपरमपदैगो रामहुंकहेंनिजमी
तिभिजेगो करिविहारफिरिमहलनिआए राजहिंरानिनसुवसरसाए निसिवत्ताइमगपहिंमनलाए
प्रातकर्मकरिलषंनवलाए शोभसिंहव्रुनसिंहसमाना चित्तसिंहहूंजालमतांना साहगोसहकु
हींसवाना वहरीवाजकुरेलानाना सोरठा परमसिकारीजीव्र औरीजेतेजहंरहें आनेसुदिन
अतीव्र सेव्रकसकलनिदेसनृप३० चौपाई सजेसंघासवसहजसुहाये चढिचढिहयपउनकंठि
तआए चारुचोकुविरिठाढेभए लपहिंलोगअतिआनंदघए अनुजंनसहितसजेरघुनंदन ॥
पितुसोंविदाभएकरवंदन विहेंसतवदनवाहिरेंआए वंदीगनवाविरदसुनाए कमहिंसपनकरुकर
तमनामा वरनकीरवालेलैनामा मगटअपरगरपापनहेतं [illegible] जेजनमेपसजोनिअचेतू ॥

हँ जननि निज हँसि कंठ लगाए ॥ उ निसु निमहि षकथा सिसु बांनी मशिपमगनमुरजुनसडरांनी दोहा चूंमिरा
ममुषवारबहुं अबरजसोउरआंन रांनदेखाइ करी विविधि सरसि खाह षदांनि (तरगहंनषंनसारंग)
पांनी सोपक्कसकलकुमारनिसिजगे होनहीं भोर मानत्रिसा अरु असनकरि चलेसंजेवनऔर ॥
२७ चौपाई परमपवीनराम सबकोंही बांनविभेदबनाइनजांही हंसनहंसाइनमगमृडबांनी
गरए गहंनषंनसारंगपांनी नहांसवनिसम्मतगतिधारे ससावराहमहिषमृगमारे विचरतग
पेहूसरेकोंनन जहांविमौढविलोकेउवालन कहहुं निरआकुनिपहिरेषी जहहुंसषहुं हेक
रोंविसेषी करतविचारनासहिंगजाई परकमलनपरसेउरघुराई भोसहिसुंदरसामलअंग
भिंद नानव नलनीरदरंगा पीतवसंनमनिमुकुटसुहाए परमपारषदतनछविछाये दोहा पही
उनकि पगपंकरुह षोरघुवरनाहिं बुधिमानकहुं निजकथा बनमेंतेकोंआहि २८ चौपाई ॥
हिमिगिरिवासीडिंडिरनामा रहेउकिरातनवंधनजिययामा पेक्कसमेमेबहुं श्रमकीन्हों गिरिउत्रिषि
नमहिंधनुसरदीन्हें भागनितेहिंमगलिकसेसंना मोहिअवलोकेउहोउतेहिंअंता करिसपावर
नोटकदिसा वारवारमेसबसोपिसो ढेसचेनउठिपायंनपरेउं निठुरहृदयंकछकोमलभएउं करत

काए पंनसम षरहिरषगनचाकें जहंतहंकरीचिक्करहिं वांकें जिनहिनिरषिसुरपतिअसमांन
हिं विधिकृतनेरचनाकरकहुंआंनाहिं जहं एभूषंनभूषितकहे राजकुंवरराजहिंजिन्हदेहे तुंज
हि गजमदमत्तमउपगंन करहिंगगनमंगलमडमुदमंन चलीजातिसवसेनसुहाई तऊन
छितिअंतरदरसाई मिलितुषहुम्हुरुकारजहांने मंदिरविहिरजप्रगटवषांने छकितसकलसु
रहेनिहारी परमसुषदरघुनाथसंद्वारी दोहा तुरंगमतंगनफेरहीं हंसिहंसिकरतवषांन स
वैनिसाननमहंहंनैशाकितुपकजरवांन सोरठा षेलनहेतसिकार अतिउतसाहितवंधसव
हांपितिउनरिसंद्वार भएछवीलेतुरितमहं २८ चौपाई सुरंगतुरंगपररामविराजे गतिल
षिरविकैंहंपवगपतिलाजें उगरुडहिंगरवअसंतअहिकोजोउ निसिलगामअहिधारिस
रसोउ चांमरचारुबोरडुहुंडोलहिं नेइजेंतुवाजिराजितावोलहिं रूपापरभरनहुंभलभ्राजें ने
हिअंनरूपहुंअभरंनसाजे लषीपरचढिलछिमनसोहैं सत्रुसरुसतुजाचढिसोहे तवनिषादप्र त
तिगुहदिगगएऊ करधरिनासराभअसकहेऊ प्रतिवनसेनप्रवेसकराई सिषेअषेटकहेहुषेलाई
तुमनिजउंनसिसकरघुनंदन कहिनिषादकीन्हेउपदवंदन दोहा असिमतसंतअभरनसजेंहैंहेसांम

बिहरहिं सुर सहि प्रभुहिं बिसारे तिनहुँ न परत पाउ उर धारे चले किरे आषेट कुमाजा उचित दंड देतां
न काजा दोहा बजे बाजने बिबिधि बिधि हरषित सबै कुमार निज निज तुरंग न जरत करन गवने हेत
सिकार ३१ चौपाई बिहरहिं राम उतंग मतंगा हंसन संष न संग हांस प्रसंगा तिमि भनता दिउ उर
दंतन सोहीं दुहुं दिसि चौर ढार बिहंसाहीं अति उतंग महलनि नृप रानी अवलोकहिं सुष मानि
रसानी छकी अटनि पेषहिं पुर नारी बारबार उहुपा उलि दारी सबुज पोसाक सबन तन सोहैं
हरि मन निन म्रषंन मन मोहैं कुंडल गोल कपोलनि डोले अलकें ललित लेहि मन मोले भाल
तिलक उर माल बिसाले असि जुत रुक्म कटि कसी दुशाले लसहिं बाम कर धनु सर सुहाए प्रकप्रकास
रकर रश्मिन भाए दोहा कंध उतंग निषंग जुग राजहिं अति कमनीय परत पवन सम कनिक रमें
दिपहिं रमनीय ३२ कवित्त लसहिं प्यादे आगे पीछे बर बाजिन पे राजे रघुबंसी सजे सोभं निकेपा
निहैं भाजन निसान बरु गाजत नगारे जुरि जोंगरे अलाप रागे अनि छबखानि हैं पीछे छबि छाए आ
बैहल का मतंग न गकें म ष्वास्तो छै लछजै जुत प्रसुकां निहैं चोर चारु ढारि ढारी तन मन बारि बारि
सोहैं सषा म्यारे प्यारे धरे मुकुटानि हैं ३३ चौपाई इमि पुर बाहिर रघुबर आए नगर नारि नर न समन छं

सिरजितनहिंतिधार वंनगंभीरलषिअतिसुषछाए दोहा कह्योरामयहिविकटवनकरहुँसंचार सव
निसैनिकरग्रनिनैसईमविशेहेनसिकार विविधिवाजनेभरनधुंनिसुनिचंकितसकाइ भगेमृ मृगि
गादिकजीवसवजलहंनहुअतिअकुलाइ ७२ चौपाई चरततृनहिंसुषधारेहिधाए आवतम्
गतिनसरनिचलाए दाविद्संनतिनसरनपधारे कुवरइहेभ्रमनिजउरधारे भीतभगेफांद
नमृगआवै राजकुवरनक्रिनुपकचलावै लागतनछनजनुरीझिजनावत प्रांननिछावरिकै
छितिआवत चिन्नाकपटिमृगनिगहिलेही मनवकसीसपालकंनदेही नाहिंसमैसषामि गे
प्रकोई छप्योएकमृगजुथ्यहिजोई औचकतरलतुरीदियडारी हंसैसवैमृगभगैनिहारी फिरि नहं
पुकदिशिरामहिवैठारे करउलक्रसलनितहिंमृगठारे दोहा मृगीएकजौनिजपतिहिलिपोवोट
कैधाइ नेहिसराहिहरिमनहिंमनदीन्हौमृगहिवचाइ मृगनदिगनमहंरीझिरिजिनतहंस
रसंग्रोम तवनिषादनिजहियगुमोअतिशुनग्राहीराम सोरठा वोल्यौविहसतनैवैनधारआइ
गुरुज्ञानिकोउ विपुलवराहंनिजैन छहकरनीपकमें [illegible] लषी ७८ चौपाई कह्योविहसकृपकालषि
एमैहमनोनहिंनकिहैवहिंग्रमे काटेकहुंजोनाकवराहा भयोनअहेरमारविवाहा मुनिहंसिसवैगु

सँवार धुजधारी आगे किये जो हनवलो सिकार ९५ चौपाई पीछे औ पुधन ले निषादा डंमिदुंदुभि
नादऊकूं विषादा फिरि सवार मुनि ज्ञान मतंगा व डुरि सुसुन रंअंगा तनमातंग सहसदस घोरे जो सबलसव
नसठस अस्वगज्ञजोरे सजर पंच सत सुन हुं मुनीसा प्यादे प्रवल हजार पचीसा चले छेरे वन ईम
मबभाई औरसकल सेनि कनिटिकाई कोऊनुरंगनिमुदितनचावे कोऊमतंगनि चढेहिल
रावे लीलाकरनमं दकियगमन सरसन लषपरसन वनपवन नमसानीरभीरसुरस्ता
थी नहंचलि एकवन हिंसुधा रोषा दोहा जालगाइ हंकाइसमआदि फंदायेफंद चिनासवान
ऊंऊछुग लेंवराहादिकेंनवृंद सोरठा सोपसिनपकराइ वरुरीवाजऊहीनने हरखेचारिऊभा
ड सेवजी ऊरिविषलगए ९६ चौपाई सोइमांडसुरयानुरआए ऊलकेम नुसानुजसिरनाए
दे असीसदियफलनरिषीसा लिये समीतिसमधरीसीसा ऐछीकुसलकहे ऊरिविराजू म
नुआ एसवबछेमहिआजू ऊहिनिषादपतिकहंसमुनाई करिपसिकारसमिनरघुराई आश्र
म हँगनेमारनअहंहीं तिनकहंदोषवेदऊधकहंहीं तुमनोप्रनिपालकरघुनायक मुनितस
तापके तनपफलदायक दिविदसिनमगपागुदलेहू विषमहुंवनकरिसगमहिदेहू रिविहिनाइ

मित्र वृ कियो प्रनामा रीझि राम दिय दुहुं न दु नामा जागि राघु जव लगि जमुल वे जन सर भरि सुषनं
नवनावै करयौ पेरूपारापरि कौनन आसो पेषि प्रबल पंचानन रीर परदनब भुज उर कौसा पीत
नितं वुषीनक टि देसा सुनत भरत बोले हरषाई महीमा रिहौं ताकहं जाई छंद सवलष हि मेरे डंद
जुहु हिं षडग मम सिंघ हिं हनै हंसि कह्यो हरि केहरि हते कछु वीर तानहिं तु धगनै तुम जो हु सेनहिं
संग लै तव सषं न संगत हं को गए मुनि सोर ज गिसो उग जिन्ह पो भरतन किसि सरह पे रहु निरन
पामहिं विप्रष्ट रवजनम श्रुति निदहुं कियो भरत राज मुनि दिय आपना ते कु हकेहि तनलियो न
जिरे हंदु नधरि संष चक्र हिं चारि भुज जुत दिवि लस्यो प्रदवंदि अस्तुति विविधि के कै पारषद हरिरुप
वस्यौं दोहा भरत तुरत फिरि आइ पग परसत कियो प्रनाम कहीं कथा संग संष नि मुनि सा तुज
रवेराम ४१ चौपाई पुनि सब बसै नहिं श्रमित निरारी गए गोमती तीर खरारी जहं अति सुभग सं
षं नव बन सो हैं झिल्लीं हं न कारन मन मोहे चौथे जो मराम न हं कह्यो गुरु अव वहु सिकार हं मलयो
रंम्स रैन पहि डेरा डारहु भोर भए पुनि मृग गन मारहु सुनि गुरु लग्यो सो धावन सेना ताकि सषं न कहं
एजि बनै ना रिषि न बास इन तजानौं जाई जल न तं उलों धूम दरसाई आति असंक मृग साव कजाई सो हं

हर्हि अंगु न्हाई । चले सषदि सोइ सर सब भाई जाइ षेरि वाराह निमारी उतरि रुचिर नट अमहिं निन्हारी पुं
निमतंह नेमी नव रुपी ले बैठे भोजन न करन भवीने राम हिमषि करि मंडल कीने सो हे सव मैनी तिरस भीने
मात मंजु म्रदु अंन लपकाए मेवा अरु पंक हांन लाए वरु भ सार दधि दूध मिठाई सुधा स्वाद समति
सरसस फाई दोहा कालिक ले हां कहरु चिकारि कहि आप समांहिं राम कहुं स्वाद सराहि के दे
न सषं न करजोड़ ४१ चौपाई जेहहि सुष सो सषा पियारे निज निज मन के वचन उचारे सव निवो
रसषवर कीने हंसहि हंसाइ वहि अति मुद कीने उठि संग अंचै सो वीरं न धाए चढ़ि रुप चले वनहि
छ हं क चाए वनदेवन्ता दुरे वनमांही लषे अनमिषे दृगन अषाहीं चमरी गाइ ऐछि अरु रोनी भा
ठिमनहुं धीरजै ठानी निकट उठे उ एक गेंडा देषेउ चहूं ओर तेने हि सव छेके उ करहि हुलहु कहुं कट
नन देहि राम संग हंसि हंसि सुषलेही [illegible] कें रि निज निज आयुध न प्रहारा ष्यालहि वड षड गिहिं सं
षारा दोहा दलन चंदन हिमहि ष गज भजे धाइ वन वाइ मनो सुगंध भेमेट दे हरि रिहिं जनाय आइ ४०
चौपाई छुटिके हरि करि कुंभ विदारे आति अनुं पम गज मुक्त न निहारे कहे दो मृगेंद्र एक फिरि भारी॥
मधि सिर हंन्यो निषाद हुंकारी नाग नसर गरजन सोउ धायो सषा मन पीषड गच लायो पसो पहुं

नयुह संगहरिरिगुनआए जगेमानमनु जुनदोउभाई सोरनिबारकहिकिसासुनाई मुनिसानुजमनु
लजिनकहेउ गुरहंमसवनिनीरवसकहेउ तुमहिसिखउंनश्रमसिरलीन्हो वडउजनपातसृमि
नचितिकीन्हो असकहिअउजलाइउरलीन्हो निजकृपाकहिअरथंहिदीन्हो मुनिहिंनाइसिर
चढिरथदिवांहंन चलेसिकाररहिंकेउतसाहन दोहा रहिराजिरिनसुरभिवनसोहनसबमाजैन
मगमगसामुदलेननहंचलीसभगसवसैन कहुंपौसनसोंरामहंसिभजोजोवहुंमगजान पहुं
चावहुंतिनहिंनिकटरथकहरहुंएकसरबान ४६ चौपाई जोनपसिनकोमृगनहिंहोई नोमरिहोंमे
मरमहिजोई मुनिप्रभावमृगअतिजवभाग्यो रामरथहुंपीछेंतेहिलाग्यो लखनपवननवीचहिं
रहिंजांहीं आगेकहेतुरंगगतिमांहीं जोधंनवनहरिहुंदरसाई धनहिंमांहुपीछेपरिजाई म
हावेगधावतइमिधावे जंनुपगरजतेप्रभुहिंबचावे दिष्योरीझिअंगदरघुनंदन समदिनसतलि
षोकरवंदन मृगनिरषंनहिनकहंसुषमारै समैश्रीवकहिकुलसिकोरै कहुंप्रगटनकहुंदुरतनि
हारी कहुंपोसनमुनिमृगअसुरारी छंद मुनिबालषितजाजुगुलआएकरुनमृगपालोअहै सोइउन
रिषयपरिकहलोरघुवरअमियऔराधेमरं मुनिदईवरुतनअसीसकहिअपराधबिनुजांनेनहीं नवसषं

बाल
३९

हि सुंदरि से फुलवाई लतन की कुल करत बिहाराहिं जब गोधूम बालि महि डारहिं दोहा श्री प्रगंगामिनी धे
नु रवली आश्रम निजा हिं अस मन कहत हिं सैन सब पहुँची समिरितन आहि ४२ चौपाई मे धावी मुनि सुं
निहरि आए सो इछल कि तनै न मिलन ति धाए आए सपदि गोमती कूले संग सिष्य लीन्हें फल मूले ॥
लषतहिं चलि प्रभु पांय न परे रिषि आसिष दे आनंद भरे कहि अस्तुति रघुबरहिं लेवाई पाप हारजी
रघु दरसाई कहि महिमा अस नानक राषो कीरि संध्या हु सब हिं सुख पायो पुनि निज निप्रेम बिबस र
घुबीरा मुनि आश्रम तिं गए संग भीरा जथा जोग तहं सब हि टिकाई बैठे सब न सहित फिरि आ
ई सुत रु सम हहं नि दीपनि वारी लगे करन जैन अस तन धारी दोहा तेहि औसर रिषि कुस समि
धि कंद मूल फल लाइ पुंजि प्रभुहिं पुनि सबनि कहं दीन्हें उ तुरत पठाइ नव रुचि सुंदर संमव पु
स्व सत्व पसा अग परवीन बुर स बड़ार परकार बहु बिरचे मास नवीन ४३ चौपाई बिजन पायस पूपमि
ठाई सघा हिं निन बहु भांति बनाई के दलि पातन बार मगाए बहु दुम हीं पहुं ज्वलित कराए अति बि
चित्र चित्र से मास सब छाए निरखहि रिषि सिष्ठि गनटक लाए जुत समाज प्रभु भोजन कीन्हौं अंचै पका
३ लगंध है बस षब लीन्हौं मुनि निदेस लहि से जहिं जाई नहं सब हे न असंन सुधि पाई तासु कजाल सुनि

नसंगम हरि गए हरषित मुनि कुटिय विनु वन जहिं मृगमारि वहु मधि घौ सप्पासी सेन लषि सरजू गए
तंह श्रृंगिरिषि वर सिष्य पठए आइ तिन्हि हरषित भए जुत अनुज राम समेत नाम कि पति न कहं चलिय
निज आश्रमै गमने सो धनुष उतारि मनु मुनि मिलन मो दउ माहमै सव जाइ दिंग दंडवत किय
सनमान कुशल मुनि मानि सुख छई तंहं लषत सीता भगिनि आई सव निकोहं भेटत भई सुख पोछि अंव
लनि रिषि अनुजंन रजिव हु विधि फलादि पो मुनि सव हिं वास दे गाइ तन पवलन सबद अति निव
तो किपो भृत षीर दधि मधु छीर छु इरस विपुल वहि सरिता चली हर धांम सम वेव ने चो विधि असन
हरित हैं गली वहु कोंमल तरु के बाग भूषन वसंन फल तिन महं लगे अपसरा गृहं मुनि गाइ नांचहिं
निरषि सुर रहि गे ठगे सोरठा जन वहुं भोग गहिं भोग जे सुर सब सपने हुं नहीं सबै सराहहिं जोग
श्रिंगी रिषि कों मोद सों दोहा अति हराषित किय सेन निसि होत भात सव जागि नित्य कर्म करि आ
नि निकट वैठे अति अनुरागि ८७ चौपाई नात विचारि सवात हिं एकु विहंसि कह्यो सुषदि ये अने
क पै सुंदरी रानि जे दीन्हीं नाथ कोउ हं मन ते नाहिं चीन्हीं मुनि नायक कोलग हि तुम्हारी जिन सव विधि ह
किए सुषारी वचन सकल रघुवंसी विहंसे विहंसि सकुचि निहं कुवर उवीसे विहंस्यो मुनि हुं मो विहसत

कयो सुहाई लागे करन सैन सब भाई नव सब जेना नि हरषं अनुरागे रवनकच हुंदिसि रसन लागे ऊटवा
रनहुं विटपन वीने कं धनिरावि नी दवसदी ने दोहा रजनि पी छिले जां मम हं जागि शत्रु हंनधीर धरि
धनुसार हरिसे जह हिग वैहआ सं नवीर जिहिं समय पहिं मातंग पक आपों हार कपाइ जातु गंध लहिं क्षा
कलभ लपं उर हुं भये दोरा २ ४४ चोपाई महामत्त तरु तूर रत भारी धूसर ननता कनि भयकारी गंड
नित्र महिं सुनि अलि माला पीन सुंड रोउ दंत कराला कोलाहलकारि पालन कीनें सो हरि ठहं नधं
नुसर कार लीनो गुह जुन जाइ कहीं तहं वाना देषहुं कहहुं को नउत पाना कहों महाउ नवन गज
ऊपर हई रलदुरदंन संग जुद्ध किच हई नर गुन कहों नुके तुन मारे हंसिरि छहनचलि ताहि मचा
रो सो सप स्सगिरि सम सस मुलानी तजो शत्रु हं नसर संधानी सिर भिदि कढि है छि नि दुन आई
धरो तून छन छवि छवि छाई दोहा रहयो विमम दपानरत निंद कुशिव श्री कंत संष घंट धुनि
सुनिकि पो महां नाद हं सिसंत लहिं मुनि आव भयो दुरद परासि मरहिंन त्यागि धारि दिव्य वपु पारष
दहै वो सो अनुरागि ४५ चोपाई जय रिपुहन जय संकट नासन जन नहिए आनि जां नम कासन॥
इमि अस्तु तिकरि कीतुं निपदपरि गो हरि उर राम अज्ञा धरि तवरि उहं नहसगप वंधवाए विसमि

नतैनकुलमसँजारी करतसुमंगलगाँनपधारी प्रविसेंपरवलिचारिउभाई कहिनजाइआभाअधि
काई ।निजनिजअटनिचढीतियजोहैं तुमनरूंदवरतसहिंविहंसोहैं सरदसुधाधरवदनविलोकी
चषचकोररतिरहतिनरोकी दोहा देतप्रजैनसुषसषेनतंगहैंसजवंधुवतरान गएहारचालि
रामलषिनृपउररहेनैनसमान ५० चौपाई सहितसैनकछुदूरनछविदेखी रानिनसषअनुपमैविसे
षी उनरिसवनजनुतपितुपहुंजाई कियप्रनामपगपरिसवभाई पकरिपानिनृपढिगवैठाए
कहयौनीतिनिनुमदिवसलगाए कलपवनवीतेकलपसमीना तुमसवकेप्राणहुकेप्राना ताज
जव अवेदकअवजेसो सोजसमैफिरिअवधहिऐसो अस कहिकरपरसेसिरराऊ कहिनजाइ
उमगोउरभाऊ मुदजलदृगअरविंदनिछायो उमगिप्रेमप्रवाहेरजंतुआयौ रामकह्यौपितुउ
रकेसंगा हमपायौआनंदअभंगा दोहा विविधिवसनअभरनधनुषसरअतिचमअनूप
नाहिंछुवसरमीनिजुनदियौनिषादहिंभूप ऊँनिअवनियकहअनुजजुनजाहुंऔंसुअवनाम दे
षनहिजघरेलगीवहीप्रीतितवमातु ५१ चौपाई लहिसासंनउठिसपदिसिधाए गहनृपपगरवनजी
दिषाये व जेजेहिभांतिनिमारेगए सुनिनिषादसवचरपेछाए कुअंरजाइजननिनसिरनाए दिएआसिषनिन

जोई बोले हैं हमरी नहिं कोई लौकिक रस सिन म मुनि कहँ ज्ञानी मुनि मुनि सब उँनि कथा उरानी प्रक
हँ विदा हैं न जब लागे कहै पै मुनी स परम अनुरागे सर जु ग्राह एक अति भारी जल पर स तहिं जन
न भय कारी दोहा सुनत तहिं चलि हहरि नीर होन तेहिं आए धरि धनु बान जनँन कोलाहल होत हि उस
त्यो सैल समान ४८ चौपाई माथ मध्य जनु किमारे उबाने सो धरि दिव्य देह चढि जाने प्रभु हि ना
म करि गे पर लोकै मुनि मंडली भई विनसोकै फिरि सानुज आसंन तहिं गजाई हिय प्रेम श्री जिरतव
७ स मुराई मुनि समाज जुत करि पद बंदन मुनि सो विदा भए रघुनंदन छकर नहल न बन जीव
लहए चलेन चावन नुरंग सो हाए मिली आइ सो उसैन सो हाई गए रहे जो प्रथम भटि काई
चढे गयंद राम मन घि सो है बरषि सुमन सुर गंन छवि जोहै दिग मंडल हई इमि बुंनि पूरी धुव्रम
उलनलो धावति धूरी दोहा उन पर तेज बने कवं रनि कुसे सब बन समेत नव नेन पुरानी प्रजा वि
कल विलोकंन लेन ४९ चौपाई अवध नगर बासि नर बंसु मे राम आगमन निरख पयु मे
अति उनकं ठिन कटे सुधाई जाति अवलोकन लगे अवाई न नु पल जित चा घस सब जल बाढे उ
ठि आ संन न ने न प मेठा हे चढी स अट नि अलिन जुन रानी दिये करो बानि कगरा सुख सानी प्रभु दिन व

आनंद विहरहिंगलिनमुबागसर दसरथकेकुलचंद रहुंचोकनिफेरहिंतुरिनतकिजंनरहंहिंसराहि
मंजुकरोखनिमांकितिपरहुनीअनमिषचाहि कहंसिकारेकोकहैचढेतुरिमछबिधारि नारिनिहा
रिछबीकहंहिंनिजजननमनधनवारि कवित्त वरवाजिचढेोउमडोछबिछैलमडारतगीथिन
मांहअरे निजछाहछबीलीलषैछकिकैअलिजांनतिकारसिंगारभरो रुकिमंजुकरोषनिसोंनिर
षीडननैननिमेरसबांनिपरो नवजेदरसानवहीअवलोंनहिंजानिपरैमोहिंकाहकरो दोहा कहुं
कूलमेंनचढिअनुजजुतसरजूतीरहिंजाइ करहिंकेलिजंजसषनसंगबंसिनमीनलगाइ १५
चौपाई एमअवधआनंदअतिछाए प्रतिकमसोकछुकालबिताए नाहिसमयअसुरसमुदा
ग ई भएगाधिसुतनहिदुषदाई नवथलनतजिसबरसनकाजे चलेलेनरामहिढिगराजे चषचकी
रविधवदननिहारी रहिहेअनमिषआजुसुषारी फिरितलषनलेआश्रमऐहो जपतपसकल
सुकितफलपेहों इंमिमगकरतमनोरथआए दसरथद्वारदेषिसुषछाए द्वारपालदिषतहिरिषि
राई गएबेगिनृपसभासुहाई जहंसबकुवंरननकिसुषभरहीं रामबालबचानेनृपकरहीं दोहा बार

अंक लगाए पुनि मुदित आरती उतारी बहु मनि मानिक माल निछारी अंचल सुष निपोछि छवि
घा की दिए दो निरु छिजे सीजा की लागि करा बन अंसन सोलाए जे से सबैन सहित सुष छाए अंचै
सुगंधित नीर निषाई संछी जंन निन कि सा सुनाई सुनि सं तास मिलन स बरानी सुनि मुहि मांनी
सुनि सबसानी दोहा पुनि गंध ईआंन सुनि सोपेस ज्ञल कुमार सबन सुषद विरदावली जगे
होत भिनुसार बहु विधि विहरत सब हि सुष देत बंधु जुत राम बे किसोर आगम अधिक विलसं
हिं सुषमा धाम अथ आदि किसोर गलक रोमावलि तरुन मागति अवलोकनि औन लषन दृग
चल छवि अरुन भौंह कमान समान १५२ चौपाई नगर नारि नर छवि रस पागे सबु निज निज
घरकारज त्यागे निरषहिं जहं तहं करहिं विलासै जाइ न बरनि सनेह अपारै लषहिं कुमार नैन
१ अरु रांनी सो सुष दसा न जाइ बषानी हिन दिन देत अनूप अनंदै विचरहिं चारिउ आनंद कं
देरै रविरथ तुरंग निमंद चलावहिं लषि अति अद्भुत आनंद पावहिं निसि काल कुमति मंद हि जा
हीं पेषन सरिसै दिवस सिरांहीं सुनि सब जपत नृपजा न विसारै फिरहिं ते वीथिन बदन निहारै पसु
पक्षी जलचर हु घनेरे त्रिन न रुलता रुल्म बहु तेरे दोहा रस परसि अंग अनिल संहिं मगट नउर

री होउ कृतारथ गृहहिं सिधारी सोरठा गोसांई मुदित मुनीस भांति बहुत सउ तनपंलनुम कसनक हंहुअव
नीस फिरि गुरु बिदित बशिष्ट सैं सकल धरम के सेतु हौं अति सति वारी प्रथित तीरथ दया निकेत हि
तगुरु भी भूसुर सज्जंन १५६ चौपाई नृप जब मख आरंभहिं करहीं तेरि असुर दै डरिअं बरहीं रुधिर
स्थिक बरसहिं धूरी त्रासहिं रिषि बिन सिषिन कहं भूरी मख ब्रत धरे क्रोध नहिं जोगू तातें करौं न श्राप
प्रयोगू रक्षन हेत राम दोउ भाई देहु लेहुं जग सुजस बडाई नर बिजि ते जसु तलषनि संघारिहैं हमो सबे
आसिष उच्चरिहैं मैं जानत हौं राम प्रभाऊ जानहिं पऊ सबै मुनिराऊ मख निसमहिं को काल सुहासो
उपजहिं तातें जांच न आसो गुरुहिं पूछि मोहि रामहि दीजे मन ने कहुं संदेह न कीजे दोहा कौनि हुं
बिधि होउ बंधु सो नहिं जिनि है है नीच जग बिजय पजस लहहिं गेहनि सवाहु मारीच १५७ चौपाई
सुनि नृप कंपि अति गयो सुषाई कहपी समुझि कहि एरि षिराई कहुं अति मृदु अंग जुगुल किसोरा॥
कहां निसाचर क्रूर कठोरा मोली कहं अनुसासन लोई सहित सहाइच लीय लसोई कहं केरा कस
कहि पतु कहाई कौन भुवन को परम सहाई कल पुलसि मोरा बृन नामा कहं सुनिहै लंका ते हि धामा॥
सो बहु बिधि बिधि सिव अवराधा बर लहिं काहन बिस्व कहं बाधा अति पापी है निसिचर राजा फिरेता

बाल
४३

न

गालमुष सुनत तहीं सहित समत नृप आइ पग परि पूजि प्रकार बहु गेरि षिस महि लेवाइ मिलि वशिष्ठ आ १
दि कृतन तें हं वर आसन रिषि राइ बैठे सानुज राम लषि आनंद उर न समाइ १५४ चौपाई बोले उ सचिव
प्रमुदित महीसा कालि पेषि विस्वामित्र मुनीसा सिंहादि कृन उपद्रव होई कै वर मष न विघ्न है कोई धौ
सव महीं दक्षिना जांमे औसी जज्ञदिपो मनन्तों में कौ रघुकुलनें फल बेघ गटेऊ जामें सदन आगमन
भएऊ बोले उ विहिंसत मुनि नृप पांहीं जेतुम लोकपाल कुलकांहीं राषे कौ सिमान लषभ्राता ॥
अरुइं इहिं अभ पहजगत्राता भुजभरोस भगवानहुं पाई जुगरसा बयमाति हाई पाहिअब सरआ
नंद सो छाये सो वहिं सबहिं सुसेज रचनाए दोहा अरुइं राम न अरधम हं बैठे तुम हिं सुनाइ गाधसुन
की रति सिंकिन्नरा निजर दयित इंद सो लाइ १५५ चौपाई पे भिरि दितु बैठल कनि मांहीं नयनि कर सुद उज
जलैज नांही औसे तुम करें कर न लिराजू नृप भवसंकहिं नहिं कहुं आजू दसरथ लज्जित कहें मु
नि पांहीं को सम रथ प्रतिउज्जा मांहीं काकी अस जीहा मुनि भक्ता जो वर नै न ऊंचे रित अनूपा जिनहि
रचन महं जगत नवीना भये विषन विधि रचुने रीना जयपि भ्रति सम मुनि तु बंबानी भए उसकल
तु विमुनि विज्ञानी अरु सुव बसें तु बंकारज कोंहीं नय पिउरपरउमगमहांहि तुबसासंनसारसिषा

सोंहै नषूतषेलि छलिलीन्हों धनहाइ मेरो हतअव धूतलीन्हेंजानुहे १६० चौपाई लैसानुजरामहिहिय
लायो सोपतरिषिहिनकाहिकछुआयो सोउहहिरिषआतिषीषिराई चलेमुहिमिलिलेदोउभाई लि
भरतशत्रुहंनसषेनउडाई फेरेउमभवदिसपदिअजाई विकलविलोकिनृपहिंमुनिराउ कि
अस्तचित्तकछुरामनमभाऊ उंचिरानिनकीअतिविकलाई रिषिमभाउकहिंनृपहिंमिटाई॥
नगरलोगसुनिरामसिधाए कहहिंपरसपरदृगजलछाए जोजानततमुनितनयवियोगा
तोहठिसाधनतहिनिजजोगा विश्वामित्रजगतविष्याता नामउचितपदीनविधाता दे
ता भरतशत्रुहंनलैसषेनमअशिश्चहिअनुसार नृपरानिनडिगमजेनकहहंसषकरकराहि
विहार वांमदेवआदिकमुनिनजुतवशिष्ठमुनिराइ कहंहिकथांइतिहासवरसवकहंधीर
धराइ १६१ चौपाई उनदोउकवरैलसहिंरिषिसंगा रुसकरिअसिकलकंधनिषंगा धरेवांम
करधनुषसुहाए दहिनकरसरोजसरभाए तरुनतमालस्चूपकदांमा निदरहिंतनसरुजाहिंअभि
रामा एनउनसालसोओंननभ्राजे परुषासंघदोउवंधविराजे निकसहिंजेहिंपुरमारगमांही नहं
नरनारिलागिसंगजांही विविधिवयारिवहीश्रमहारी मैमृदुमहिंनिजनापानिहारी किपेजोहिषे

सुअनुचरनिसमाजा। तिनहीं मरें मारीच सुबाहूं मखविधंसि त्रासहि सब काहूं सोरठा सुनि नृप परम
त्राँन गुनै देत्रराजननजुरे रावन अतिबलवांन मरुं सेन लैबदहुं किमि १५८ चौपाई नृपदुषपल्ला विरि
षिवदनरुषाई पईसोई बोले मुनिराई कीन्हेहु विस्वामित्र हिं नाहीं नृप अति अनुचित नरविकुल मां
हीं तुम रघुकुल महं परम हिं भूपा जप श्री सील सत्त्म सम भूपा निहुं पर जाहि सुजस तुम्हारा रा क
रहुं न अव कछु और विचारा अस्व सत्त्व जानेहु विन जानैं देहु कुमारन मुनिहिं सयाने त्रिकाल
ग्य मुनि जांन जलांना ग्यांन जोग जप सुनय निधाना रिषि रास्सि न रामहिं नहिं संका देहुं मुदित नन्नु
अहै कलंका स्वनसम अस्व सत्व धरनाहीं सो सव दिन नैंन पनुम कांही देत कोनिहुं नव भास्प
हि उदय आए लेन कुमार संनि गुरुगिरा गंभीर उरस्त पहुं कि ए विचार जो रिषि वहु रिसात पवलहिं
जन्तहिं रक्षिन कीन जाहि रघुकुल अमल अति सुजस भयो मन नलीन प्रांन पियारे राम कहं मुनि नृ
हं सुनि देतारहिं जांनि विकल मरहांरे वनि भई लगी फुरोषनि रानि १५९ कवित्त पोषोपपप्पाइप्पाइराषो
नाहि दुलराइ अवहुं लोयो रीवात हेन अनषातुहें हूंप्रमषऊषकहुं है देषो नाहिं नैन निसो नी कोंन नवनीत तुं
नेको मल सोंगानुहें घूरे धार वार वार कौपि ताउ कारि रोदै रोषैको ऊमेरो नारसो कन समानु हे भूपति

किये अतिथि हैं परम सुखारी पुनि मुनीस सम सुलषें नलमेनें करि संध्यां सुसें गज लरेनें कियविश्रांमत
हंसु निनसमीती किय अंनुरंजनकथनिसुनीती सोनभातकरिरुक्ननिसोहाई चढेनावमुनिविदाक
राई दोहा भयेपारनर उतरिसरिकरि
करिसनांमकरिमकहानिसोहाई चढेनावमुनिविदाकरा
ई दोहा गमनेदक्षिनतीरमगसहित अंनुजरघुनाथ
गांउ नगरपरकदहिं जहं मुनिसें मदहूंनन निहारि ढारि अंबु अंबकनजुगकहें हिंसबेनरना
कवित्त रि १६८ कौंकपषद्वारेसीसषगरीसुरंगीधारे कोटिकांमद्वारेविधिरूपनिवतायेहैं अंगनि
निकाई कछुवरनी नजाइभाई रहनलोभाई मननजिनहीं समाये हैं कोमलपरमपांइपांउरीगु
लावहूं ने अैसोहै निठुरमुनिप्यारे दीं चलाये हैं कैसे विकलाई गाई जाइ जी रुए कपाई ज्ञाके अैसें हूतन अ
वधनछलिलाये हैं दोहा लषेकछुक चलिवनवलितवारनवाघवराह विविधिविहंगबोलहिं
विविधिवृक्षनभरे उछाह ६५ चौपाई विनमुनिकुटिनसंघनवनलखि सषुकरु मुनिपरुकारन
कलिर विस्वामित्रमुदितनवकोहेउ जनाससरहिं द्विजवहूं नेउ ब्रह्मन्यावासब्रकरुलागी त्रानिसे

न घात सो लाई होहिं सषी सुरसंभव जाई पुनि निरषन रघुकुल मनि धीरा कहन जोग नृप नीति गं
भीरा दोहा सुने सों प्रेम सकोच भय सहित अनुज चलि तलाइ सुनि सिंनिजुं निजुं निपति हिय रघहिं सु
षसरसाइ १६२ चौपाई गए कोस षट जब रिषि राई दक्षिन दिसि सरजू तट जाई बोले बचन सपरसि
पद शंभु न बला अति बला संज्ञक मोंवन मंत्र सम रूप ठहुं दोउ भाई विद्या इहि तेउ अति सुषद
ई सुतापिता महरं की दोउ जांनहुं ज्ञान गुनिन की माता मानहुं छुधा त्रिषा श्रम अरि उ भय हरनी
त्रिउ त्रुं नष्या तिस जस बल करनी परम पात्र तुम कहं जिय जानी श्रपहुं करहुं ग्रहन सुदमां
नी सुनि प्रसंन्न भय सब पद नाए विश्वामित्र सु मंत्र सुनाए मंत्र पाइ दोउ बीर बिराजे जंनुं रवि
षिनि कट भानु जुग भ्राजे दोहा करि त्रिरात्रि गुर संग मुदित उठि प्रभात दोउ बीर किय प्रनाम
रिषि कहं करहुं नित्य कर्म सब धीर ॥ है हव चिजपि बर मंत्र दोउ किय गुर संग पयांन सरसरि सरजू
मिलन तट नसो तहां तप थांन १६३ चोपाई कहि प्रभु गुरसह आश्रम का को सोइ बोलो पुनी सछवि
पाको प्रथम कामन प्रथ्यल रघुनंदन जानो नव नहिं त्रिपुर निकंदन शिव्य भषि षेता सुतप कारी
आजु इतहिं बसा सिरहिं उनरहीं भेस कमि कह नहिं सुषसुषछाए किरिषक कटक दोउ कुँवरनि हारी

धूरि अंबर अति सोरै सुनत तताडुका क्रोधित धारै रु सौ राम देष हुं पाहिं भाई या कें धर सों भंधर दपै
पहि धुंनि सुनि भीतु न उर कंपै मायहुं बल जा कें हैं भारी तद पिहुं तो नाहिं नारि निहारी काटे नां क कै
न जो मानैं तो हैं भली जाइ लै प्रांनैं पे जो करत नहिं हांय उताई गरजत एम हिसन मुष आई अति
मद अंग नाकि मुनि राऊ गए भलि प्रभु अपर म सें भाऊ दोहा सो रक्षीन्हो हुंकार बलि गई जासि ग
नी हरि आनि सरा बउं निसि लन जुत ताग भी वरस न धरि तो मर छंद न वक्र दहै र छ नोय स
र रोइ ली न्हें हां प रज कीन पां रुन छाडि उं निपानि उरेउ कारि छंद अरुलषं नक्रासो नां ककों
नहिं आस अंन रहित भई फिरि लगी वरसंन से लनं मकारि गरजिन भमाया भई दोउ वंधु भूधं
र कारि विहंसत करन कछु कौतुक लगे मुनि कहं षेल तजौ राम अब जांनि जानि संध्या सुरंडगे ॥
भुजंगम सपात न रीश क्र वें धी बलीवांन धाए भली भांति ताकें सवें पंथ छाए चली कोपि सोहैं
किए रूप घोरैं हन्यो राम बांनै गिरी शरि सो रे छंद सुर जैजै कारि कैं सुष उर भरि कें बरसि सुमन सुरानि
क टछर बोलौ सुर नायक सुनि मुंनि नायक भूरि भाग जन तन भए अजपं परराम अति अभि ग
राम आनंद सदन रहे अकंप जोरे तुडं पाइंन राउ न वरु लषपा वन सिष भाव संग फिरने सोई ॥ सो

गल
४६

अमरु जगीजक्रागी इंद्रहि मलिन देषि रिषि आए मंज्जित गंगाजल न्हवाये है पवित्र अति हर
षसुरेसा कह्यो रघुहि गिरावं नय हदेसा धनै हुं ध्यान्त जे सरिज कहेपा नवते देसते सोई रह्यो कौने
ऊं कालना दुक्का नामा गई जल्लिनी वल अघ धोमा सो उजारि देसहि वन वस ई श्रीकौत्रास एह
नगहि चलई दोहा हे मारीच मरा प्रबल साहीको सुत राम म राम सांवी मघ दलन दुष्ट सुर नसं
ग्राम १६६ चौपाई कह्यो राम एह जल्लिन नारी केहि कारन धारयो वल भारी मुनि कहं हेर
रव नाम रक्केना जल्लाकि सीत वजु वाति समेता वोले ताकी तिय सों घाता होइ हिजो रसुत विष्या
ना जनमी तरल सदृर द वल पाई वदी रूप जोवन सर साई जंननिजं भसुत संहलिं साही रसनमारी
चभग्रो संमनाहि सुंदर तज्यौ तन न कुं भज श्रापा न वसत जुन धारई पर पापा आवत न कि सुनि पुनि कू
रिकोत कह्यो राससी राक्षस लोहुं कियहुं कार भजी अति त्रासा वसि विसोषि एहदेस विनासा दे
ल इजन भसि जी जल्लिनी यहि न विचारऊं नारि जारहुं सुषी तुरमुनि प्रजं नयाहीं सकुल संघारि सो
रठा पति व्रत नाम्रय नारि भई जबहिं देवं लुदुषद नवते हिं हरषित मारि लह्यो मकंदहु जगत जस १६७
चौपाई कह्यो राम अगंग अनुसारै रनो साहि अवनहिं कहुवारै सरु जाहिं धंन धरि कियट कौरै रह्यो

जा
४६

नाम इहाँ हि मुनि निमिलि रहहु मम उर राम सो सुषमा धांम ८० चौपाई ताही थल मम षूंम निहारी करहिं वि
षन हेउ र कस भारी अस कहि प्रविसें निज थल जाई करत मष कासित षलिन सो लाई अति मसांन जोपर
मम भाउ मगर तन कत मसान क भाउ वेचल इद्रिन तुरंगन केरी अति ढद तें न जंतु उरज षनेरी अस न
सने जिन के अंग पूरे अरु मनु सेष रजु लिंन हरे मस्तक जटा ह मंडल कीने वे धन सिथल संकुचित हीने
अस तपते अंग छांम अमाने तदपि तेज नतें जडित समाने जेव हुँ दिसि वष पोध वदा वै ते रिषि जंहं तु ति
सिघि निपटा वै दोहा जलें पाले मृग सिसु च पलन मन सम नहि गआइ गुंजहि दसं नन ब्रकुस कुहं हरि
रिषि दंड उनि डेर षाइ चौपाई तजि तज संग आंन संग भाई विघन सो अव मग रे दरसाई जहाँ निरंत
र हो मैं देषी अगिनि रूप हरि जुष विसेषी रिषिन संदेह मयास विलासी पहुंचाउं दिवि करि मन माँही ॥
तिल जंव्रा दिक आहुति वहु नाई उठो जो सव न धूंम नभ धाई ता मिसि सिस्वन हेनसो पाना मनु आधा रसेत
हि थांना नर देव नहिं रिषि सिषि गंन आए मिलि मुंनि मम भलिहिं षजि सष छाए कहि सव कपा मुदित मनि क
हेउ ऐ दोउ वंधु नाउ कहिं हं नेउ घकि त मुनि नम धि मम सुं निक हेउ सुनि प्रनाय मो मन अस च हेउ ॥
दोहा कीजै मष आरंभ अव रीजे आसिष मो हिं जानें रस हुं अभय हैं वो ले कौसिक नो हिं कसन कहु रघु

दोहा सकहिं सजेस केसा सुभ सुजस अरवन अरणमुनीस करहिं सुरपति गवने मुदित नाइ पदुं सपद सीस १९८
चौपाई बिस्वामित्र लखि प्रभु हरखे मुदज लैन सजन निदरखे सीस सकंषि पुलकि तन पुनि कहों नातरेनइ-
नहीं अवरहों मुनि सानुज करि गुरपद बंदन बसे जाइ कहिं बन रघुनंदन उठि प्रभात करि क्रिया सोहाई
अति प्रसन्न मन जे मुनिराई आश्रम सब बरमंत्र नदीन्हें परम प्रीति प्रभु विधि जुत लीन्हें तनजनध-
रि सब अस्त्र सोलाए जोरि पानि प्रभु सनमुख आए कहु सो राम मति न सो सुखपाई बसो मनहिं मम स-
रस सुहाई पुनि सबिनय बोले रघुराई गुरु संधार कहें हसि गाई दोहा मुनि सुख संनिमु नि पुंनि दि-
पे सव संधार बनाइ हि यहि प्रसंस जन संग लै चले सबहिं मन लाइ १९९ चौपाई फिरि फिरि निरख-
ते दोउ वीरा धीरा उमगत जल लछि गत पुलक शरीरा दरसा नाएक सुधर भारी मनोमंजु बनसं मसुख-
कारी तासु समीप सुवन सर सोभा अलि खग निकर मधुर जहँ लोभा मृग समूह सोहहिं रतलीना
केहरि कुंजर कोजहँ सीला फनी फनन पर नाचहिं मोरा बघ्घर न चाटहिं गाब किसोरा नहँ प्रभु कहें प्र-
हि छिसि मग माहीं आश्रम पल रंमल खहँ कहुँ नाहीं बउम भाव प्रभु कहि पउ गाई बोले उन व मुनी सम सु-
काई प्रथम हिं बाइ नकी जस्थाना नारायण महें रहें जपध्यांना दोहा लहीं सिद्धता तें अहै सिद्धाश्रम याहि

दोहा सुनि सकुच तन सिय मन संगहिं किय संध्यां होउ भोर फिरि गुर मनि वानि दे
सतें सो पै सेज हिं जाइ उठि प्रभात प्रभु अंनुज जुत करी रुचि अभिराम आइ सुदिन गुर निकट पंनिकि प्रपद
प्रसिम नाम १७४ चौपाई कहें प्रभु मोहि निज अनुचर जांनी सो प्रिय कछु से ज्ञान वखांनी कहें मुनि सुम
रमु कछु श्रुति सेतू उविजैक कहें जगत हित हेतू सुन हंता न सब व ऐलला मा हैं नगर एक मिथिला
नामा तहें निमि वंसी जनक नरेसा जा सविभ उजस विदित सुरेसा सील सत्य न य ज्ञांन निधाना प्र
भु भक्ति रत ब्रहु विधि दांना एक समै मख हित महिं कांही स्व वरन हल ते सो धत मांही प्रगटी एक कंन्या
छविमाला न कि छ कि छू के उ मुनि न भवाला नव को उत्रिका लग्प में निराई कर प्रो म्रप नु ते भाग निजा
ई दोहा सा साक्षात परमेश्वरी प्रहि उर आन उंराउ आई नु वं ग्रह वास सहित पालहुं कंन्य कहिं भाउ सु
नि न्रप प्रभु दिन पुष्प सित नत्र मी माधव मांस कुज मधि दिन ले आइ ग्रह दीन्ही रानि हुं आस सोरठा
पुनि छकि वेद विधांन दंपति किय सुभ चार सनौ दांन सनमांन सो सुख उमस वृ छिति छयो दोहा वि
बुध वृंद वरसे सुमन किंनर गंधर्व न गांन जनक नगर नर नारि सब आनंद सिंधु समांन १७५ चौपाई
कहें न जाय जैसैं हे हूरी कहुं प्राकि सीना मुद मूरी सतानंद उम्मिनां सब नायो मुनि पितु जंन निसु जनि सुष

पाल ४९

सिंधु अस आजु हिं जे बुनै रोति रसहुं साजन धनु बधरि सा बुधा नस बमांनि करि सनेम आरं भकि य सहि तरिवि
रसुख पाइ लगे जपो बन फिरन जल हिन ज निरु होउ भाइ ॥१७२॥ चौपाई छत्र येदि बस्त द्विज नकिय रोमू॥
धासो धूम न लसो मठि बोम ज्ञैसा हिं भयो सो अति घोरा मारु मारु धरु धरु चहुं ओरा जुरि राकस कारेन
भ छाए उमडि मन नयं जल धरजें ज आए एस कहे उदे बहुं अब भाई असुरं रनि अंनी अकास लिं आई
से न हिं जान हिं मो रम भाऊ हनों नस हसा सद हि सुभाऊ असस कालि तुरत धन बरंकोरा सुंनि मारीच
मरां धुनि दोरा नकि उरस रछाडे उर छुराई गिरेउ विकल जलनिधि मह जाई प्रभु कहिं लखे हुं अस
कहें भाई सन जो जन लें गये ओ उ आइ दोहा नव मा के से निक रुभट र बरखे बां नन आइ का टि सर नहं
ति लखे रा रन न से लखन रघुराइ ॥१७३॥ चौपाई नव मख कुंड हि ओर सु बाहु धा सो तप नियसनि जिमि

ष

राहु मम जल षिलहि जानत तेहि धां हों आगिनि अस्त्र मारे उ उर मांही भूमि भूमि पंन लोब हरांनो पुल
कु हि मिष विंइंमि अर रानो अनुचर लें जिय मन लेपराई सुर समन निवर से निरराई छविछ कि छ कि फि
रि कि जि जल नाई गए सदन षंनि ड निसि रजाई कहि मख सविधि सहि बी विराई बोले मसुदि नम सुर
हं आई रमा कि हे हुं मम बचन न मानांना भो सिद्धाश्रम अब भल थांना भए कृतारथ मुनि सुखदाई॥

ठनाई करत धेनु मख जग सुखदाई। रहत न नृप न मद सुभ गन आई। लियो षेरि पुर औचक आई। सीलधुज
ज कढि लई लराई। भयो दुहुंन दारुन संग्रामा। जूझेउ सांका संपति ग्रामा। कुसध्वज हि नारे सत ते हिं दीन्हों
भूप खव स दारसुष सोउ भीनो। आयो है द्विज मुनि न बोलाइं न। रल अस सिधु ने तव मख मुनि भाइं न। भ न
गसि चलहु अब संग हमारे। है धनु लषि देहिं जो गनु म्हारे। मुनि सादर मख अर है तु पाई। लषन करयो।
तब भल मुनिराई। दोहा। सुनि राम हुं के ज न मन ते सिष कौ जनम अनूप। चकित उमा बूझ्यो सिष आ
ई किमि के हि रूप ७८ चौपाई। कह्यो हरषि हर हंनि मि पुवांनी। किहे हुं प्रलमलि सम सुषि सयांनी
सुनहु रहस्य सो कं भ्रम लांनी। करौ मगर तनु वें मीति भवांनी। प्रभु अस है दसरथ घर जासो। सिष। अस
हिय तब विदेहं गृह आयो। सो परन नृप जब विज्ञांना। परा भगति किय पर अस्थाना। सोइ अधिकारी
गुनि सब पाई। सिष परा कि न मप मिषि पिलहि आई। एक समै धेनु तउ जें नगर। दारि ताहत ललीपत भई
हजिमी ति सो सदन लिं आई। बेलन न लगी गेंद घर विछाई। तब दरसन लिं तजन कहुं गए। कह्यो अनंत ल
षि विसमय भए। दोहा। को उठाइ धनु अनन धरि दियो कहहुं धनुपाल। तिन कहं हमत नु जक न्यो गई भ्रजन ले
त अनात ७९ चौपाई। तब अति विसमित फिरेउ विदेहू। सुता विलोकन सनेहू। चलिउ नाल आसा

गाया जब ते सीय जनकपुर आई रिधि सिधि गृह संपति रहीं लो भाई सखी सिआ सरस्व निक मलाज उ विछवि
लखे आइ ग्रहराउ अति लालित सिप भई सयानी तब नृप ब्याह जोग जिय जानी गुनो जो होइ अजो नि
ज नायक के ना सुख नाही के लायक अभिमत सिद्धि हित अति अनुरागे आए उमापति अचरन लागे
लगे सीय से उमा हि पुजो वुन भे प्रसंन्न होउ दहुं के भाइ न दोहा कहे सो ग्रग रि गौरी सनुहं सुनु बड भागो भूप
जासो मम धनु उठहिं ते हिं सुने हुं अजो निज रूप नाहीं कहुं एस सब अरु अलंकार दे तातु कि हेहुं काज सो
कहि छ पेनु रत जग न पितु मातु ७६ चौपाई मस्ता सु दित न वक्र हेउ विदेहूं रज हुं धनु ष सुता जु तने हुं
गि रि जहिं धनु हि हर जिसिप आइ उर जन जन नि सषि न सु वघा दे सुनि नृप मन सिर धनु जो उठा
वै ते हिं जय माल सीय पहि राइ सुनि सुनि ये गुनि सो भाषा नी आवहिं महिप महासुर मानी ते
सगल षहिं धनुष वडु रूपा डरि डरि तव फिरि आवहिं भूपा कोई ज्वलित अनल सम पेषहिं कोउ
सिंह सुषाइ देषहिं कोउ फुंकार न मत अहि लेषी कहहिं परसपर अचरज देषी सुने अलो लिक सीय
लो नाई एवन आदि हुंगर विन आई दोहा अति उत कंठित तकि भजनि धरहिं रुद्र धनु धाइ टरै न
तिल भरि तब फिरे सोकस सोच समाइ ७७ चौपाई सुनि सब धनु मान पहि सिधाई कहे सो विदेह का रनसु

श्रुतिसंता हंमैसपकासमकासकऊ अहई हमरेवपवैकुंठनिरहई हंमहिंरहंहिंगोलोकउमाहीं हंमजेपरे
तेतुकछुनांही हंमहिंतेउतपनपारनहोई तेनहंमहिंमहंलयसबकोई तिपसुंदरीतंत्रसबभाषा
कहेउतापुनिमैंजनुअभिलाषा परमानंदमगननरपभएउ बचननआउपुलकिपगपरेऊ॥
सोपाविलोकेउअवधउरराऊ हेनसवजाकरनेकऊहंभाऊ दोहा मायासंततविमोहनीअगदीआसुअ
नूप लखेउसबपंकासुवहिंमहंमलिचारिनसवभूप छंद नाहिंजासुयासक्तिहिंमूलमककोनिहंकिपे
वसवहुंजगतहैं जपजासुनामहिंजपततजिभ्रमजालमुदमयभगतहैं जपजासतेजमकास
मयमातिभुवंनअगजजगरमिरहयो जयजासुरूपअनप्रसानिममपरमईसहुंमुषलह्यो दोहा॥
सुनुहुंसिवाघनिगाधिसुतलषनवचनमुदपाइ कहयोसपलतेपउतरदिसिचलवभोरपधरा
ई चौपाई अतिसबसोसबदिवसविताई चलेसुशिष्यसकहअगुवाई होतप्रातकरिकृतिसोहा
ई चलेरिषिनजुतलेदोउभाई अगिनिहोत्रसामाजिनमाहीं उतरेजाइसोंननतटपाहीं न्हाइहें
वेनकरिरिषिसमुदाई करिसंध्यांसानुजरघुराई बैठेषिरिमुनिमभरुषपाई कह्योनाथनिजवं
ससनाई कलिकमहींउतपतिजवरीनी भोउपमुंनिनितिसोवहुंगीनी कह्योनातसोवहुंअसुजाई

बाल
५०

यह भसा देखें जनि अद्भुत सिरूपा कोटिन तरनि ते जतन माहीं सेवहिं मा आदि ब्रह्म पाहीं मनि रोम
नि ब्रह्मांड निकाया बहु बिधि हरि हर बिधि सुरराया सब प्रपंच तहँ आनै आना तकि भइ निय अति हीं
अकुलाना फिरि धरि धीरज रोउ कर जोरें कहै मा तुमै सरन हिं तोरे जै जग जंनन नि ज्वलित अति हू
पा परमेस्वरी अनादि अनूपा जै अह ला दिनि संधि नि ज्ञाना शक्ति जासु प्रेमा दिनि धांना दोहा॥
न सोरठा उर उपजति अति त्रास कै मैं सन ना ते सको होइ जो सम्रमित मम काम तौ मैं संछ हुं मा जक
छु ८० चौपाई सीय सकल सौं परम प्रकासा भूपम सन कि पसहित हुलासा सब मैं पर कोइ स्वर अ
हई जा को निगम नेति करि कहई को बिरचित ए भवंन सदा हीं अंत बिलीन न होहिं कहि मां
हीं करि प्रसोस बसि ध्यान लगाई मुनि सिय बोला गिरा सोहाई तुम मोरे सब हि न के नाता मूं
लि कहहु जे निमो कह माता भू दुख लहैं असुर अघ भारे तब तब ई सरुप बहु धारे अंस कला पर
न परकारा हुसं न न म हुं होइ अवतारा तेस ब अंस राम के जानो राम हिं मो हि सब सो पर मानो दोहा॥
न सुर सुरभी सुर नहि ते हरन लेत नु बिभार दसरथ अरु गुरं सदन सोउ लीन आइ औ तार ८ चौपाई॥
ते कुन भेद राम मम मोहि पांही तबए कवप है दस माहीं हंम अरु राम अनादि अनंता गावहिं सिव सेस हुं

निरषि राम रानी सुबसांनी कि यस नमांन भाग्य निज मांनी देस कोसल पअरपत भार्य हंमे सबय
ह्म भई हंसि क हेरू कहहि परसपर सउ रलोगा कि सोकोन धो दसरथ जोग दोहा करि ते जरा
केलनि लक आ एको सिक पास सुमति भी निस नकारते कि पसंनि पुरहिं निवास ८५ चौपाई॥
करि वार नाम रिपु मन भाई प्रभु समेत पो दरि षिराई मात कर्म करी चलेउ मुनीसा गवनेउ संग
हिं अदिनमहीसा चलि मग कछुक कहेउ मुनिराई देहु मजनि सुष अवन पजाई नवसुनि ऊर
चरन नसिर नाई पलकि न मुनि पुनिमिलि दोउ भाई फिरे उभूपभ अरुपलो भाया तहि पार सजे
उर कगं ढांयो चलि मुनि मिथिल हिं उपवन पेषो नंदन बन संभस बहिं नलेषो पुनि दरसांनो य
कबस पांना रंम्य रहित बनजीव पुरांना नव पूछेउ मुंनिसंन रघुराई कास सपयल पसं नलषाई
होरा गोतम स्राप समराम पहं कारन सो कम महूरि संग अहिल्या ले इहां रहे कर तन पभुरि एक स
मै मो रिन रघु छवि गोनम अंतर पाइ मुनि लिवे बधरि कोंमल स आ पो पलसु रराइ ८६ चौपाई जो निंद
नी मुनि नारी नरिसु पफिरि बोली भयमारी भागि आस अवरु सा नेजा पो मोहि अपन पोवे गिवचायो
सकर कर टेकु रीतेज्यो हिं पावन तेदे षोमुनि कहं सो हा गीरघु उदक कि एअस नाने लिपे सम अधिक सअ

उछोमसं सन स बहुसुषछाई परनसेजपो हे प्रभु आई सोपेल बनहुं क्रीसे इकाई दोहा उठि प्रभात कारि
क्रिनिम भुउ नरिसोन संमुनिसंग चलि देषी दुपहर अमल सुरसरित रलतरंग चौपाई सारसहंस कमल
जलसोहा परमरम्यतट मुनिजुजोहा तहं समहर्षिन धिक्रिसुदमीने न्हांइपितरसुरतरपन कीन्हे
नित्य होम करि गौरिषिराई बैठे सुधा स्वाद रुचि षाई करि अस्नान ध्यांन होउ भाई बेठे जाइ मुनिहिं
सिर नाई कहेउ कहि प्रभु गंग कल्यांनी कहे उतात तुरं तुं समभाउ
आंनी भागीरथ रघुराउं करि कैमन तें सब कथा सुनाई निहिविधि सागर तो चलि आई सुनि सब
षंन रघुबेर सुराई परन प्रगनि मुनि आसिष पाई दोहा कि पनि श्रांमदं निस तहिं निसि उठि प्रभात सुभ
नीर नित्य निवारि सुनाव चढि उतरे पार सोनीर करि सनाम चलि मग सुषद सुरी विसाला जाइ हे छेउ
[illegible] प्रभु मुनि कहें सुनो सुनरसा कनिराइ भोवि साल ति हियहं पुरी रची विसाला नाम सुमति नृपति
ते हिंबंस अब सहन सुमति गुन ग्रांम इं मिमुनि कहत हिं सुमति सुनि आए जुनपरिवार प्रगपरि मुनि
हिं समाज जुन रजे उ विविधि प्रकार चौपाई परे हिं जबजुगल किसोरा भए नमनाविधु बंदचकोरा
पनि सबकिं नर पेउ अबनीसा ऐकमार को कहियमुनीसा निजइ निपरी प्रकासित कर हीं बरबस नर
रनारिन मन हरहीं कोहि कारन अति

ने बिमल बारि बर सुधा समानें अरुन पीत सित असित सोहाए बिगसे बारिज अलिन लुभाए कूंजत कि
लकल बिहंग न जाती बिलसहिं तरु बर बिटपन पांती सोभित सुमन सुपिक कुल कूजैं रहीं परसि पुहुमी
फल भारें जहं तहं रहीं फूलि फुलवारी त्रिबिध बयारि बहहिं सुषकारी बरुं रंग रजन बिचित्र बनाए ॥
बर बाग निसुरसदं नसुहाए कनक मुकोर बन कबि तचौरें सौध सिषिर कल समनि छबि बारें ॥ दोहा ॥
लषत लवा लतन सषंन कहं हरषित चलि रघुनाथ आनि बिबिचित्र उरनि कटहीं भूषित मुनि बरसाथ
उतरे जहं तहं रिषिन गन नाना देसनि आइ आनिलो कसामा भरेल सलिल सकल समुदाइ ॥ ८८ ॥ चौपाई ॥
सुमौ पल रिषिन जुत मघ लेन आए कौसिक मुनि कुल केन सोइ करि सतानंद करउं आगे भूसुर सचि
व सहित अनुरागे आइ जनक जनाये पद सीसा दई सुआसिष बरु रघु मुनीसा पुनि सिर परसि जिसमेत समा
जे करि उभर उ मघ चहर न आजू भये कृतारथ पद रस न पाए बूझि कुसल मुनि निगवे बार नव देषे
दो उ राजकुमार सोभा सीं वृसुसील अगारा रहे उमहि मत जिन निमिष बिनिहारी तंन मन सुचरि बिसेषि
बिसारी कहेन परसपरी तिरस पागे जिन अंग प्रथम भूप हग लागे ॥ दोहा ॥ छकित कृत्ल सौ पुनि धीर धरि ए
को जुगल कुमार छबि के छबि मुद मोद के सरस सिंगार सिंगार ॥ ८९ ॥ चौपाई ॥ मृदु मूरति सब के मन ह

बाल
५२

न दि

गिगिसमानै सुनि निज बेषक सवतिं देषी जांनि दुष्ट आचरन बिसेषी दई श्राप कोहि कै कटु बानी गोतम पतिम
नि आनि दुषसांनी कह्यो अहिल्या कहं पगिं जोई रे पापिनि तोहि लषे न कोई परी पांइ मुनि श्राप कराला॥
नव मुनि देषा तेउ परम दयाला दोहा ऐसे है आश्रम रामजब तन बलहिं सुदृढ सरीर मिलिहै मोहि इमि कहि ग
ए हिमगिरि मुनिवर धीर ८७ छंद चलि करि रघुपावें न परम अवतेंहिं मुदित मुनि कौसिक कह्यो न हें
गए सोक रिहरस अघ दलिर निहुं निंदत नन कह्यो नव परे ताके पांइ रघुवर सोऊ आनि आनंद भरी तकि
रम अंग अभिराम अनमिष सजल चष पायें न परी सोरठा सुमिरि गिरा मुनि धीर बोली पुलकित तर
जि प्रभु नरु रानत मालशरीर नौमि राम जुत बंधु गुर छंद नमामि सर्वनायकं सुवासिनार्यदायकं॥
स्वगोचरं परात्परं अनंत विभुं धनुर्धरं नमामि साधु रंजनं कुभूमि भार भंजनं करालकाल वारणं न
मामि सर्व कारणं सोरठा इमि वर कीरति गाइ निज इसित वर पांइ फिरि मिली मुनी सहिं जाइ कहि निज जा
इ सो सुव शिवां दोहा नेतिं छंद नवरसे भमन नस्वर धुंनि जय जय तिसुनाइ सहित अहिल्या गौतम कुंल षोआ
इ रघुराइ करि प्रभु जिमि मिलि कौशिक हि गेत पाहित सुष पांइ नवल मरर्षि निलेम भरहिं चले मुदित मुनि राइ
८८ चौपाई तकि उपवन मनुवर निसराने पापी सर सौ सुभ मंगल षाने मनि नजटित सुवरन सोपा

५२

रहीं महिमंडल करें भषिन कारहीं वेकिसोर नरडे षवनाए धोको उसुरावर भूनल आए षोममत्रें लभाउसु
षदाई धरे देह तन देह दिषाई करषो विहँसि मुनि जार षुवेसा दसरथ सुत नृप अवधेसा राम लषन दोउ बंधु
सुजांना तुम्हो कहहु सो अहै प्रमाना असकहि फिरि कहि चरित सुनाए जहेउ धनुष मष देषन आए
सुनि समाज जुत नृप अनुरागे दसरथ भाग सराहन लागे करि विनती निज भाग वडाई उत कि तन लषे
न लागे दोउ भाई दोहा सुमति मिलन लो मुनि वृदंन मुनि भिक्षु मम ग्राम जानि जगत पति सजल लष
ष सतानंद लषि राम २६९ चौपाई बोले आरत मुनि वर पांहीं मम पितु थल लै गएहुं कि नाहीं विस्वा
मित्र कह्यो लष धाना मिलो गौतम महि मुनि तुरुं माना सुनत हि मुनि अति आनंद लीन्हा पभ्र हिय मनामय
नहि मन हिम नकी न्हो समा मध्य धुनि अति सप्रीती विस्वामित्र महा नपरीती सतानंद कहि सव हिंसु
नाई लगे मसलमन सवसुषदाई लै नृप मुनि नम अहि किरि आगे चलि कछु परम प्रेम रस पागे सव विधि
सुषद रंस्य थल माहीं दियो वास जेहि सुरहु सिहांहीं नव कै विदा नृपति गृह गएऊ प्रभु सलषन मुनि
संग तहं छएऊ दोहा गई फेरि जहं तहं षवरि मुनि कुल सीर निकास सुने अमात वषत पवार नृप सव भए

पौरुषनि अरु धैर्य धारि बसायौ जनक नगर निमि नाउ धरायौ तातें समुद्र रतन ना करताई रतन समूहनि पु॥
रिहि हृदाई इमि हरि कहत राज पथ गए जहँ अति सुछवि बिलोकत भए जिन पै मदन रति हूँ दुति वारी
गारी ऐसे पुरु सोहँहि नर अैन मैंन के चित्र अैन जनु जोरत हीं रुठि लैत रुरे मनु निरषहिं मनहि अटारिन
चढ़ी अति अद्भुत आनंद सो बढी उमगे रससे अन मिषाहीं पुहुमि परस कोउ पैवत नाहीं जंनु अ
पसरा अनूपमयेई मही महेइ जनक पुर जेई सोरठा जहँ उनकौं ठनकोइ उउन नजां नुहुं अंच
जोइ लहि ~~मंगल समकुहि~~ मंगल सेमय हिं जोइ जंनु कल सै आगे कियो १९७ चौपाई चांपल षाव
नद सरथ लाला अरुसि करन टूटहिं हिय माला तिन ने गज मुकता नेमन ऋरहीं सोइ लाजा वरषा
जंनु करहीं त्रिरि सं झारे हिलैं कोउ धाई छबी राम छवि सुधा छकाई लीला कमलै सुष कारि लीनें
जंनु अस पाधी गुन फल दीन्हो कोउ दृग पथ रूप लिं उर लाई कियो आलिंगन अस सुष पाई कोउ
उ कहें कां मज न्मो अरु गारी देइ इन्हे बिधि कारि रति सारी कोउ कहें रति न इन हिं अनुहरई बिधि से ९२
जोगउ बिनै करत करई कोउ कहे कामन तांन नितिहीना मानिनइ न सैंन पहिले हिलीना दोहा कोटि हु
अंस जो यह छबि हि लै कैला स हि जान जौ न जरा त्रननता हि हरु रूपहिं ल षन लो भान १९८ चौपाई॥ २॥
मार

पेमु तन भजि नन लगि लन कि किपद सरपत भूरि २०० चौपाई जो अनुमांम नहो तयु सांई सो मैं करौं राम की
नांई मुनि कल तेए अन यो धेम कि सोरा जग विष्यात अहहिं वर जोरा ताहें हिं पर अब तुम्हार विलोका ताहि दे
षा वहुँ तजि मन सोका नव मिथिलाधिप मुनि पहँ करे ऊ सुनिय धनुष कंम हु जिमि लहे ऊं दस मज्ञाप
निज वस षमांही भाग संभु कर दीन्हेउ नांही लिपस रोस नन वध नृप चलाई किय अस्तुति त्रिसिरु रसमु
हाई ऊं मसेन्न तहं आसक्ति पाला रवर नस रास न दिशो विसाला निमि के जेठ तन नृप जग ज्ञांना देव रा
त नृप जुन विज्ञांना रोरा जानि तिन हिं हर भगत वर दिय देइ नस षप पांइ लहिं धनु शिव हिं प्रसाद ते किय
महिं विजय ऐं वजांइ २०१ जब ते नृप हरि पुर कहँ गयऊ तब ते नाहिं कोउ समरथ भयऊ जो धनु धरि मारि
मं उलजि तइ ताते षातिन अस इत ररूई मष हित महि सोधत यक वारा लहे उ सुता गुन सुछवि अगार
गु नेउ जो करउ अज जो निज होई जो गए देन कहँ ताके सोई ते हि प्रगटन कहँ धनु हि सुजांना अस विचारि
मैं मिप्रन ठांनी जो कोउ हर कोदंड उठावै जय श्री सहित सीय सो पावै सो सुनि रावन आदि हुं आए॥
दु त्सो न नव गे सीस न धार सोइ अति मृडु तें न कवरें न आगे कहहुं मगावहुं न मुनि अनुरागे सोरठा नु
वें सास नव लघु कांन ताते नाहि लषाइ है सुनि मुनि सम सकांन जानि छकित मम भरुषन्पु रोता वीजि

कौतुक देखहिं हिमगिरि नैना । सोइ जपफल कातन नें न लहिं मैना । प्रथमहिं सुनि न मोहि अजमा सो पुर
बिदेह अबजीनन आसो । एहि अवसर सिय पहुंची अंटारी । अलिन ओट ह्वै हरिहिं निहारी । प्रति अं
ग सुष बिलषत सुष छई । सुष बिधु सुधा पान ठगि गई । मुद सम दृग मलं मगन सषी सो जानी । आनंद
आंसु न फेरि न लोंनी । तेहि छन राम रूप तेमारु । सिय धीरज लीन्हो अपारु । भे असन भस्वे
द सुरभंगा । सषि न दुराय उभ्रम हिं संगा । आसु कं पषलक निकहं सीना । सकी छपाइ न भी
नि उनीता । दोहा । साही ते जं तु मन पगनि परी सो री ठल जाइ । सकै न कहि कवि एक मुष रहीजो
सुष सरसाइ १९९ चौपाई । सिय आनंद सो निज हिय पगुनई । जो मम मनहिं बिधाता बनई । सो अ
स सुंदर रूप बनावै । लषन निरंतर अति सषपावै । बहुरि बिचारि कहनि मन मांही । बन लहि बनाए
अस बनाए अस बउ नांही । देषि बनाउ विभव ग्रह राऊ । गुन समाज सुनि मन अति चाउ । चारु बो
ला वैठे महिपाला । बोलहिं वंदी बिरद बिसाला । जनक राज दृषि तन हि उठि धाए । मुनि समेत हरि साद
र साए । अति आदर बर आसन लीन्हो । पग छिपछि पूजनि पूजनि एजं न कीन्हो । अं निसु निसो कहं मोदि
लाना एक । राम आगमन अभो अति ला एक । दोहा । सो गंनि अनुचर मोहिं तुम कीजिअ ग्रह षरि गकि

५५

बिरहा हरु रामकहुं कै तजि मानहिं देह सुना सहित पुर नारि नर २०४ चौपाई मल्लहु धनुष हि षेचन भए करउन
परसपर खेद हिं छए सुर अ सुरहु नहिं जा हि उठाए सो धनु उबाल न हेत मगाए. कोउ कहुं मुनि सको बन छए
री नारे कक रहु तबे मन मांषी करत नर क बड़ लाए न जहां राम लषन मुनि निरपम धि जहां फिरि कहे जोरिए
हें अस भांषी देषे जो कोउ भट अभिलाषी जो रिपं नि नवक हेउ भुवाला मुनि परुआ पो धनुष बिसाला दे
षदउ ज अरुन पवल बांना जाहिं जो हि न जिग एउ मांना एम हिं पारि लषा व हुं स्वांमी तुम तप जोग मां
हज गमांमी सोरठा मुनि तकि तें न षेन स्याम आनंद सो लोचन सजल कह्यो बत्स हे राम देषहु धनुष
न पसारि धंनु दोहा गए सो गुरुहिं प्रनाम करि सिरहु हुं नितं हे राम महिपं नम धि मंउ तन मन हुं उउ बिच
बिधु छवि धांम तेहि अवसर परजं न सवे सषि न सहित रनि वास रहे सोन कोउ जो रूप धनु लषि नहिं
ले न पसास २०५ चौपाई सीय दसा मधि सषि न सयांनी (नलिन नाल हरे धनु उर आंनी) बचन अगम
कि मिकरहु भवांनी जानि सिरो मनि सो सवजांनी सदि न मन हि मन प्रीति बषांनी नलिन नाल हरे
धंनु उर आंनी लिय लील हि उठाइ बरपांनी तेहि न बांइ अति चपल चढाई दहिन कर कर षेउ सुसकाई
लिय संदेह सरासन भंगा किय परषु कुल मनिए कहिं संगा डारि षंड जु गरंग महि मांही फिरि सहज हिं गत

ल नहिं उरबसी आदि अरु देहि अजादि असीम बिरद बखानहिं बंदिजन नाइ नाय पद सीस जानि जु
गत पितु राम जगत जें नाम निज जानकि हि जानि सनेह सुयंबर सब वृहि सब नृप निज सकल न बखानि ७ चौपा
ई छबि की सुछबि सुखि सिय पहिं संवारी करि मधि गांउ निसुधा रति धारी तिनहिं निरखि सुरतिय सकु
चांनी सिय छबि रमा किमि कहौं भवांनी बरन हे न आवत सब देषी उमगे प्रान रहउ दधि बिसेषी सु
र नबि मांन छब छउ असमांना मंगल छबि मैं भए उ जहांना दुहुं दिसि को सोभा सब सांनी तौ उपमे
है जानि बखांनी रचि न बुजग कोसि कसु निनारू बिरचत जो कहुं औ सहि याहू तरं अतुरं भंग च्वप
ल चषकौरै निरखत रंग अवरे निसमु ओरै देषि सिय पहिं अदसुन सुष पागे सरपानि आदि कहं नसु
र लागे दोहा परम मृदुल सिंगारमय रूप न कछु न होइ कुसस मिधि हुं असपरस अजरहै हिं कु
चौ० ठिन करि होइ २०८ नहिं बिधि सान न मनु निरमाना ता तें होत नहीं अनुमाना रस सिंगार सागर
कहुं भाई जरहूं पसी पलसि सुरु जाई निरमित कामकलें सो कहई बिरचन अतन असंभ अरु अरु
ई सफल जनम अनमिष ता आजू देषि परम कुल राम सिय काजू असकहि सुमन माल हि समारी
मेव कोर बिरचवंदन निहारी गुर जेनस कुबदरस अनिवाउ बनेन बरन न तेहिं छंन भाउ कर कम

ॐ: भएबधिरअजआठउकाना श्राठकुअहिकुलसुनिनविहीना पैचघनहिंश्रुतिदोषविलीना ११

राम ५७

नेसुरसांही भरेउ भवंन तिहुं रव सो मतोंना छंद धंनु भंग धुंनि अति चंड सुनि जंन सकल महि सुर थिन पुरे
रहिंगए मिथिलानाथ अरु मुनिनाथ उर कंपित घरे थिति तुलति हलह लसिंधु जल घल दलन मल्ल
बल भल परे रहु गिरन गिरि दुरस्त्रिंग दिग्गज निकर विकरि उर भरे कलमसत सेस हुं कोलकम
१ धराधर सों धारही महिदा विपाएं न लखंन थामहिं हरषि नाय निहारहीं मुनिंद्र रघु जनि साधुज
न कुरकों न देजैजैकी धरिधीर करि रघुवीर सुमिरन मुदित मन पाएं न पौ सोरठा उनिम कुदितम
अंजोइ सुरनर सिद्ध मुनीसगंन कियजैजै सब कोइ बरसे सुरतर नरुसमन ६ चौपाई बाजेअं
बर अंडनि निसाना लगीकरन जुबतीजु रिगाना करन गाधिसुन समन पउ बाई उठी सषिन मि
लिरानिहुंगाई सिय सुषमे मवितोकनि भाऊ लषिउ अलिन अमात न चाऊ विहंसत बंद
न कह रहिं जंन ग्रामा भंजेउ संभुसरासन रामा मलोमुदित मुनि पगपरि राजा कहमुनकाप
भसोप कह काजा सुनेस नेह राम पुनि देषा धंनु भंज न अदभुत करि लेषा कोमल जेन बल पर सअ
तरकीं कि मिकी रनि कलि सकीं कुंडर की असकहि जनक मिपहिं वलवाई सत्तानंद अनुसां
सन पाई दोहा बजे बाजने विमग ना कि सधुनि वेद विसाल गंधरव किंन्नर चारन हुंगावहिं गीतरसो ५७

येत सार २९० चौपाई कोउ न हँ निज बरगन सों कहेउ जाति कुल हुं भल मुदित न कहेउ विप्र वेष को उ
बनि न तहिं रूप भये सो भूरि भय व्याकुल भूपा तेहि छंन मन हुं भार गव भीती कौतिउ छाल सिरी सो
सीती राम लखन गढ आश्रम छाई कहि न जाइ मुनि सिय दुचिताई भए सो खवस पुर नर नारी येक
येक सो कहहिं दुषारी छत्रि रुधिर सर हिं तिहुं बाला न्होंहिं जासु सर कालक राला भरग भक्त नेहु
भागि गइ आए अब धौ विधि विभु कहा बनाए सुनि ए बचन जनन सकुचाई कौशिकपति बोले
रघुराई छंद कह सों लरी पुरु अनंद मै बिषाद हैं कहां कह सो न सो न भार्गव केंद उतरे न ही रहां॥
तके मुनीस कौ सवेत्र से उदे कि ए हहा सो पांच अर्ध अर्ध मार सो रह सो महा दोहा कानन के
काहूं बचन न धनुष बहुं उजैं देषि परसराम बोले वचन न उर अति अचरज लेषि छोड न सरजु न षें
बिहरति पुर सपुर स्वाहिं नाम ना छनि संन उतरे वत य गुसो न उतरेजा सु २९१ चौपाई दसोंबा
लगा हुं बल सोई विधि अति अदभुत गति तुझं जाई मम जीतो कुमार सुष देषी कोध तंन अति मोह
हं पेषी हरि गिरिजा जहँ सन्ने भए तिन के धंनु के टूटि हुं गए बउल बोधि कषि कहे मोरी बृथा हिं कह
हिं सब मो कहँ कोही अस कहि कुल उच्च स्वर बोले कर सो कठिन कुठार हिं तोले रविदे हव लिवो गि

तनि जयमाल सोहाई । सिय समेत पनकिम अहिउ नाई ॥ छंद ॥ गहि सीय कर सकुच सषि समानी माल पहिरा
वत भई । मनु परसि षैचि न सकल नैसोउ कर सी तिउरउ मगी नई ॥ लषि भांइ अंनुपंम अमर वर संहिम
मन संषवजाइकै । पुरनारि नर धकि कारहिं आरति मंजु मंगल गाइकै ॥ सोरठा ॥ हय पलांपी मनि चीर वि
विधि निछा वरि दहुंनकी । रोहि लहिं जांच कभोर मन निविमल कीरति सुदिन । रामहुं चितव लषै
न । भतक्रित नन छवि सुवेदकुन ॥ सिय पहिले आई अैन मृगनैनी मुरि हरि लषन ॥ दोहा ॥ साहीअव
सर चार एक सप दिस भामधि आइ । जनक जोर कार जोरि जुग वोले उ अति अकुलाइ ॥ २०९ ॥ चोपाई
महाराज साहि धनुष समाही । आए मुनि नृप गंन चहुं घांही ॥ कहहुं जव न गज रस मुनि सि सिकारू । आश्र
म ते गम नत पगचारू ॥ जहं संहजं नसंवाद समसंगा । कोलाहल सुनि लर धनुभंगा ॥ जानि हिं कुडु
आइ न भयु रजु । समयंउ चिन नईन कारि पुत पांउ ॥ सुनत जनक भय पावि कल मशांई । सतानंद आदि
क मुनि राई ॥ सांति मंत्र पढि ईस मनाई । लागे करन मंत्र सुमताई ॥ सुनी परी जहं तहं भयवानी । सुन
नहिं सषि नसहि तस वरानी ॥ लगी मना वन अति अकुलांनी । विविधि भांति सुर पिमर मवांनी ॥
दोहा ॥ छपेहिं परा नेवल नृपति तजि को कनि लज संप्यार । हरषि नहारि परलषं न हित को तुकाभ

सुनि कृ छुत प्रजा निउर दपौं वृउल विपाऊँ वैन पै पितु तान नर पन किहें न पन रधिर सां जोंनि उऊज
कौ ध अनल लहि इ धंन मपरुं संमु धंनु भांनि २१६ चौपाई राम कह्यौ मुनि एसुं निराई बालचपल
ता वसा ढिग जाई लिय कर चाप दिजो इन नेऊ परि प्रसंग गनें तुम हि न गने ऊ भ्रगुनाथ कहं
कौ यहि मांही अरे मुपम मति ब्रालिवि मोहि काही गने न हरि कह सुनि पकेपाही गुन्यो न गरवकु
हि यअस नांही भोन विचारि मि कानि लरि जांली अज चंक मम मुछ मेक राही जं जननी वीर तुम्हारि
नि माता जेहि मग सो सुत जग विख्याता भ्रग न गने सदन उरेषी जित हि प्रसंसे उ शिखा विसे
षी सुनि मुनि रहसि कहं राज कुमारा अस्तुति करो न बार हि बारा दोहा पढे जे विश्वामित्र पहं
दिव्य अस्त्र समुदाइ सुरति करो रघुपति समय जें समर उछाह बढाइ २१७ चौपाई परसु को पउर को प
रि हरहू रजनी पजानि हिति जे अह हू अति सरोष भाष्यौ भ्रगुनायक रे जाति न मे मनि वेलाप क काल
डार वस मज्जा की धारा लिये कांध में सो इक ठारा कत अव हांवि न आयुध ठाढा धरि धनु सर कार क
रु न गाढा हरि कह हं मर विकुल मन जाए प्रभु कौशिक दिव्यास्त्र पठाए हंनि छवि पानि वीर रघु
त भीमैं नदपि विमव धगुनि निज जी में (नदपि विमवध) परम अस्त्र मंरंन में हं धरे औसे सांसाहस

उं कोशिक कन कव्यानि रषि भ्रगुपति अनुरुक कै न कहौ लवन नं
दिनकर वंसन वीर तानी गैरा

वनावहिं कहंसोहजोरामदेषावहिं जेहिंजानेहुंममगुरुधनुतोरा तिदरिविष्यातवीहुंबलमोरा मुनि
सकुंपरहेजनककुपाई हरिकहंजोहरुमुनिजनभाई दिपेत्रिपुंडभालमैजटासुसीसमैछजे कु
ठारकंधहैतुनीरहेकोदंडउजसजे सुमंजुमेषलामृगाकोचर्मधारनैकिए लसैविसालनैनलाल
जाहिरेरिसैहिये छंद अलंकारतुदासके अंगकीनें कौरदेहीनेदंडओगंनलीनें हदैमैमहां
उपसकेधारगाजे मिलेसांतरौद्रैहनेंमानुभ्राजे दोहा अदभुतरूपमुनीसपेअवधेलंकुजो
होइ नोपावहिंगुरजनदुषहिंजहिंसमुझंनेसोइ कहेउजाइदसवदनमदमोरनसरुससु
बांहु भुजवलभंजकहेमुनिपरिपाईसउधाहुं २१२ चौपाई देआसिषछबिरहेनिहारी लवि
अभीतरेरामउचारी कहंपितुरिछबिपंनधनको पेकसहायकप्रदसुदरनको पुंनिछत्रिहिं
निगर्भकरनासा करतकरतसबदिनअनयासा इगंधिनैजज्ञहुंजेधारा सुनेनश्रुतिसोधार
कुवारा कहनवरामजंनमछिजनाई कुलभ्रगुअरुअस्त्रनिससुदाई नासानगुरुसंकरजाके अ
कयपराक्रमकेजगसाके छोनीजोतिद्विजंनजिनदीनी कीरतितिहुंलोकमहंकीनी ऐसेमुनि
रुसुसेकोउनाहीं तिनजानेपरियतपगमांही दोहा परसरामकहंरामतुडंसमसुजंननाथेन॥२१॥

निज जननी बध कारी बधै जोग कछु पाप न अहई ऐसो कामसभा मधि कहई निपट ढीठ निरलज्ज मम
होई मुनि मुनिक हेउ मरि रिसि मुसकाई दोहा भली भली लषि मन कहीं नैन लहै बल धाम रघुकुल रद
शरस्य गृह लषि भए जेठ लेराम २८७ चौपाई बीर रहित ताछिति तिन लमो हि माने नहीं एक अंकुर अहटा नै
करु तहं राम कहहु मुनि भाई कहे गुरु न मतिं इमि न बड़ाई राम बचन जनकादिक भाए कहपौं लषन
फिरि रिसैवढ़ाए अब मुनि हैं मइ जमौं नैं लाए तुम निज सुजस कहहु मुष पाए परसराम नहं रामहिं
जोही कहेउ कहां फिरि फिरि गुरद्रोही दीन परम मृदु बचन उचारी तजि छत्रिय धरम हि कुल भारी
गुर कौशिक मद बिनय हुं जोही करहिं कलंकि न लाजहिं नाही हरि कहं कहहुं सांचि पैं वांकी पैं
मप कहि द्विजकुल भयमांनी दोहा अतिहिं कुपित मुनि कह अरे मो कहं बार हिं बार निज कुल गुर कौ
शिक सरिस मिस कहत न कुमार आजु चारि तुम सहित सहित हति दसरथ सरग्रांम सदल जनक काल
दलन मै रुद्र शिष्य मुनि राम २८८ करौ समर महिं भीम मनाई मम कहं काव चन निउरवाई उपजे जेइ र
घा कुल मांही तेस पने हुं रन ते न सकाही भृकुटि कुटिल भृगुवर रिसि छाए कहे उक हां फिरि गह
रुल गाए बोले राम हुं जा किरि सिहि तें उ द्र शिष्य नु मरु ऐवि नु जीते नहिं संतोष कशिर धनु तोरे कहपौं भा

बाल॥
५६०

कैसें करै कहै सुजस कै अजस सहिं कोइ द्विज कहै रघुकुल सरन होइ सोरठा मुनि कहं वाचक स्वामि कै वि॥
स्वामित्र वशिष्ट तिन सम हम महं कहं कहंसि अरे अज्ञ अनिधिष्ट भोजु भगर छत्रिय धरसनारायन की
वांह भयो लीन सौं जिन भुज जं नितेइ हंम भयु कुल नांऊ २७५ चौपाई उत्तर सुनि उत्तर नेकं कहां दरसां
वहिं किम विक्रम महा हर धनु भंग जानि तरसि आगी दहति उरहिं जो छन छन जागी निमि रघुकुल
कुटुंब के आसु उमि हैं निस्चै आजु हि आसू गुर निंदा सुनि कुपित अपारा भयो अरुन चष लषन
कुमारा कह्यौ गुरु न निंदा अनुसरहूं मुनि सभाउ उर नेकन धरहूं रामानुज रामे जेठ न भाई रघुकु
ल महं मोहि जनन निल जाई जंन मोहि वीर अवीर कीगनहीं सपथवां अवनि अधम मल भनहीं तु
म अस मुनि मद मथि वे कांही सो तप आर मैं अव परिं षांहीं सोरठा मुनि कह राम अरे तुम महिं काल तजे
ठौं भाइ आइ कहौं लछिमन इहैं कह्यो विहंसि रघुराइ २७६ छमा करिय अरभक अपराधू सुनि न
कवहुं सुहृद गुर साधू परसराम कहं पनने हुं मांही मानन हों कोहि हैं किछु मांही तुम हिं अस भए
पीछें रहूं जैहैं अस जो निष हलेहूं पितु सों सन निज जननि हिं हने ऊं ता कहं पर सुन सहजै गने ऊं॥
ऊंनि नृपगन भे सालव धकांहीं परसु निठुर विदितै जग मांही कहे हुं लषन किन कहहुं मुरारी परसुमि

९०

पुनि पद धरि सीस ॥ सोरठा ॥ बजे सुसंष निसान उरसे सुर मुनि गन सुमन लगी करन पंनि गान तिय सानि हुपुर मंग
लसजे २२० चौपाई उपजें नर जनक सुभ्रम सुरीती सहित सषिन पुनि सिय सषि प्रीती कहि न जाइ सानि निज उर
साहू भरे भुवन मुद राम बिवाहू राज कुअर धरि रिषि रिसि बहु पासा हसि हसि करहि प्रेम परी हांसा बंदि कोसिक
हि जनक बलोरी बोले उलकिन रो उक जोरी सो मन अस मत भा बम स्वामी पठइय पुर रिहि सी धुज गांमीं ॥
सुपत्र पद निहि सब षबरिज नाई ता जि बरात बेगि जेहिं आई लहि मुनीस मत अति हरषाई बंध बरग
वि चवि ठी लिषाई चले चार जुग लै सोइ पानी परम प्रीति जुत मति मुद मांनी दोहा सोरठा राम कुं
अरि सो पद्मान मुनि संग पत लरिमि अतुजजुत इन कुल बेद बिधान चार करा उनम मुनि लगे २२१ ॥
चौपाई बिहंसि गल नितनि सराम हिंद रसहि बिबिधि रंग के फूलें नव रसहि एक एक कहें छ कील घाते
हिं रिपुदो ऊकु वंर षरहि छवि छाबरहिं निन मदें सा पत राज किसो भंजि चाप भ्रगुवर मद मोरा सष ए
षि सुठि सुंदर पहें सिय नाहैं प्रान हुं ते प्रिय पेरें सब काहूं कोउ कहें सषि बिनु कुबंर न अैसे नप रांनी
उर जें नर रहे कैसें कोउ कहें मुनि पुर बाहिर स्पाए नप निज लषनेन इन हि पठाए कोउ कह जनक नपेछ
निरुपा स्पाये जो बिअर बधपरमपा कोउ कहें नपति बरात बुलाई सषि दिन दिन आनंद अधिकाई ॥

रघुवर हृदय राजीव भायो धान लज्जा तिन महाई जनक दसरथ हुं सकुल सहाई पुंज अवधौ के आकु निलोते राम
चंद्र रूप भाष्यौ मोही परसत अवही परतुल चाई देहु सरासन मम कर भाई दोहा कहे भृगुनाथ धनुष चढ़
जो रावन तुम सरस याम भंजेहु भंग धनुष पिनाक पै परचीन्ह पिनाम २९ चौपाई हरकरषन हिं टूटि परु रहेउ
तुम निमित्त मानहि जग भएउ अब लै मम न बचाप चढ़ायो तौ मम जु हूं जो गीता पापो प्रहि इंद्र हुं नहि
सके चढ़ाई पीच हु कैतो बलहुं पराई नाराय णहुं चढ़ावन माहीं पावत है श्रम तं से नाहीं प्रभु सुसकाइ षी
चिं धनु लीनो चपल चढ़ाइ टकोरहि कीनो अति करालरव त्रिभुवन कांप्यो मुनिवर विस्मय राम कहं पां
यो कह्यो राम जो सायक होई करहुं विप्र षिमहुं मै सोई शनि गुरु दोही मुनि रिस भरो दियो बान कहु
गुरु हि करो छंद करि कोप हरि तब कह्यो भृगुवर अहो गरव महे भरे जस सुन्यौ नैसहि जो गुन हि जरहे
उतरहि छमाधरे सबल सबहुं मोहि निज रूप प्रगट करि विमल दिव्य विलोचने अति राम बहु ब्रह्मांड लवि
भृगुनाथ रघुवर तेहि छनै अवतार पूरन मानि निज तौ मोह बस नहि गनन भे तब ईश पति श्री राम अ
निलौ षे विधि तुम सरहुं न जन भे अति ते ज जुत सर तेज निज कौ तुरत लै प्रभु पद गयो तब परे शहु मी पर सबर न हु
मौन द्विज जं तुरत नेतु भयो दोहा भृगुवर फिरि उठि जोरि कर जो नि राम पराइ स करि अस्तुति तप हित गए बन

रसाल बन लाए गौरस पल्लव फल निसि लाए कदलि पुंग अहि लता उबनाई मंगल घर पर धुज छवि
छाई हाट बाट गृह बाग सकूपा रचि पुरबासिन कियो अनूपा भै पुर मंगल रचना जैसी सकै न बिरं
चि बिरंचि हूं नैसी एकल छवि बनि कवि भव ग्रह सोभा देषि दिगीसन कर मन लोभा दोहा जेहि अ
बसर पुर छवि भवन त्र पावन सारद पार उमा न अन्दर जस समुझि सि परा मम भाव अपार २२४ चौपाई
तीनि दिवस सब राम रहे करि बासे देषो हतन सरजु बिलासे तरल तरंग भोर बहु भ्राजे सुषर सदु पछि
जवन ज बिराजें चहुँ दिसि ताउ उत रे अति चाऊ निरषत नन नसि दीठि निवनाऊ जहं तहं नगर बुजा
हिं तुव धाई कारहिं गान पिक व पानि सो हाई गज मुकतन निचौके रचि पूरी चांमीकार चौतरि यारु
सो ी तिन मलं मनिमय घट धरे दिपहिं सो दीपनि मालनि हरे निमि प्रति द्वारन वंदनवारे निजकर
रचि मनु मदन संवारे इषवारासी पर बासी देषे रोरहिं रघु छंन पापि कहिं पेषे छंद कहुं लषति कटनक
ति नकल भं निसज्जे सुरंग नजाति के कहुं बाजिरथ बहु बनक भ्राजहिं मनि ननाना कांति के कहुं राजकु
२५ वर सुजांन सोहहिं मलिपमनि स्तातिके कहुं चीर धरि धंनुती रराजाहिं बीरता की षानि के दोहा अवध
बिभव आभा अमित भए सबिन अति देषि गर्व नेप्रा निगाहि राजपथ नहि कछु सुर पुर लेषि सोरठा ॥

दोहा अनिमिष पासि परि बिदेह हंउनि अनिहैं वारहिंवार तिमि आनें जै है पऊ अलीअनंद अपार सीयसु
छबि सकुचें नि बलनि तकनि सप्रेम उमंग हिप हसि राहत राम पल आए कौशिक संग छके सुख
बरसु घन घनि जनक बिन प्रसन मांनि कह्यो वरात उलं सिप अवटि केला भवज्जांनि २२२ चौपाई
काग़रि गरन जनक बल वाए मुनि आयसु आनंहिं जन आए जिन लखि बिसुकरमहुं सकुचांना लगे ते
तिरचंन विमल विनांना षोडश षंभ उजं गसोहाए कनक रजत रंग वसन बोढाए तिन मंह महांम
निन बहुं जानी कि प्रतिबिंबि स्वना वहुं भांती उपर लग जड़ित बेमनि छाए कीन अरुन पट तोरन
गाए चहुं दिसि झालरि गजमुकतंनकी मगरोहुं नि मोहं निमुनिमनकी विलसहिं चौकें विरचि बना
ई चित्र गलीचीमन हुं विछांई भीत रसमुद सबु जमनि छाए सकल रतन जानि न भाषे दोहा
लसै चित्र साला ललितमान हुं बरु नबिहार पत्र न पुहुपन मनिन रंगई द्धनुष आकार तोरन
लसहिं जे बंदनवार मुकतनन केपु सरुं सहित नेड्चारि उ दिसि द्वार रहे राजि सालास भग २२३ चौ
पाई वेधिबितांन जोति दीपन की झलमलाहिं जुत दुतिमनि गिन की मन हुं सरतरनरंगाहिं अहुं दिसी
जोवहु दिसि पेपेखिनपरई मध्य बिशाल कुंभ ज आगमनू जांनि सकेसो जलमरिमन सुबरनमनिन

ति दोहा रतनफूलफलपल्लवबहुबिधिबरनबनाउ लहिसुबासलषिफरतमधुहोतचोगुनोचांउ

२७७ चौपाई नीलरतनअतिगुंजतठीकें चलहिंसुनलजलजूलअमीकें दीरघमनिदलांन

बहुंसोहैं करलिछटनिरविकारनितजोहैं बिछीबिचित्रगिलिमम्रृदुषनी चारुचांदनीतिनप

रतनी सैजंनकीबिथीसुषसीवां गजमनिमयपगजनिजुतग्रीवां कुंउलकरउकविजायठधारी

बैठरलिंसादरदरझारी राजलिंरतंनछरीकरमांहीं सोहंहिंसिद्धिमहर्षिमुनीसा जंजंबहुंजन॥

किपसरसुतिईसा सभामध्यदशरथअतिछाजत बिबुधनबिचजंनुविसुविराजत दोहा राज

राजपतिमुकुटमनियहिविधिदेषेउजाइ माथनाइ पानि हृतनदईपानीअतिसुषपाइ जैसो॥

सोभाचनमुदिमनतृपसौसेंपेंमउमंग मनहुंफटिकसीसाभरतकमकमरंगसुरंग २२८ चौपाई

ननननरुहलोचनजलछाए रलेषरिक्रहनतनेहुछकाए लगेकरनफिरिचकितविचारा ममर

कुमारदोउसुठिसुकुमारा जेहिंसुरनरअसुरहुंकन्डेलाषौ तेहिंगहिंकेहिंविधिरामचढाषो॥

चाविहुंनेहरकोदंडकठोरा तेहिंपुनिकिमिकरकमलननोरा पुनिकिमिरपभयउवरमदधोई जनकु

लिषापुनिम्रपांनलोई अबरजकरोंकपामुनिराकी महिमाजातसुजाइनहिंताकी गुसोसबहिं

बाल
६३

चलितिजिनपेषीजाइ पौरिप्रथमप्रमनिगनजटित सुरधनुषंननजनकाइ वलितन्वोमसीदिपतिअति
२२५ चौपाई ठाढेनउंदरद्वारीरुरे चमरछत्रसोभनितेंछूरे नैसहिंनृपतिफिरेवहुंआङ्हिं चारवल
नकीगेलनपांवहिं वंदीगनवरविरदउचारे दुंदुभिषंनषहरनिमदहारे रजाहिंराजनेरकाल
मधांना करहिंमाटचारनगुनगाना द्वारपालवरवेषविराजे जिनलषिइंद्रिहुंवरपलाजे स
वकेप्रभुहनन्नपहिचानी कहेउआगमनहेतववांनी सुनतहिंसोअतिआनंदछायो जाइस
महिंकरजोरिजनायो मिथिलापतिपठयेहलकारे ठाढेनाथदुवारहमारे दोहा लहिअनुसा
सनफिरिसपदिसादरवलेउलेवाइ पौरिप्रथितननकिसानतिनसभाविलोकीजाइ २२६ चौपाई
लषीललितनहंवारहदरी जलजमालरिनसोभितदरी विलसहिंकहुंकहुंमाफेनीनी मनुमनि
विविधिछटनिसोवीनी कहुंदुवारनहिंजानेपरहीं मनिपरभानिपूरेभ्रमकरहीं कहूंवारकोभों
नवारनहिं कहुंविनुजलपोलसहिंस्जलहीं कहुंजलमयविनुजलहिंविलोके चारुवोपरनि
रतननिकीके मनिनमीनरंगरंगसोहाई मगटजहुरनह्गनिअतिभाई फूलेमनिमयवहुरंगमर
सिज रहीराजितिमिभ्रमिरंगरज हरिगेहंगवरवोलेवहुंजति लसतिरहनतरुनतिविचित्रअ

जेंवनिन आगे शंची फिरि फिरि अति सुष पागे सुनि हुलसी विलसी सब रानी मातन मोद न जाइ बषांनी उरल
गाइ प्रिय पत्र सपांनी दिएउ दान गुर विप्रन मानी लहि असीस तिन की सभ षांनी मंगल गाउ उठी कल
बांनी कहि वाहेर आए दोउ भाई फैली जहं तहं षबरि सोहाई गए तुरत गुरु गृह चलि राऊ सनेसु सील सुभा
उ सुचाऊ पगपरि पत्र सुनाइ सोइ कहे उपगे अति प्रीति नाथ तिहारे पद कृपा भयो काज परिहरि रीति सुनिन
प्रसन्न तन सरहि मुनि कहें उ परम सुष पाइ सजहु बरात तहिं बेगि अब फिरेउ भूप सिर नाइ छंद सीमांन व
लाए हरषि तन आए कहेहु कुमहं मम पावै नृप कहयो चैन नते जन कुऔ न नैंज व भरि फिरि निहि आवें सब सुन
हुं भवी ने नित हिं न वी ने अभरं न पट गज वाजी अति आदर दीजे सारी कीजै करि कलन प्रजे नराजी दोहा॥
फिरे ते सांसं न सुनि सप दि पुरष वर भर भांति ग्रेह रजत नृप रनि वास मधि नीदन रामसनेह २२९ भोर भए व हु
भजेन गारे महिप मुदित महि दे वुलं कारे दियेदान वहु विधि सनमांनी चले देत आसिष वर वांनी विविध
निछावरि रानिनि कीनी वरनन सब जस जोंच कंनलीनी लसे पहिरि पट अभरं न नाना तिहुं पर मुर मंगल
करगांना जद्यपि अवधि अवध सुष सोभा रहु जहं दिगपालन मन लोभा तदपि भीति वस पुरनर नारी मं
गलमय ग्रह गली संझारी चांमर धुज पताक पर छाई चित्र विचित्र वजार वनाई तोरन कनक कलस मनि मा

बाल
६४

नृपसुत लुषि पाई ॥ आनंद नैन नई छबि छाई ॥ प्रीति मीति नृप चीन्ही बांची परम प्रीति सब के उर मांची
सोरठा कहहिं सबै अति चैन कस न होइ संबंध अस गाधिसुवन नृप ऐन तिमि परस्पर मिलै न
पति दोहा ॥ ऐसा तुज भरन सुनि पुलके षवरि बिसेषि ललेउ सभा नृप मोद आनि भरत प्रीति जिग
नि देखि २१ चौपाई बूझेउ नृप हूंन नवैठाई तुम निज हृदय देखे हो उ भाई जबते कौशिक संग गति
धाए न तबते समाचार सेपाए आइ परम प्रिय पत्र लषा सो को तुम संमझ जां चहुं मन भाषा कहे
उं जन कहि मिथिल नि कहुं चीन्हें परिचारक हुं संग नहिं लीन्हें जिन पुन्य चे भो मंगल न हउं तिन
की कुसल जनाय किमि कहहुं जदपि आप सब अभिमत दायक पेली बो अति हित चपला
पक मम कुमार किमि दुरहिं दुराये रवि हुं मासि हुं कहुं छप पहिं छपाए सीय स्वयंवर मुनि बारस
ग राम लषन मधि किय धनु भंगा सोरठा भई भक्त भर गुनाह सुनत आइ किय कोप वहुं प
रषि प्रभाउ अथांह दे निज धनु तुन पकहं गए निरषत नृप न अघात विस्व विमोहन बंधु दोउ
ज्ञाना विराग भुलान नयन नि उर भरि रहत छवि २२० चौपाई सुनि दसरथ दूत नमि पयो नी हात
दिवाशो वहुं सनमानी गए भरत भीतर लेपाती पुलकित प्रेम प्रफुल्लित छाती नहं सव राति न

६४

रठा कहहिं हिजिनहिं जनु जोहिं जोहहनहारेजदपिजग पैप्रहनिहिचितनहोइ नकेहरिएहिंनहिपेतुरिन न
नरूपेकहइनमाहिं लेतेअवासिमसन्नहे होतेकेरूनाहिं षगवाहनपुहुमीमथित दोहा भरतनहिं आदिक
नृपकुंअरसाजिसजिजुनहथिआरु चढ़िचढ़िफेरतविविधिविधिगतिनकनकजंजीर छंद गटकानि छह
रिछनछविछाजहीं नवकंपितदंतिसुकुंभवहुरंगचित्रसुरधनुभ्राजहीं रवषंदषंरिनमोरपिकमिलिमु
दितकलधुनिसाजहीं सोरठा सिरीअमारीफूल कलितकरनकंगाभरन तकिसुरपतिवितभल चटेजद
पिएएइंतो जिनसरूपअनरूप वमोनविप्रनवसकुचिविधि मांथेएकअनूप रचिगंननाथेसिरकिपी
२२४ चौपाई सजिसजिसुरसमाजमनमोहैं चढ़िनृपगनरथवंसिहुंसोहे साजेरथपताकफहराने सरद
जलदआभाअपमाने किंकिनिधुनिकलहंसलजाने नजिकलरववचनज्ञोरउजाने विलसेहैंसारथिनसं
वारे मतोंमनिनमपअभरनधारे जोरतजेहिंसहसासहदीठी परेपेखिमनिपरमनिनीठी कहहिंगतिनत
१ किसुरसषछाए इंनरविहेविधिवादिवनाए निरषिरथनिछविरविसकचाने निजरथसुछविअसमअनि
माने पेनिजकुलदसरथरयजानी भएआवतीरथअभिमानी दोहा प्रथमचशिष्ठहिंआदिमुनिमुदितचढ़ाइस
हीस आपहुंसलिलसुमंतफिरिचढ़ेसुमिरिगनईस वजेनिसाननकीवगंनवोले विरदसुजानि अषरभरवहु

बाल०
६५

ला हरद दूब फल फूल रसाला दोहा कदलि षंभ सोभित सुंदर नहार सुगंध सिचाइ चौकें श्री गजमनिन
मंगल छवि सरसाइ २२२ चौपाई जहँ तहँ विधु बदनी गजगामिनि पिकबयनी मृगदृग द्युति दामिनि ॥
जुथ्य जुथ्य सजि अभरन सारी गावहिं गलगह गीत सुधारी निमि अंबर अपसर करि गाना काषि सब मं
न नृत्य करहिं गति नाना दसरथ सदन मनोहरताई सिरा सुकवि कुल सकै न गाई मंगल द्रवि विविधि जहँ
सोहे मंडप मह मुनि न मन मोहें रामसीय हित गौरि गनेसहि पूजहिं रानि प्रमोद नरेसहि गावहिं व्याह
उछाह समेता निकसहिं प्रविसहिं हरष सिनिकेता कहुँ कहुँ बर बिबुंद धुनि छावहि कहुँ भाट चारन गुन
गावहि दोहा कहुँ आए नृपगन सकल सैन मान नहि न परानि सकै न सेस हुँ समय तेहि प्रेम प्रमोद बषानि
२२३ नृप आयसु लहि आनँद छाए रिउ हैं न हय गज रथ सज ज्ञाए जीन जटित मनि मनि अनेका रसे
ति चित्र जे उरँग एका मरकत मानि भूषित हय नाना काहि सकल हय सुरपति जाना गरुड अनिल न
मगनि अभिमाना करलि न कव हुँ कसहि अनुमाना दापनि वंमि छिति न भक्ति प्रचहहीं फर कहिं जंतु र
विहय षवि हिलसती फरकत अधर वेग अधिकाई कहहिं न निज लघु तेउरलाई जब निरोषरिसि वंदन सो
हाहिं नव तनउठ न फिरन हुँ दुहुँ पाहीं चहुँ दिसि ताकहिं चंचल भावै जनु त्रिभुवन नकि वो अभिलाषै सो

वसंत रितु संग सकल विभु धउरसु षभरें ६० चौपाई नकि वरान महिं विधि छवि छाई हिमी तु अंहंन
दिनसुभ राई सुरगुर इंद्र गुर अज्ञा री न्हों नृपकुल रीति मीति जुग कीन्हों सुमिरि प्रभु हिं गुर पगा सिर
नाई चले सो महीपति अति हरषाई तुरत मंत्र वजीर सहनाई १ नव नूतन पटल संबस मुहाई नभ महिमें
गलगें नर साला वर से सुमन नसुमन निमाला गोंन वाज मनि हुं नि अधिकाई जें नसंभाषेन
जोंनि नजाई तुरंग नरथ निगजेन असवारा कियें नरतम दुगति न प्रकारा चले मत्त गजगर
जि सुहाए रितु पाउस आभा अपनाए सो० भरता दिक कुंवरन सुछकि कहीं न जांहिं कवि पां
हिं जे हिल षि सुर ललनानि को होत रांष मन नांहिं २३८ चौपाई होंहि मंजु मगल गन सुहाए ॥
चल समीर सौरभ अति छाए नचत जांहि नृत्य कगति नाना छाजति दिसनि सरस सुर तांना नट
सुविदूषक पाप्रक जानीं करत जांहि लीला वृंभांती सरित नुकूल पथ बौस अनूपा विरचाए
वन मंपम हिंरूपा जहं नहं होइ अवधि पनिवासू अवध अधिक सब भोग विलासू मुदित वरात न
गर निपरानी चलि चारन न त वषवरि वषानी सनेस वनि वाजन सम मुहाई छाई नगर वरात अवाई
जनक राज अनुसासन पाई लछमी निधि अगवानि सजाई छंद रवि कुल पर चिवारे तुरंग सवारे ल

भई

दिसि मत्ता भीर छवि बिधानि ३५ चौपाई चढ़ि सिविका हि सुवाहन नाना लसे सकल सेवक हुम धाना वंदी मा
गध सुत न सुजांना जया जोग चढ़ि किय पजसगांना गजन निसांन जराउ फहरे घन पजे जुत तडिता धिरय
हरें ध्वज छांह रविपरहिं न देखी चढ़ें रनि स्व जनु मुख नि विसेषी सगय गंनगाप्रकनसुनाए निमिगंग
नेहु गंध रव गंनगार डहुं दिसि जे बाजने भ्री दधि अक्षत लावनि मरि पुरी बरसहि सुमन नेनि सुर नर
नारी सजे आरती मनि मय धारी गांवहि मंगल मंजुल बांनी महा मोद नहिं जाइ बषांनी दोहा विविध

वसन

रतन अभरन बासन वस्तु भंडार रथ भंन अंटन वेसरन लिय कोटि न सुकहार सजि पोसाक वर विर
द निज वेट भज रुं समुदाइ आनि उनकं हि न लोग सव कवदर सिय दोउ भाइ सोरठा पच्चर गन सुब
लीन लसे सजे बहु बन कसे अस्व सत्त परवीन चले सुतारे न आगेही २४६ छंद मृदुम्मिलीज न ल
केन कारि नस्वा सापर सिव सन निसारभै चलि करत तित्रि विधि वयारि सम सरि सुगंध छा बनि छति
नभै बहुबरन वे रथ धुज पता का सुन रुजुत मित से लजे मध कारनि धुंनि समरथ निकिंकिनि नुरि
नि पेज निया वजे जुनहरिन मन निहयं कन कल गिन मंजु वार निछविवसै गज फूल ऋंप मा ऐनिउ
डुपित लनि न कि सकु केल से वंदीन की वपिकादि षगगांन सदिन मनकल वर कौरें कहि हिं इ भिवरात

किय नजरि तिनाल पसमेमन पम्प सोरठ चले लिवाइ वएन फिरिजँन त्रासे जोरिकर चले उरा
उरखान वकस तन्व हुँ दिसि गुनि नगन २४० चौपाई दिषो जाइ जँनत्रास सो हाँवन आनि विषि
त्र छबि मयश्रुति पावँन मंडिउ त्रमहि चाँमी करचारु मनिमह लनि अनुहर त उगारु चहुँदिसिफ
टिकदत्नाँनैनीकी निजदुतिकराहिं चाँदनि हु फीकी रचित्र तरत नबहुँ बगलाँवँने हंसहिं जेरवि
करकलस निबँने रतन बसंत बुर असन निपूरे चित्रित सदण चौपरा रुरे गजत्रा जीऊटन
के साले चहुँ कितन बहु बिधि बने बिसाले बापी कूप सरी बर सोहें विरचित मनि नषाट मुनि
मोहैं रुचीं विकासि कल कमलनि पाँतीं गुंजहिं अलिकुल जेहिं षगजाती दोहा सुधा स्वाद फ
ल द्रुम विविध फुल वारि प्रनि यो न दि वि पर सु बल वि सुल भजँन करहिं बिदेरु बघाँन कहँहि रे बुढ
हुँ त्रार यह विलिनै वि वि धि वनाउ इँन सीता महिमा अगम उ न पुँ निरामय भाउ अवधराजजँन
त्राँस सुनिउ न कंठि तदुरुं भाँइ लैगबने कौशिक मुदित सुमिरत सील सुभाइ २४१ चौपाई॥
चहुँदिसि रिषि सिसिनि कार पधारे माधि मनि मनहुँ तपे जनु धारे अवधराज कर जन्म सुभाऊ जा

न

दुहु दिसि गुनि न किछ जस गांना बाजे आति ग ह गहे निसांना दोहा लषहिं लोग रघुनंदहिं जुत अ
दभुन आनंद जें अब कोर चाहं सिंधु धंन सरद पर व कोचंद मधिव राजन वकस जविविधि नृपदस
दि रथ सुष धांम बिलसत मकुलित कल पतह मन हुंकाम आराम सोरठा जानि सुसम मविदेहं सु
जें नसमिवं गुरत्ता तिजुत आएस नेस नेह मंजु मनोरथ कलित उर छंद राजहिं बिलोकिन
कीव पति जो रवि रह वोलो सुषवहैं सोइ अवध पति नकीउ ठेपलकित धरत पग पांउ डिमहैं
उनि सकल संमसंमधी परस पर मिलत अति आनंद लहैं जैधंन्य जे जै धंन्य दुहुं दिसि देषि सु
रनर मुनि कहैं दोहा गुर वाशिष्ट मुनि वरन नपन विधिव्रत मिलि मिथिलेश उरलंगाइ कुंवरन
छकित वे वैदिग अवधेस चौपाई लाषि अनुपंम होउ राज समाजें साजित समाज सुरेस कुंला
जै सनानंद नहिं विनै व डाई कि प्रकहे जनक भाग्य व हुताई विनै विदेहकरत सुषछाए परमक
पा करि मो गृह आए संनिवाशिष्टकोसुभ आगमन भयो सकल पुर मंगल भवन मोपर कृपा कीन
नृप भूपा भयो सुषदस वें धभ नूपा दसरथ बोले सहित सनेहं तुमसं मनु महिं विदित विदेहं नि
मिकुल थी रघुकुल अवतंसा कि पे परसपर विपुल प्रसंसा वैठे घरि कुभोनि सहि होनो पुनि है वि

हिमसंसनु मगमुनिराऊं संगदोउबंधुलसहितुषभीनें निजछविकोरिकोंमछविछीनें षिरिषि
रिलषहिंनउरनारी मुदकोलाहलकौतुकभारी तषोभूपकौशिकमुनिआवत कउरंतस
हितपरमछविछावत भरेप्रेमनृपउलाकिसिधाए सहितसमाजसरीरभुलाए गहेआइको
शिकपगराऊं जहिंतजाइउमगोउरभाउं पुनिभरिअंकसुआशिषदीन्हीं ऊभरलमस्तग
रगदगदकीन्हीं छंद नवलषंनजनहरिसवनिहियहरिपरेपितुपगजाइकें नृपतिएल
लकिलगाइउरअतिमोदसिंधुसमाइकें चलिकरनभरतप्रनामसांनुजलिएप्रभुहिंपलाइ
कैं फिरिलषंनरिपुहंनभरतभेटेरागरंगअनिघाइकें दोहा रघुबंसिनमहिपंनसविबंसषंन
मुपरजेनवृंद मिलेजथाविधिरामभरिसबकुरानआनंद ४२ चौपाई फिरिदोउबंधुगएउ
रुपाहीं लाषिमुनिमएमगनमनमाहीं करनदंडवतलियउठिपलाई प्रेमपुलककरषीकुसलाई
नवसादरशेलेरघुराई अपरमुनिनहेंदनिसिरनाई नायकपाजेनरोहेंअसीके परमकुस
लपदरहहिंविलोके पुनिपुनिलेसंगनृपहिंगजाए मिलिकौशिकवेठेतबछाए रामहुंजुतअवधे
सहिदेषी श्रंगवांनिनिनआनंदविरोषी हरषितुरनकमनमावलिहारी गोव्रहिनवहिंअपसरासारी

प्रसंसन भए दोहा निज मुख निमिकुल बरनि सब भूपहु दिये गुसांइ गिरिजा रघुकुल सुभग सुजन न॰
ऋषी पूछन सांइ विस्वामित्र बशिष्ट संग कहे सबै मुनिराउ दोऊ बंस अनुपम परम अनुपम दोउ नृप॰
भाउ चौपाई कह बशिष्ट नृपबंस कहाई हैहुँ हमैं निज सत्ता सुहाई सो लषि मन कर करहुँ बिवाहू
नृप करहुँ गुरु मुनि परम उछाहू निमिकुल रघुकुल है सगाई रामसीय नो भुजबल पाई गाधिसुतं
न कहें हँसि सष बड़ाई लई सुनाइ नबंस कहाई पुरसं बंध मोर सब कीन्हों लेहौं नहिं इन तोई दीन्हों
सुनत जनक आनंद रस बोरे मुनि सो बोले कर जुग जोरे जस धज जुग कंन्या मुनि लीजै भात शत्रुहन
ब्याह करीजै धंन्य भाग्य निमिकुल मनि भूपा कारहु मागि संबंध अनूपा दोहा नव बशिष्ट मुनि सों कहे
सतानंद सुष छाइ लगन काल की बिधि कुँदि सनार दहाँ पठाइ कह बशिष्ट मुनि उत्तम हैं हरषे दोउ महि
राज नृपहिं प्रसंसन अवधपति आए सहित समाज ४७ चौपाई मुनि सायहिं सब कुँअर न ब्याहू कहि
न जाइ नृप कुल उतसाहू कंस न कर ते दान देवाए करत उचित बिधि कुसध्वज आए सुनत बरात स॰
बेस बितानें कहँ हिस कल पसजें न सुष सानें अनुपम अनुजें नजु नवर देषा रामहिं दसरथ संग जो देषा
निज निज उन्मन पाउ पपारा जनक सुकन न कर कऊँ न बिचारा फिरि तिसरे राम ब्याह बिधि देषी लल बजन

ज

बाल ९९

जनककिपगौनो दोहा दसरथसीलउदारता सुनिरघुवंससमाज मनहिप्रसंसतनिजसदनआए॥
मिथिलाराज ४४ चौपाई आतुरपुनिकुसध्वजहिंबोलाए सैनसहिततेहरषितआए अनुजदोउ
बैठेवरआसन सहितसमाजहिंभरेहुलासन तबदसरथपहंसचिवपठाए जोरिपानिसोजाइ
जनाए सहितसमाजविदेहबुलाए सुनतचलेभूपतिछविछाए मारगजनकनगरनरनारी॥
कहहिंएकसोएकनिहारी भूपसंगहैकुवंरसोहाए जुगलरामलषनजनुआए भूपभाग
सबछविनिसराहैं लषिलषिअनंदउदधिअवगाहैं बीथिनिवेलिनतुरंगनचावत चारौकु
वंरनजुतछविछावत दोहा उतरितुरिनतेजुतसुतनमविसेजनकअगार लषिउठिआसनन्
परिपें उरभरिसुषकोसार ४५ चौपाई सिषपिपुरामतानमनजोई समसरिकहिनसकतकविकोई
ई दसरथसंमजनकारिअंनुमानैं समविदेहकौसलपतिजानैं दसरथसोंबोलेमिथिलेस कहिय
वंसनिजअरुधनेस नृपकहकलगुरुवंसहमारे कहिहैसुहितोचरितप्रकारे सोमुनिकेविदेसुत
कोने भिमिवसिहुंनवदनविहंसाने कहेसोसदकुलजाकोहै सभामध्यसोकहतनजेहै कहहु
शिषरघुकुलअसरीती हमहींभाषिअवंससप्रीती पुनिरविवंससकलकहिगाए सोसुनिजनके

९९

सस्वनिजिनपासितुजनविसनरतिसो नारिअपावँवनिज्ञानतिईपगपरतिसो आमितरननमानिवस
ननिछावरिरुरतिसों लेतिननकिछकिरामसुकनफ्रफरतिसों सोरण सुनतह मंगलहेत दि
येदाँनदसरथद्विजंन सबविसनेरुसमेत पत्नषंनकुवँरनसजे ४९ चौपाई प्रभुनपीनपोसा
रुसोहाई निदरनवदहिनिदुनिभाई विविधिरतनकंकनमनमोहे करसुरतरुपल्लैजंतुसोहैं
अंगदमनिमानिकहीरनके हारउहिपदरजंनभीरनके किरिनिनिरिमनिकाछु छाडे मानहुँजं
समनापबरसाड़ै कुंडलजलजकपोलनिदुनिसोभि बिनअंतअसरहेविसदवनि मनहुँमद
नकेहोउकरकेरे चारुचक्किपश्रबनवमेरे कुलदधिविंदुभालमधिदीन्हे जंनुविधुअंकरोहि।
निहिकीन्हे मतिअंगसुछविरतननयंननसो नषंनहुँनिरषहिसुदमनसो दोहा सौरभ मनिमयं
मंजुअतिराजहिसिरकमनीय सुरनरुकीजनमंजुरीजांचकहिनरमनीय ५० चौपाई रामसुनिनक
हँमोपनजांवहि मकुनमालमिलिचितकहिभाउहि जनमसुसरसिनेदरिषविछाई अमियविंदुवि
पुअवलिलषाई इमिवरागनविनवरसजिसोहे अंगअंगमनिरतिपनिदृगमोहै सजहिवरातीरूपग
पजाना करहिंभारनटविरदवषाना इहांसियहिंअरुवांतनलागी कुलअचारजुततियअनुरागी

का

मफलसकुललखिसेषी पैरवि अदभुत सुछबि लोभाने आगहं नदिनहुं मंद गानि दाने करहिं बिलम अ
वअसहूअपारा कोउ कहैं दिन है थोरै वारा दोहा अबै अरुन सारथि कर मग पो भुलाइ व नाइ चलहिं
मन हिं निज तुरंग सब धरत अमित पथ पाइ सोरठा अंतर पर नत सुमेर होउ मिलि सारथि कर मकें ॥
आवन लगिहि न देर रजनि जात जनिहैं न कोउ ७८ चौपाई इमि तिन न कठिन उर जें न भाए किज मुद
वें सान दल जाए मंगल मय विप्र वासर भएऊ दुहुं दिसि अति उत सव सुख छएउ विविध भांति
के बाजें न बाजे नर नारी कल मंगल साजें जनक नगर ना उनिछ बिछाई नहुं छूहि निज नगा सें आ
ई जे पद हर हिय सर सिज हंसा सुर मुनि जिन की करहिं प्रसंसा भाग्यवती तेउ धोइ ष बारति प
ति पितु कलके पिमर निनारति दसरथ सहित समाज निहारें जो निसम ष सुर सुमन निदारें पुलकि
त अंग म ति अति सुषपागीं म डुन बसुषरि उजार न लागी छंद न लिन सुषी न तु ना उनि न हुं छुक
रति सो जं तु विधुपर क्षत्र नारनि दुष दल दरति सो धों तनि करयुं निकठिन गरु न हिं पडरति सो परसति
स मय बिचारि ना पत्र पनरति सो जाव क जाल विचित्र चरन विधरति सो मनहुं तसी कार जंत्र राग रस
भरति सो सुमिरत जिन सिद्ध हिएं धार अमि दरति सो विनु श्रमल हि मुनि भाग्य हांस अनुहरति सो कर

नरपति देइ मिथिलनि अंगनि प्रभु छबि छकाई गावहिं मंगल सखि सम सुराई करहिं वेद धुनि द्विज वर
बानी सतानंद सुभ अवसर जानी मंगल सगुन सु कलस सजाए चले मुदित मुनि सब बजाए
द्विज समेत बजन जो सरि जाई दिय अवधेस हि सम समजनाई तोरन बाजे बहु सेब निसाना चढे
उरा तीह पग यजा ना सचाए कनतरु कुंवर न पाही बिहसत कहै उमगान मुसमाही छद मुद
मोलक हं ससुरारि की पर रीति आय जो जाइ है निप कौतुक करहिं कहि सुर उपाहि सब हिंसा
इपराइ है इमि सतनन बैठे बंधु चारयो सकुचि तेहि छिन सोहहीं हंसि कहहिं नृप गन चलन तौ सिर
नाइ छिति तिनन सोहहीं सोरठा दसरथ लखि सो भाउ सुख संनिहंसि हरि सौं कह्यो कहहि जो के
छमु निराउ सोई सब मिलि कीजियो ५२ चौपाई गुर बशिष्ठ संग जे उ हो उचित सब काज
करे है सोइ बर बारन चढि वर भ्राजे बजे गरु गहे बहु बिधि बाजे तुरही तरन फेरी भेरी सहना
ई बर बंसि तिन टेरी बीन मृदंग झांझ सुरचंगे डमरु डफ करना लउ नग भई भीर बहु हंदि सि छबि
छाती जनक बरात न जाइ बखानी पीत पोसाक न पहिरि छबीले चले नचाइन तुरंग रंगीले जे
तिन गय पर राम बिराजे उपमा के हि रिहे रि कवि लाजे सो भा सिंधु करनो हि हि मदर मनि औरा बनै छि

बाल
७१

चारिकोनवेदीरसवीसा नामधिसोहसुनाकमनीसा भगिनिनिसहितसमसजेहिंजोई षकितहे
हिंसुरतिषसुदमोई बरसतसमनकाहिंगलगाना भईकराबनअलिअसनाना दोहा विमल
चारिवृंदनश्रवनकेसानिधो रुचिहोति सोमचमजीतेमनहुंछोउहिंकरतिनमोति ५१ चौ॰
गोछेसमिरिहषविदंभिधारी ओपअसितासिरसुतरननारी सुनिवरवसनविवाहहिभूषन
तजेसषिनकहिंवचनपिरषन सहजहिसियअंगआभाषांनी सुजसकुमारिसभगसुष
दानी भूषनदुनिहितभूषितकरहीं सोमगटैताषिचवसुषभरहीं कुसुमकलितकालिवरि
आतिलसै जंजुजमुनाकीवीचिनिहसै अरुनपाटसितसमननिवेनी लसतित्रिगुनमाला
सुरदेनी आजितरामविनजीतनहेतं मगरीजंनुनतपंकषकेतं अंजनमिलितमनहुंच बल
वसिपके अनिजुतसारसिजमरंरानिपिसके दोहा मंगलसंषवजैवलितविलसहिंवांहुदि
नाल मनहुंमृदुलनाशिवनहिंसेवृतमंजुमनाल सोरठा रहेसोचरतुसोताई आतिवि
चित्रजाबकरचित भोरमांतुकरबाई किषआलिंगनकमलजंतु ५२ चौपाई तषिकरिपवि
सिंगारसकतोरी परमसुरुवकैमदनवतोरी परजोतिहुंसुजुवतिवनावै सोउअंनिकिमिसिसषर

अनुजंननजुनवरखेबहिरेषी उंनिउंनिउलकेसंगुविशेषी पुंनिनवगोंनमाधिमहिपंहिदेखो धरेसही
रसुबहिंसमलेषो निसानादिसोजनविधिनाना जनसंभारवनगापंनगोंना हयगयरथनचक्कुषं
निभारी डुंडुभिसंबध्वनिनिनभारी खपसरगंधरबगोंनअनूपें सुरनिवरातमसंसबभएपे
सिन्नभिन्ननरिजदषिजनाई पैसबकवंपरमानंदहाई जोरुनहितनियचढीअंटारी आं
नंदमेसबबवारिविसारी कोऊकेशअधगूंथनधांई फूलनझरतपरमछविछाई धंद न
रिकुसुमतिनकेकंचननेछितिपरतअनिछविपांवहीं जंनुखोमनेहरिआहनिरषनअबुं
निउउगोंनआंवहीं कोउएककहींपगदिएजावकुरामज्जोदनकोचली कोउएककहीं दृगदिएअंजु
नअटनपटलागीभली रहा बिनहिंकसेकोउकंचुकीचढीरसहितधाइ छतिउनकोंढिनको
उचकींबांधिकिंकिनीपांउ ५५ चौपाई पुनिविधिअतिआतुरताकीन्हें राजकिसोरंनमंडंमनहीं
नें गाषहिलालीभरोखनलागी ननाहिंविसारिमनहिंअनुरागी लगीकहनलषिबनकबराता
लषिमनजुनरोउहगजलजाता नकतएकसोभरिछकिजांहीं मोनीलाआसहिनमांही ऊतुम

उरसुंदर छंद सोउचलकैं नलिसिंमने हिगपदहिं मुकविउपमाकिमिकरैं सजित्रसंनभरबंजनसोमनला
उनचौरकारिज्ञानेंदभरे नटनाटनागधमूननंदीसुजसबिविधिवुबोंनदी मानेंदमूसुरबंदमंगल
वेदधुनिकुलगांवहीं दोहा हरखेदेषिवरानवांकखेप्रमनमुरेंढ मंडितमलिपनमधिमहांदसर
पमहीमंहेंद्र बजलिनिसाननकीषगेनबोलहिंविरलसुवानिपुरषसबहुंदिसिमहांमंगलघ
विसरसालि ॥४॥ आएलषनयाहआनिचाऊ लहिरहिबिधिवासवुगनराऊ जुरिसवदेवदिगीम
सुजाना जोरिजनकपुरमीतिअमाना पकेअलौकिकारचनादेषी नरनारिनघविमुहनि
धिलेषी पुंनिमंडपहिशिवलोकेपजाई विरचितमहांमनिनसमुदाई अस्तकिचित्रविचित्रब
नाए सिधिहुनिपुनजालपुठरुराए चकितकहंहिसवनपनलजाई देषियमुनियनअसकाचि
राई जरुसिवप्रहतिपमहिमाभारी नहिअवरजघविभवंननिहारी तुमसबदेववहुअहहुसया
ने जोनिहैंभिकनहोहुअमाने दोहा अमकहिवलेमहेसप्रभुनिआवतलषीवराज सहितसमा
जपकेपलकिपेषिरमवरगान ॥ चौपाई साउजनतनुनगरवेषकिदेषी ॥ १० ॥ रामरामराम ॥

अथाननमुखछबिलुभाने लोकपालइसथानेकहहीं बिषमदृष्टिगौतमहँअहई श्रापोसहजनदियस
रकाँहीं हेमसंचअपराधहिंमांरी पहिंबिधिनिपनमुरनकीबानी सुननजातप्रभुअतिसुखदानी॥
पुरबिचित्रनानाछबिनरनारी निरषिबरातनिनपसुषभारी बजहिंबाजनेधुंनिनभरी न्पसमा
जदुरूपबलभलभरी दूलहआँनदकंदहिंदेषी पगेप्रेमजैनकछकेबिसेषी सोरठा नरुचसबंदेहनेहें
इ जिमिहरिचंदनकेनिकट नरनारिसबकोइ निमिसुदमयरचहुंदिसिभए ५९ चौपाई भएउज
दपिबासरसुरसोना बिबिधिप्रकासनिहिंनिसमाना पहुचीद्वारबरातसुहाई कियजपधुंनिसुरस
मनछाई घारउनममहिंमंगलगांना सुरकोलाहलकौतुकनाना किएबेदधुंनिभूसुरभूरी॥
दधिदूपसतलावनमहिंश्री चलिनपनिजकरकुँवरउतारे फिरिलेचारुचौकबैठारे जनकरा
जअनुपमसबभीने कनकसगौरपरजेननहँकीने द्वारचारसुचिबिबिधिबनकीन्हे हयगयआभूष
पटमनिरीन्हें लाछिमीनिधिऔरिकुबेरनभेदयो मनहुंरंकनिधिनिकारसमेदयो दोहा उठनबरनज
गसकरैफिरनबरातबिचारि सतानंदसानंदसोइकहेउबशिष्टनिहारि जाहिंअपरजेनरिषिनम
षराजनलैअवधेस जुनकुँवरनसातिनकरहिंमानिमंउपहिप्रवेस २६० चौपाई मुनिसुबिचित्रपाल

सु

सुमननि झरि लाई । गांन निसांन धुनि न अधिकाई ॥ बचन पास पर जांनि न जाई । पहि बिधि सब हिं मंडप
हि आंनी ॥ दिय आसंन जनक कहि निज पांनी ॥ लहि सांसन गुर पद सिर नाई । बैठे बर आसंन सब भाई ॥ दोहा ॥
मुनि जेंवरा जनक जानि जन जप्या जोग बैठाइ ॥ फिरे निज जोग सिषा संन हि बैठे कोसल राइ ॥ छंद ॥ बैठे सभा
जनमे न दसरथ जनक जनव अति प्रीति नितसो ॥ कौसिक बशिष्ठ हि पूजि पूजे उ वांमदेव सो रीति नितसो ॥ ललित
बरिबीस असीस नृप गंन जानि जुन अवधेस को ॥ सरबत ब्राषा तन न राउ सब बिधि किए भांउर मेस को ॥
बिधि संभु बास बधन दधर महं सकल सुर आवत भए ॥ नहिं लषन चीन्ह न तिन्ह हिं को उ नहं हूंडि सुष सा
गर गए ॥ दिपसब हि मसमान सहि आसंन सबै सील सराहहीं ॥ कहि राम संम न हि को उ मानइ उर धि
आनंद पांहहीं ॥ दोहा ॥ नियरानी सुभ लगन अब करैं न को उ ठरि ॥ सतानंद आदिक बचन नैन न जांन
हरि हेरि ॥ छकि न बराती लष हिं सब सुष बिबिधि बिचित्र बिनांन ॥ कर हिं परसपर मुदित अति नृपसंन मा
न बषांन ॥ ६१ ॥ चौपाई ॥ गांव हिं गीत समय सुषकारी ॥ सुंदरि सुघरि सुवासिनि सारी ॥ सहसा उठि नहं जे
न कमल दीपा ॥ कहेउ मिलहु उठि रघुकुल दीपा ॥ दिपे राम अरु भगर जो आवत ॥ मिलन भूप जे उ दुहुं नमि
लावत ॥ दै अरघ हिं फिरि आंनंद भाजन ॥ आसन सराहत देत नृप लाजन ॥ दिसो पाघ पुनि जनक सुजांना ॥ गु

छिनमा नहीं बरनत दास परछन करत कौसी ली ऊ जहि गरु गरौ राजन नाना अमित अनंद न जाइ बषांना मं
गल साजु साजि सब रानी गईं नीमधि बनि जनम छबि षांनी जिनहि जो हि दसरथ सब पागे ऊटे उ
ब गज कहं अनुरागे आगि नि जिरति धोरमा भवानी जुन सरस्वति रुरुप बहु ठांनी अंगौई कापे
रप गृहनाना परअभरन जिन अंग गति गांना सबै अलौकिक असंसय नाहीं सुषमा सिपरम प
कासनि माहीं कलस दीप फल मलितल षांहीं दसरथ छबि जिन कहि जाइ मिजांहीं संद रदसकि
दामिनि रूपरति मद निदरी आंमि निसो हहीं चलि लगी परिछन बरन छबि छकि गांन मुनि मन मो
हहीं सिय मातु हरषी निरषि सुषमा अति अलौकिक राम की सो सुष हिं कहि सकहिं कवि किमि
कहि ट जिमति विधि राम की सोरठा जो निसमय सुष छाइ सुमन माल बरसहिं बिबुध मंगल गी
त नि गाइ नचहि उरबसी आदि तिय वेद बिहित कुल रीति करत अघांहि न मगन नयनि नेगचार अति प्री
ति करि नागरि लाइ हि गहरु ६१ चौपाई कै आरती वसि निमनि ज्ञारहि मोद मगन मन तन न सम्हारहि क
रि परछनि मंडपहि सिधाई करत गान जुत सषिन सुहाई नव विदेह कुसध्वज अनि चांउ चले लेवाइ मंडं
पहि राउ सहित समाज बरन करि आगे पाउ उ अरघ देत अनुरागे उ चाहि सांति विप्र सब हाई निरषहिं

न

६४

लिपे लसहिं नपनिकर लखि ओसा देहिं अगार सोरठा दहुँ दिसि रोउ रिषि राइ चारक राबहिं नहं सखि
धि संबनि सां नवजार सुर नर मुनि जपजप करहिं दोहा सहित सुनैना जनक पंनि कुसजल सिय
आनं कर लीन तेहिं छनं उदधि को भसा मरप मन मीन ६४ तोतिका सुनि नेह जनक सुजांन सुनि
सो बिहं सि मुदबांनी भनी अवदेह सां सनहं सहिं मुनि तेहिं समय की सो भाषनी गुरदियो सांसन
लि पोह रिसियसां नि ते वर करलसै जंजलं लित उतपलजुगल मिलि सिंगार रतनाकर खसै दो०
जेहिं जनक सोछबि परम लहयों सुसबसार उरखहिं सुरसुंदर सुमन सुषति हुं सुदंन अपार सोरठा
नु गे पषार न पांउ उलकि नरांनी राउ पंनि सो सनेह सब भांउ सकै न कहि आनंन सहस ६५
चौपाई दोउउ परोहित स्नो रों रिषि मुनि पांपी अगिनि भवांहन करि पंनि द्विज बपवेद बिमांन बि
एजें पढहिं पितामह अनि सबसाजे सुर सब मगर लेहिं तहं रजा कहहिं दीष असाा मन रजा
इगिनि धूम लगि सिय मुषमां री पहिविधि लहेउ बहुन सुषमाहि चषअंजन कपोल कस्तूरी अ
बन नील कमल निरुचि रुरी तुगिल नाट अलकं न सम भासो आलिन अति आनंद बढायो परसिप
रसपर सांनि कभाग भरवहं हि दिरो उनि नहि छपा वा बेदमंत्र किमि मगर सुनावहि असतंम हिंदु मि

निनवीनगंगासुषमांना सिर धरि मुनि सिष सकल परिवारा जाइ न बरनि अनंद अपारा दोउ कुल गुर सब द्वि
जन्ह कारइ ढाहिं करि कुमहींवर अनि मुषपांवडि सुनिय सिसमय परोहितबांनी रमा उमां सारद इंद्रानी
दीपहा जुत रानि आदि कमिलि अलिनि दिपजनाइ रनिवांस सविधिक राइस रीतिसब अदभुतमपरी
ठुलास भगानिन जुन करि माधिसिपसहित सषिनसुषदानि चलील्याइ मनि मंडपहिं कारनगां

चौ० नकलगांनि दइ सोल सभाय सिसिय मषिमाहिं जाइ न बरनि सो छबि कबि पांहीं एक बुधन आ
वतनन पपेषी जुन समाज सब सनेउ अविसेषी लषि बर उरनि छवी सो मुदभारी कि पमनामसवहि
प्रहषकारी बरषहिं सुर गंन सुमन सुहाए उचरहिं बेद बिप्र धुनि लाए बजहिं सु पटह संष समुह
ई सुर कोलाहल लकहिं पुन सिराई एहि बिधि मधि मंडप सिय आई लिपविदेह आगेहिं वैठाई॥
नव दोउ कुल गुर मुनि मुद छाए गनपति गौर सुविप्र पुजाए दिपमधप रकजन कहरषाना विहं
सीसषिदपतिहरषाना धंर मंगल निधांन निहारि हरि अंग अली मुद पै [illegible] निधिपरी जनहु
पटतुलहि छविछकि कराहिं आरति नागरीं पट रतनन भूषन केनि छावरी मुदित जोगिन देखहीं लै
नाइनी फलगांन मंगल गइज जम को फल लेबुढहीं देहा सिवक मंगल दस विभरे को पंनयार लिए

रु असंन अर्थे सोइ ध्यार बासंन बसन बिचित्र मनि अरपे नृप अति प्यार बहु बिधि भूषन भू-
षि रथ ९७ चौपाई मयप परम पटर नगो नाना दिप अंग चर अनुचरी प्रधाना अरपे उ बहु बिध
अनुंपम दाना लिय समुद्द सरय दिप मन मांना राम सीय अद भुत छबि धारी छकि न सुन पने
रही निहारी बर डलहि हि निवर आसंन सोहैं मंगल मय अभरंन मन मोहै रोऊ सुनि ज्ञर अनुसा-
संन पाई सादर अगिनि प्रद छिन लाई करन होम द पति अति भाए लावन की लावन्य वढाए
रूपल्ल ब्रप्रस्तन है मानो न रत नर ततव नै अनुमांनो देव हत दुजि द हनुहु मांहीं पहि बिधि
लहेउ ललिज उपमांहीं छंद फिरि दिन भांवरि षम मनि प्रति विव परहि सो हाइ कैं जनु बकु
नत नधी राम यहि मिस सिरा सकि पसिय पाइकै बैठारि सिंघासन मनोहर फेरि अभिषेक न भए
आसीन दूलह दुलहि देषहिं मोद सो सुर मुनि छए पाषान सम जे कहि हो इथिर जु न मंत्र बलन धराइ
पे असमस ता नंद हि कहन्त हरिहि पुगुन नन जो सोइ गाइए पाषान पेरन रूप चलत सियप सुमन ज्ञाव
हुंन चलत हैं मोहि जो निनिरदै मृदुल पद मुनि सिलि धरा बनक सजहिं सोरठ अर परि सिलप
र राम नापरासि रूप गघर नि मै प्रीति सो अति अभिराम लषि अलि अवली प्रषसनी ९९ चौ०

गरनभ सुरगंनसुमननिझरि देषहिंदंपतिमुदितअति करनसुमंगलगांन लहिकुलगुरआस
रुअली वरकोहवरअसथान गईल्याइवरवधुंनउनि ७० चौपाई नरनारपरानहंकुलदेवा
तिनप्रतिजंनकुकरहिंसुचिसेवा तिनकहंकुवरसवहिंसिरनाई बैठेमनिआसंनछविछाई
लषहिंवरनसुरतियतिपमिली चीन्हहिजाइवषानी हासविलासरहसवसरंनी करहि ११८
रीतिकुलसषीसयांनी गांवहिंगीतसमयसुषकारी नागरिनगरसुवासिनिसारी केआरती
निछावरिदेहीं उनिमनअंगमअनंदहिंलेहीं कोउदंपतिलहकौरिषवांवहि कोउकल
कंठनिगारिनिगांवहि सोरठा लछिमीनिधिकीनारि सिद्धिनामपरसिद्धछवि छाकीरह
मनिहारि सषीसलिलतठाढीभई ७१ चौपाई छोरपीतपटकरगहिबोली तुममोमंनरस
ईअनमोली पलटोहमहिदेहुरघुराई करवीरीदेअतिमुदछाई थकिथकिरहतिसुनतजिछवि
भारी हंसिहंसिकहतिसुरसविअनुसारी देसोनाहिंतोसिपनपढैलो तुमहिसववसकरिरनहिंव
नेहो सिद्धिवचनसुनिसुनितिपरुसी प्रेमअनरसववसहैसववलसी हंसिवोलेतवरामसुजाना
परमहंसजंनकल्हिजगजाना तिनकेघरविसिसिद्धिनहिचहिए हंमभोगीसिद्धिहिंनिरवहिए ॥ ४

नेग जो हि नहि पाए मनि नकरोर नथार नल्याए करत गांन प्रमुदित पुर नारी सम धिहि सुष रिसुनावहिं
गारी छंद गांइ हिं गारी परस्पर नारी श्रुति प्यारी सुष कारी कहहिं नपनि दसरथ अति राता थि गिहिं दई कु
मारी भाग न लरों भूप न्न यरानी बापषी रसुनजा वै नहिं अवर जजिन के कुल गुर पितु षि नाम हि हिंकर
वावे (नहि अवर जजिन के) कुल की कीरे वडाई करे लगि सुनि ये जेहिं व सुवंसी विश्वामित्र छत्रि ब्रां
ह्न न करले नि लहिं प्रसंसी कौन मित्र धौं पाइ सुमित्रा नाम सु मिली नो जेंन नी अवधनृपन कीन पभल त्रा
नाम अवधपति की नो धरम सेत अनिराम हिं सुनि यत याही जनक कुमारी कुंवरि दुतिय उरमिल फुल
ष न लिय उ चिनै उर अवधारी सो हजस वै भरन रिपुदवंन हिं जंनन निं नतें अनुमानी भरत मातु तौ देषत
देव न लिय पविय वरम्हदु वानी गारी देहिं न रामपि यारे व्रजहिं कछु वमै पै तुमहिं जंनक समधी के जाए
तु निसैनि अवरज छै से यह संजोग कव भयो अंदेसो जोनी हाइ नी गेए नत रुधाव नो पठेवेगि ठीमां सों प्र
छि मगैये दोहा पिनरंन देवं न देप्रथम कै पंनि पं चगरास लगे करन जो नार सव प्रमुदित हास विलास ७४
चौपाई अति रुचिर घुवंसी निमिवंसी किए असंन सव रसां द्मसंसी आनंद सों उठि अंचवन कीन्हा जंनक उ
गंधिन वीरन दीन्हा विदा भए जंनवासहिं आए दसरथ जुन सोई सुन भाए तेहिं निसि सुष सो जंनद दुंजोरा दो

जातें नु महि अचित नउ धारी ॥ अब सिअ बधहीं मुदित सिधारी सोरठा सुनि हुलसे सब चारि बंधे
नबरनन सम उ सब नष सिष रूप निहारि छन छन बारहिं बसन मनि ७२ चौपाई बंदी मागध
सूतन प्रबीना मुदित भाट नट करहिं बषाना सुर नर मुनि देइ असीसा मुद कौतुक भनि सकहि न सव
अहीसा चलि कुसध्वज कहं भेजेउ जाए नृप पठए जे जनवांस सम्हारा पउ पांवडे सजे बरासी ॥
भई बार अवधेस अवांनी गुर बशिष्ट कौशिक कहिउ तंई तब नृप रघुबंसिन्ह हि बुलाई अ
ति सनेह सनमांन बहोरी गेले ग्राइ सम बिधि कर जोरी कोहवर नो फिरि कुअंर बोलाई जे
न केंहि पांइ धोइ सुबधाए रिषिन्ह निपग जप बारि अति चाऊं जे महि उचित आसंन दिय तउ
लोका हिम मनि कंचन पात्र पुनि सुरा भित सलिल भराइ सूपकार परसन लगे बिंजन बिदिहनि
ताइ ७३ चौपाई अन्न रचित बहु भांति सिकाए परम मनोहर मीन प्रकारा चुर बल रुचिका
रक बहुभांती सालुन न तरकारी बहुजाती कन दधि दूध बिरचि बिधि नाना परसे बहु प्रकार पकवां
ना पाय सम सर बुन स्वाद अमी के बहु बिधि मेवा मंजु मरीके लषन अमल अति मृदुल मिठा
ई पउ सांई स्वध हिं बनि आई चटनी चारु अचार अनोषे षटरस भोजन चोबिधि बोषे भांति अ

जसकछुसमयबिहितत्यौहार पाहिओसर राजिनबोलवायो अतिमुदकौमिथिलेसपठायो परिहांसहि
उनकेहितनारी औरकाजकीसुरतिबिसारी पंद बिसराइसबकारजहिंचतुरैहांसमोहिनजेहिंजेनमें न
हिं चलनहीछबिबिजनहरषितमैंनहैंअतिचैनमें तिनसैनसरनमुधारिरचनाबचनवागुरिलाइकैं ॥
औरौंअनेगबिलाससबसकारसमयसुंदरिपारकैं सोरठा परगरेचितननप्राइ तिपवेषहिंकैषेरिजहं ॥
करपरसैंरजुलाइ हरिमनहरिनहिंकसतमन दोहा हंसनिछरनिजंनुजोनमैंचित्रऔनशृंगार ॥
चकिनैइंबनेहिंसरनवरमशिशेचषसुषसार ७६ चौपाई दैठैवरआसंनसवभाई लषिअलिअवली
रहींलोभाई कोउकहैपेजगरीतिअपानहिं बनवासीमुनिसिसुसंगजानहिं इनकोमैंवेबहारसिषा
ऊं पैंनहिंसवकहुमगरसनाऊं कलकपोलपरसंनकीआसा श्रुतिलगिसुषलहिंकिसपरिहांसा म
निभीतिनमनिबिबलषाई करुसोरुषोहेजुनचतुराई तुमहिगएबनकुवरसिधारे सवसब्रौसिनिलि
बाहिंलेआए नेयेबडीलषकुरघुनंदन भेटहुइनहिंकारहुपदवंदन नरबहंसनिनहंकुंरसरिपाइ छं:
र सोकामकुंटहिंबांनजंजश्रुतिराहुहैंगोलरिहिस तेहिंसरहिंसोचलचितनहिंइवहंसिकहसोचतुराइहिं
लिए जोहोहिंतेपहोहिंपैजगरीतनभेटहिंकीसकी असकहिंपमारतनाहिकरसेंगईलठिनेहंहितकी सो॰

उआतु निपअसुनि किशोरा तजे निसां नछुप्रउ अति चाउ समयप कलेऊ भयउ तुलाउ सहित सबंनस
भिभूषंन भले नृपनिदेस लहि कछु रच ले चौकन चारु नचावहिं वाजी गतिन विलोकि रोंहिं नृपराजी ॥
रीझि रीझि उर भरि सुख रासी कहहिं प्रसंस सनप टुपुर वासी छंद जब करहिं मंडलन वाहिं मंडल रूप जुरंगनि
देषिए जब ठीं धजा वै गमों छिति लीक हं पमप लेषिए अरु लेन वांगनि वांम दाहिनि दुसुष सेहै सजन
हैं नभक न हि सारद सुरुग असकंधके कि हुलजन हैं सोरठा फांदन चंदका रंग नकित किसकुच हिंचकि
नचिन भूषित जरल तुरंग फेरत विलसहि छैलवर दोहा कठहिंगे लजे हिं नेहिं नगर रामहिं अनिमि
निहारि कहहिं एक नैएक छवि छकि नछवीली नारि सवैया अतिराज रहीं पग रीतसि रमैं कलंगी मनिमै
लटकी लसिकैं कलकंचुक सौ विलसौ अंगमै पटका कटि वोंन वंधो कसिकैं सषिमें जो फिरा वहितें निर
षीनिर षा मुष मोरि सो उरसिकैं चितचोर सो राजकिसोर अली मनमो रचो राइ लयो हंसिकैं ७५ चौपाई॥
गीनन मोरी नमो कहिं नारी वोन पांन सुधि सब वै विसारी छके लोग षिरि भिषछ विरेषे जिमि विकोरस सिज
जै निमेषे चलिइ मिग एजनक केधाम सेविन सुचि सेवक अभिराम किय मनाम नहं नृप रिंग जाई चलिति
देरु लिय हि पहिल गाई सीम तंसषि सानुज सुख मांहीं छके विशेषि देह सुधि नाहीं पिरि वैठारि की नसनकार

रहे विविधि विधि निर्गेले करहु उपाउ जेंन नग्नां सबु लाउं करि भोजंन नगर नेउं सँग राउ जोंमिनि जोंमाहि में
सुष छाए गुन समाज दसरथ नृप आए सोरठा समधि हिंसँम सनमानि सब लिउ ताप्रो असैन
हित सकै को प्रकार बषानि निरखन रूप मातिसों पुहंनई ४९ छंद सोनिसि सिसो लौंनिगारि गा \ ब
वनि वाज नेवां जहिं भले सँग सुजन नन प्रकार असें न उठि तहिं पांन जन वासहिं चले गुनरा
ति नृप समधी बड़ाई सुजन तय लन आवन भए तहं रागना चघरी कसु निल षिकु वां सो रुं नकरु गए
भो भोर जागे सबै करि निति कर्म सजि वे बैठनहां (आए बोला इंन सुने न लषि सो निति कर्म सजि वै
ठेनहां) आए बुलाव न रहे न तलछि मीनि धिकुवं रराज हिजहां सोरठा गए जन न कं के धांम बासो
अलवे ले सुषर बैठे करि परनाम नृप घर किति कि वृदन न रहे पो २८० चौपाई रूप सिंधु सब बं
दन निहारी परमानंद मगन नर नारी करहिं परस पर चतुर नरे सगुनि मन सुमन ती की पमन बेस
जो हि कारन आए रघुराई भो संबंध अनूप सुषदाई बाल कदंब विनोद समीती बनै न बरनन मि
लन सुप्रीती पुनि भीतर कहं गे सब भाई चोरन चित मति अंग लुनाई तहं बैठी बहु राज कुमारी ॥
मनहुं मैंन निज मनहिं सँवारी राम हिं दरस विघ किति अति भई हगजल अंग पुलकावलि छई ॥११॥

नवहिंसिरतोलेराम मुनिपदुमनसोहंमलनहिं विद्याअतिअभिराम सोमुनिमयपनजिमिलहुंअव दोहा अ
धिकअंगउरकेछपहिंमोउरपरसहिंपाइ भारलफनकरिहरिहैंपहुमंदेहैंजाइ २४७ चौपाई पुनिसोक
रुपोकछुकछुसकाई मपमहिंधरलीजैअजमाई कोइकहंछंपाहिंनपुउअपरसें जोंधहिंमनविनुरूप
हिंदरसें मुनिराजनसोंकरुचहिंपढिए नेहिंवलपंनिवलिवाननचढिए इनामिषउकुनिनतेंमनमो
हहिं मुषमसिस्वेदविंदुसुठिसोहहिं रामछोभगुनिमनसिजहरषो मनुसिसिसीकरसुमननिवर
षो कोउसमतांसचवसषोसपांनी वरदीरिनिदैकहमृदुवांनी अवभगिनिहिंकरलिकेंजेहो नानरू
ललाउठननहिंपैहें हरिकरुतोकृपाटरेंलीजै कुवचकंदुकननताइनाकीजे दोहा कोउकरहंवनमरुचा
कपु तुरेकहांलहोपहलाल हरिहंसिकठिलेषननवेलेवचनरसाल विल्लुपत्रत्रतपकदियमिरी
फलपांर छुद्रतचहोचितचतुरईपैसंपंकरुंवसाइ २८ चौपाई मोरिमोरिमुसुहोसिचितचोरहिं उरे
विहंसिरससागरवोरहिं उठेविनोदकलेकुकरएउहिं सरससुरनमिषगारिनिगांवहिं फिरिसाउर
अंचवावनभई मुषवरवीरिनिदेसुवछई सिधिपहंअनुपंमअभरनषाए सांझसमयपनासदन्नसि
षाए पाकिजरहींउरकुवरनिहारी जंनकरांनिननवबरिविसारी फिरिविंनतीरतनअनमोलदिएजे ८०

नपए नीवुरजंनपरिवारु भएउ नेहवसरहेउ नसंभारु विधिहिमनावंहिंपुरनारी फिरिफिरि
वरआवंहिसमुरारी सोरठ कहहिंलषहुंभरिनैन चहहिंचलनसंगअवधपति सवसुषस
षमाऐन नैनआनिथिवंनिरोहिंकव सकलविदाकैसाजु लगेसजंनसाउजजंनक चारु
चतुरपीठाज गेभीनावरभीतिपगि साषिसवभरिहुलास होविराम वरवेषछवि वृहंविधि
हासविलास लपीकरनजुरिजुरिजुवति ८२ छंद कोउहाथलेपिचकारि भरिरंगकेसरि।
डारि भजिजांहिहंसिसुकुमारि नहदेहिहरितकिनारि चषलषंनकज्जललाइ कोउदेइवं
दनधाइ कोउभरतगारिनिगाइ स्विहंनहिदेहिंभिजाइ पुनिअलिनगाहिगहिलाल मु
षमलौमंजुगुलाल हंसिरंमहिंतोहिंतेहिंष्याल मुषलहहिंजेहिजेहिवाल वरपानिपरस
हिंपाइ छकिरहींसषिसमुदाइ उररंगगोरागवनाइ ननरंगहिंलालललचाइ दोहा कोउकहं
रनकेनगरमहुंकुलटनिकोसमुदाइ जिनराष्यो है लरिकनहुं ऐसीकलनिपढाइ सोरठा कु
ल्पौरमसुसकाइ लसनइतनीपटिनसव हंसिहंसाइउरलाइ जनकलरिकैसवकहंगमे ८४ चौ०
एमवचंनआनंदरसभरी गारिदेहिंसुघरिसववरी कोउकनिउनहुंनहदेहीं कोउकहकिहनम

बाल
८१

बैठेसोमनिमयसिंघासन हरषभारपरगारहिकसछंद सोरठा क्रियफिरिबहुसतकार देखीरि
नियसुखिसोरभनि पहिरायेहियहार भरीप्याहकीन्हाहसव ८१ चौपाई पहिअवसरसिधिसहज
सुहाई सषिनसहितचलिमसुदितआई कै आरतीनिछावरिकीनी कहिनजाइजेहिंरसम
निभीनी विविधिउकुनिफिरिसरहजसारी लगीदेंनहंसिरामहिंगारी कुचनाविहगधंनि
धरमाहियेहैं भूसकाहिंलछिमंननकुषुकहेंहैं कोउकहेंसषिएसवेसियेहें सोसुवांसिनि
निकलनिरियेहें कहैरामनवमृदुवसकाना सवयुकठोरनसजनविधाना अवधन
गरमहंनागरनारी इहांविदगधावनितावरहैं सोजागेअवनिकाटनिहारी अपवधहिंला
यकजनकिइनवारी होहा सवैवरातिनवगसिहैं अवसरविदहैंचारी ८२ चौपाई गिरि
सिपरसिपकवांनजेवांवहिं मुदितमुवांसिनिगारिनिगाबहिं फिरिअवबांइसेवीरीनि
दीन्हे कोपितकरकुवंरनवसतकीन्हे अभरनरतनवसंनबहुणाए मागिविदाउंनिपितुपहं
आए भामितमांगिअवनिपपहुंनाई छनसुदकौतुककहिनामिनई जसगायकजससगाउंन
मि लागे सोइनिसीयमहिपमनिजागे तेउकुलगुरतवजनककहलाई चोपौहिनवरातएलेवाई॥ ८१

सरोमकराखुजंततारहिं मडयेजेसहिनीरसहिं कोउनकहइजनकहिजाहिं ९९ चौपाई अनलसमं
न्तनि आहुतिगरई चाहतनवहूं छंनआनंदलहही सोनहिंगुनिमुनिक्रोधहिंकारे काहेनम
सममयहुंउरजरे कोउकहैसमयअवलवलकारी सोतोअवमगटैलषिपरही षयोमवल
जोरसरसरजैं जरनकहुनरसनासपराजै रिषिहुंचतुरपीचारकरपी वधुंनवरनकरदं
नदिवायो सुरभिसवस्तखलंकतनाचा लहीदुंदुंहिसिगुनिनमधांनी भरिजलगजमुकु
ननिभरियारी मधिधरिलगीबेलातेंननारी असतेमहिहोउपंकिपंकिरहही जानिजो
नि भातिलज्जितनकहहीं॥ छंद कहिहहुंनलज्जितनकरनगाहिगहिजुवतिसुघरिबेलातें
हीं मतिविवितकिनकिहोउपरसपरभांवेंअरभुजभांवहीं नहंरामसियसोजानिहारतभी
तिरीतिविलोकिकै रनिवासभयोफुलासरसवसपलकपटलहिराकिकैं दोहा दंपनिकंपितकरकमलस
केनकंकनछोरि गिरहैभीनीस्वेदनहंलीन्हेंसकुचितनोरि फिरिकराइभोजंनमधुरवैठीसिरिसवसासु॥
सीलसकुचवसरामकहैकहेउसुदिनअवआमु छंद नवजानिसमयसनेहवसकहिहिनवचनसुनोंवहीं अ
निमेमवारहिंवाररानीवालकेनिउरलांवहीं मुनिविनयसासप्रवोधिनवरधुवंसमनिहुरेहिगए सियगमन

दिखुनिलेहीं कोऊ निरंजरणारिनिवांनी हंसिहंसिनांहिसुनैहरिवांनी कोउकपोलअंजनहिं
लगाई दुरेहोरिदामिनिछविछाई रामकह्यो निनकेकरपासन रोमरोमअंजनसुखवरस
अंग न जेसबअंगपरसाहिंलहै निनकहंपरमधंन्यहंमकहैं लोचनभरिफिरिसिधिकाजो
रि विनैकरींबहुंप्रभुहिनिहोरी सीताअतिसुकुमारिअसांनी छमबचूकचितनकारि
मोवांनी दोहा जांमेकौनिहुंवातजेलहैनदुषसुकुमारि करवसोईसवभांतितेरामहृदयो
उरधारि ८५ चौपाई सतानंदपहिंसमयपहिंआई चौथीदिनआतुरीकराई सासुनि
नियसिपगद्रुंनेजांनी नजैआसकज्जलसोसांनी लसैविंदुद्वैएकउरजपर विकसि
तकमलनितैंकढिमधुकर जैंनसगंधकेलोभहिंआई बैठेनलिनकालिनसुषपाई गां
वहिंमंगलसमयविचारी जयप्रिसोकसहितसवनारी उनकोंठिनवरसंकिजुट्लहिनि वे
ठेहोंमकराइंनसवहिनि आहुतिअगिनिमांहिजवपरहीं सतानंदमुनितवरिसकरहीं ॥
तोनाकिनिमअसकहिंदुषपाइंहिं चौथीकरमनमुनिकरजांवहिं दोहा फेजोजासिंगालस

ए चले चपल अति चतुर कहारा दोहा सिबिका सुभग बिमान मनि चषत नरे मृगलाइ सोक राहु नें जंतु भजे सि
प मुख ससि हि छपाइ २९ चौपाई बिसकरमा सिबिका सुनि रुरै चक्रि चक्रि भ्रमि भ्रमि हद पबिचारे रति जुत
मदन हिं जी ते उदंपति ल्याय कतिन केर चिबिचित्र अति का कारीगरु कौं मदरु नायो राषि सिय पहि राम हिं सुष
पायो जेहि छबि लोगन मन हरि लेई जेंजु छद भ्रुत रस करुन निदरई तेहिं संग औरौ कर सुष पाला चढी
चली सिय संग बहु बाला बर नव धन जुत आवत देषा मनु दिन दस रथ तजेउ निमेषा फिरि नृप पठई बि
बिधि बिदाई हेम बसन मनि आदिक आई मंषित हय गय रथन जु आए शिषु अवधेस मुनिन मन भाए दो
हा चले बषानन तबिरद उर राषि राम बर बेस पुनि नृप बिबिधि प्रकार सें नमानो बिप्र असेष आरस भौं तु उरा
रनाद सरथ करी न जाइ पुनि असीस कीरति बिसर रहीं दसहु दिसि छाइ ३० चलत बरात नवाजन बाजे ह
रष सिंधु रसि जिन छाजे सुमिरि राउ गं नराउ सिधारे जुत समाज सुभ सगुन निहारे संग सचिव गुरु बंधु
समाजा चले जनक पहुँचावन काजा कहे अवधेस फिरिय मिथिलेस जोरि पानि तब कहेउ नरेस प्रभु
प्रताप सज्जा नि बडाई लहेउ सबै बिधि कौसलराई अस कहि भेपो नेरु चसराउ मिलेउ भूप समधिहि अति
भाउ बहुरि बशिष्ठहि आदि मुनीसा बंदि बिदेह लहौं सु असीसा भेरन बंनिसा नु ज्जार षराई गूढ भाव नृप प्रगासो

बाल
९३

गुनि नरनारि हयगय विहंगमृग व्याकुल भए दोहा लगी मिलैन पुनि सिय पलव निगहि गहि कैठ निरोइ॥
व्याकुल सुता विलोकि बहु सोक सनो सब कोइ ९७ सिय सुषलषि लषि अनि दुष पांवहिं धरि धीरज पि
रिगरहि पुत्र आंवहिं विधि मरजाद कहहिं वड रोई सीनहु कहं दारि सम वकोई गुनि सिय सील सुभाव रहिं
सोचहि सकल कनेकहिं आंसु निमोचहि व्याकुल पुनि पुनि मिलन सनैना कहि विधि रहिहै प्रांन सुता
विन दियजननी गर सषि न छडाई पितु पग परी सिया अकुलाई लायो उर विदेह वैदेही अब किमिर
हैषवरि कहुं केही महां मुनिहु तेहि सोक हि सने भति दृढ रीति निमी ति कीगने दोहा नेहिं अवससर अव
लं नवदंन दरे आंसु अधिकाइ तदपि भई आभाजुनहं भनन सो कवि सकुचाइ राहुलन दोउ उपर केच
भैच पल गति आइ सुधा धार वियवहं न जं जु दरसन विधुसमुदाइ ९८ चौपाई धरि धीरज बोले उपंनिभ

उर

पति करहु ता निज पगु उदमति इष्टदेव अरु प्रिय परिवारो सकल आजु ते राम विचारो सानुज सि
गरी कुंवरी सिय वई नाकि कुवर न पुनि निरनि मति छई रामहिं विदा करत दुष जेनो भएा न सिय पठवन मह
नेतो नि पनि आंसु सो आंगन भरो मनहुं करुनरस देहहि धरो तब लेगई कुंवरि सिविकाजहं भरि हो
परिछन करी मातुनह भई निराश जो सिय हिं चढाई सो विछुरनि वरनी नहि जाई मंदिन मनिन छांडाइ बोल

९३

।छंद मानीसुप्रेमगनेसगिरिजहिंदेउद्विजसज्जनभई संगसषिनगहगहगीतगावतिसजहिंमंगलछ
बिछई बरबाजिगजरथसाजिदसरथमोदकरपुरजेंनभले करिगांनमंगलकलसआगेलेनअगवा
नीचले सोरठा आनंदउदधिअनूप लषिहरिसुषविधुवढतभो कचनकोलाहलरूप हंसनिछटेबी
चिनिनिकर दोहा पुलकितनमनहिंमनचामकरिहेमहीरमनिचीर वारिआरतीकियसबनिरेषि
बिलोचननीर ९२ चौपाई प्रमुदितकुलगुरपाइनिदेसा किपरछकुलमनिपुराहिंप्रवेसा बिविध
गहगहेबाजेंनबाजें जुतसमाजअवधेसबिराजे बंदीमागधसूतसुजांना करहिंभाटनटसजनस
षांना चढीअटानिसंजावरेंनदरसहिं करतआरतीकुसमनिवरसहिं डलहिंनिदेषेंनकौत
नवली उनरहिंचढींअंटारिनलली बरसनसुमनसकुलसुरदेषें सिषसषापाइअनूपंम
लेषें चकितइद्रचषअनिललचानें रहेवंसमध्यहिंसुषसांने अवहुंभरिधनुव्याजबनावै बनेन
नवपाथितनाइनसावै दोहा चूडेबडेमोतीनकीलषि सोमालरिदेषि कहहिंविछधविधिसाहि
हिनबिरचेनषतविसेषि ९३ चौपाई अतिनीकेसपहिमांहलगाए जेविरंचिमनमोहनभाए जिनकह
जर्हुंतर्हुंफैकिदएहै पहनम्रमनमर्हंगेगंनछएहै अनिश्चरभुनस्वनाजेहिंजोंही कहहिंजसगाधर

आई छंद सुमिरि बिनय समसुरमनोधरि छबरउ बितनतंह बिनतीकरी नृपभेंटि फिरी फिरि देसु आशिष
फिरेउ उरमूरतिधरी सोसमउ कहत न बनत कछु सब भुवनभरि करुनारहे पुकारत कौसलपति
पयां नहि परहवाजें गहगहे सोरठा जहं जहं करहिं सुबास मगलोगन मुददेत नृप नहं नहं रस
फलसबपास रघ्योकें मध्यमहि जनक सुदिन बरानी आसु निमुरांने सब अवधकहें आनवधि
भरे फलतासु परजें नहुं निधुं निदुंदुमिन ६१ चौपाई भयो नगर छबघरघर भारी बिस्वहिं निज
निजसदन अंटारी धुजपताकमनि तोरनचारु मंगलघटतहंरोपेहारु बीथी बिबिधि सुगं
धसिचाई सोहैं चौकोमनिनपुराई बारघाटघरहारबजारू कहिनजाइ रसना बिसतारू भू
पभवननपंनिकसिकिमिजाई जेंनु मंगलछबि सबनलबाई सुदकोलाहलबजाहें निसां
ना करहिं सुबांसिनि मंगलगांना गांवहिं तिमिसुरबंधुसजांला बरसिसुमन नजनगति
नाना कौसिलादि जेननी सबरानी सुरमयपदरसनातनसैमांनी ॥ श्रीरामचंद्रायनमः॥
॥ १० ॥ श्री १० ॥ सी १० ॥ ता १० ॥ रा १० ॥ म १० ॥ चं द्रा य न मः ॥ १० ॥

बाल
८५

बहुमोली सिविका भरि बिबिध इहैं बनाई नहिं रजी तिहुं पुर अस भाई धंनद हिं सिविका पति अ
नकोई कहि कोविदे सेमरुषो सोई पहिं विधि बहुं छवि बलि नवराना बिलसहिं मधि सुष निधि
सब भाना जाइ नकहिं सुषमा बरवेषा जांनि उ मासोइ जो नहं देषा लसी भीर चहुं दिसि छवि बि
नी पहुंची हार मगन मुदरांनी छंद मुद मगन मंगल फूल फल दधि दूब अछत रोचना मनि
मनि थार आरति साज हीं सारंग सावक लोचना जुवति सषिन कोशिल्या सुमित्रा सकल भूपति
भामिनी करि गांन परिछन चली रामहिं मत्त सिंधुर गामिनी दोहा बजहिं बाजने नगर
प्रमुदित नरनारि सुमन माल बरसत विविध हिं उरवसी आदि ॥२८॥ चौपाई
रामहिं लखि बिज्ञान सकल भए नेनहिं छिन दे निमिलि गए सगुन सुगंध कलस करि आगे
चलि परछन सुनत बहु लागे भरी भाग अनुराग सपांनी पुलकित करहिं आरती रांनी
मातन मन जहं आनंद जेतो कहि न सकहिं सत सारद तेतो करत निछावरि करन अघाई क
रहिं बेद कुलरीति सोहाई उर करउ नारि अरघ पंनि तीन्हो इं पति गवन सो पाउडि कीन्हां सब बिसब
करन सुमंगल गांना गें रानी षिरि मन बंधनलोभांना सिसपगमुभटिकिशापरसांबहिं हांसिहं
८५

उमुनिगहिलीन्हे आसिषदेतपांनिसिरदीन्हे करिसबबिधिनृपभाज्ञबडाई कहकौसिकबसिष्ठस
मुहाई रिषिरुषब्लबिगुरकहेउबुझाई आश्रमबिदाकेरफुलषषपाई नवनृपरांनीसुतनसमेता
कहेउरहबमुनिदरसंनदेना मनक्रमबचनिजअनुचरजांनी कारनरहवअज्ञांसुषमांनी गवंने
उरिषिसंगसिषिसमुदाई फिरेउनपनिज्ञुनसतपहुंचाई भूपभाउप्रभुसीलसभाऊ गएप्रसं
सतपथरिषिराऊ दोहा बहुरिबसिष्टनिदेसनृपकरीबिहितसबरीति नवनिजनेरामसिसहं
लीन्होहेसिअनिप्रीति अतिउनसाहितनृपहिंपुनि दे आसिषसभभसार निरषिरामसिपमु
निनजुतचलेमुदितनआगार २८२ चौपाई नृपफिरिरिषिमुंनितिपसंनमांनी कहीअसीसतअ
निप्रियबांनी सुनिउपुरिपुरपरमउछाहू रानिनबिचराजतनरनाहू बधुनसहितसुतबंदननिहारी
कोहिनजाइआनंदरसभारी नृपमिथिलेसबिबिधिपहुंनाई आदरभाउसनेहमहाई दीरघदाइ
ज"वरनेउभूरी सुनिरनिवासंसभासुषपूरी बजहिंबाजनेबिबिधिप्रकारा नटनर्त्तकगंनभीरदुवा
र सजिसजिसाजुसहरजंननारी प्रबिसिमहलबरबधुंननिहारी करहिंआरतीछकिछबिभारी वार
नमनिगंनअभरंनसारी छंद छंनछननवीनउछाहभोनृपअवधसुषसोभामई मुहिविविधिबिधिबाहेराम

बाल
८६

बिधिपाउ उरबरभरआनंदबधाउ सेवकबृंदमोदअधिकाई कहिनजाइपहिरावनपाई सिव्रांसकल
सुरआनिअनुरागे पेषिमगुहिंउनसबबृजुषपागे चलेसदलनिजसहितसमाजा उलकिनसुक्
नसराहनराजा गुरबसिष्ठकौसिककहिआंगू गयोमहलमधिनृपबडभागू दोहा लषिरांनी
लेसुतबधुंवपरीपलकिपगधोउ दियआसिषसोउमुनिवरहरषनहृदयंसमाउ ७८७ चोपाई
निजकरनहलैराजा अरुरांनी धरेसिंघासनमनिमैंआंनी उनिमनकारबोउशक्तिप्रसजा इ
शरेबसनभाउनदूजा गदगदकंठनयंनजलछाए बोलेउभूपबचनअतिभाए इनेकुल
गुरपदपदुंमममभावा कीन्हेउमोरमजंनमनभावा मेरिसकलसंसयुउरसला दीन्हेउचारि
उसुजनसषमला जनमोत्सवृषसनीसिरभांजे ब्रजनरंधादिमएअतिवाजे अरुकौसिककेसं
गलेसोउभांई दैमगवक्रविद्यांजयदाई बंधकरबोइअसुरअभिमांनी मषारक्षाजसजगमहं
ठांनी दोहा सीयस्वयंवरनृपनमांधवधनिउरारि धंउजेता नसवदंडइबंरामकहमंजायउनवजो
र सोरठा विजयसुजसाकिपभूरि मालतिधारुनजाइकहि मुनमानिबहुंसुषपूरि पठंचाविपुरम
जंनजुज ८८ चोपाई करौकहांलगिमैसेवकाई असकहिमपोविवसनृपराई परतपगनिहे

८६

पाई रामहि निरषि सिय सुष छाई सकु विसाषि नैनन सबै न चलाई जिन हीला ३ पलंग वै टारी करवीरी हीन्हीं
सुषकारी पीकदांन कोउ आगें धरी टारहि चमर कोऊ रस भरी निरषं न चहनि सिआ सुष साजेन सोहै सोन
लोचन नेला जेंन निसि पनि उदै भयो तेहि काला रवि डदंकि पेस रुप हिलाला गहैं न कमलिनिहिं करन लमां पे
सीतल परस नाहि नहिं भायैं मुष मंद नन क्रि कुमुदिनि हिंसी पीरे पसो लाज तेहि समी भजि निज दुति
लरि चक्रो अकासैं मयीक हैं तन किभरे हलासैं छये डुषित भए रिपु कंज कमुदिनी हिन हरष अति क
रको कउ रसोक छकी अनुचर चक्रोर तति निरमल पसारि देस हरिता अकास नास भो तम अनी नि
कौ मंत्रि मदन मन मोद व्रत्रो नृप मांन जीति को जेस किरिनि पसारी रस दिसनि वं धुमि गारे भो मूहें ॥
मे सुषी सबै उडगंन मजा सावें भो मनि सिके उरे दोहा छिति नभ पैली चांदिका कैकर शर धुरि दोन केचंद
न कोले प भो कें पारद सो भीन ३०० चौपाई कैं तुषार बरसो चहुं वोरें कै पियूष सो ससि जग बोरें प्रसि चंद्रिं
कहि अति अभिरामहि मनिन चमाचम भो तेहि धांमहिं सीता मुष प्रतिविंबहि मनिमें बोले राम जो हितें
हि अनिमैं तुव मुष भरत वं उमह देवी विविधि छीरधिहि सुधानिधि पेषी पौन तुला सों तौलत भयो उजपति

गावहिं सुकवि कलकीरति निरई रतिमांनि मंगलखांनि उनसव जेंजें नुजे अनुदिन गाइहैं विस्तनांथ सकल
कल्यांन मंगल मोद सघुहिं पाइहैं सोरठा प्रभु सिय प्रेम अनंद सकैं न सहसानन बरनि विस्तनांथ नृप
नंद वृंदन एक कहिलोकहैं सोरठा निकरहिं बाग अशोक कें अदभुत कलि न प्रकार बन ताड़ो दसरथ नृ
प निसी प्रराम आगार गुरसों सुदिन सुरंछिकें सिय कों दियों निवास निसि रंका निज सुदिन सुनिरा
म हुं भरे हुलास २०० चौपाई भरतादि हुन औन सुठिहरे दिय बन बाइ नृप निसि बसरे रामगंवन
महल्लन कों नीकों आयौ दिन सोरंजन जीकों राम मिलन की अति अकुलाई उर सिय के अति अनु
प मभई चित्रहुरि विहय करि आवांहन घरिहतीं अयवृंनके बाहन उनकंठा सिय मिलवे केरी ह
रिमंन अनुपम भई घनेरी बारबार अंगिराइ जंम्हाहीं लोचन जलकंन सहित नसोहाहीं जुगल सांझि
सरसी नुरुमांनो विचलरि मुखसर अनिछविडांनो विगत सांझि गुरनृप अरुकेरेऊ गुरुकेजांन सुदि
न आरंभ भएऊ दोहा भ्रप वचन सनिजोनसीसादर चलेलेवाइ राम अैन भरि रामकहुं सबै फिरे पहुंचा
इ सोरठा परिकर हे नहें राम संग अनुजंन मिप्रस बनकें पंनिगे सिय के धांम सबै फिरे सिर नाइ पग चौ

हाँ रुनि सुरनि लो भाँ रुनि हरि हिसो जाँ रुनि दोहा होत प्रात नवो ले विपुल वंदि विरद अभिराम राजे वा
जें नवि विधि विधि विधि सियजुत जागे राम ३०४ चौपाई बैठे दोउ पलंग सुख धाम उघरहि सुद हिं नैन
अभिराम रवि ससि जव दरसन कहं जाहीं नव जि मिश्री के करु लसो हाहीं सिय मुष निकट
परम छवि छाई आलस सो हरि मुष मुकि जाई नील नलिन सकुचि न जंतु भावें प्रात ससीकु
ह सी सन ताचें नथ कुंडल दोउ अरुझी अलकें छकी अली लषि लगें न पलकें लषि जुगस
सिजं तु अहि सिसु होई आए पि पेंन सुधा सुष भोई लटनि रुवारि उरझुंनि होउ सहि न स
कहि विछुरें न छुन कोउ बाहेर कहं हरि पापेंन परा हीं फिरि फिरि सीय निरषि सुष भरहीं छं
द सिपलव ता फिरि फिरि राम उर छवि निरषि फिरि बाहेर चले अलसात गांत जम्हांत सुरि अं
गि रात अति छवि सों भले पग धरत डगमग धरनि टटी माल उरमो मल गजी जंतु नील गिरि व
रु धातु जुन सरि पांडु पांतु सब लसिजी दोहा याहि विधि आए बैहिरें कियत्रिप सषिन प्रनाम ति
न हिलषन सुसमान कछु डीठि कनौडी राम ३०५ चौपाई कीन दंतवन बैठि सिंघासन लेपें अंग

बाल॥
८८॥

उरकर्यौ मचु दिगझ्यौ गरु करन हित नषत नच ढाप्यौ नऊन सोसम न ताते हिं पायौ इ रघुहिं साको उर जरी गयौ
ताते मधुसोम मसि भयौ जरे मीत उर भरि श्रुति सोवंत करहिं अंगार चकोर रुं भोजंन छंद नवलारि
सरिसिरु जरावन महं गंग नर आ संनत पौ नपकरन अति भो षीं न तंन सोन वहुं नहिं सुष सम भयौ
सुवरन सुवर नहिं समसिहि नतंन नेपने तन वहुंन लहै करि श्रम सेन पवनहिं धपिपतालहि पालवेनी
समचहै छम भिषा तिहरे ने नल षिलजि छ९ वन महं हरि नहै कहि निरषि हरेल रिझ्ते इरिहै
गिरि वारदरिन है सो कि पौउ विते मरुन अपने मान नास हिं नहिं सहै कै मरहि कै ते मान अपनो हू
रिमानो है रहे सोरठा जल वसि सहि सहि सीत न अति तनु पद समहि नकंज जपहिं मालउ हासकौ
मिसि अलिमाला मंजु ३०२ चौपाई विविधि उक्ति इमि रचि रचि कहहिं कहहिं करि विहार मन सुष नाहि
सीतहि हावु भाव सोम सहिनासिंगारा वहुं विधि सोम सुकीन विहारा जेहि विहार सम नाना हि पाई
भयौ श्रवन नरगति रजल जाई जेहि सम गनर हहिं हनुमानं से मसिरु रुंकहिं प्रिय जोइ ध्यानं जेहिं ल
गि करति सकुं पद सेवा वेरहुं जासु न जा न हि भेवा अकपकंपा सुमिरत सव लहऊ सो लघुमति मे किमि
करि कहऊं पुनि दोउ सो पे प्रति सुषसनि कै अलि गंन छकी भाग निजगनि कै पंचवाजधुं निसो हिसु

काईकीन सांसनेहसहितबैठनभईमनरघुवरमहंलीन ७ चौपाई सुनतेसुखदरामअसनामें सोनरो
मांचअंगअभिरामें नैननउमडिअंसुजवआवें माइकसुधिकाहिंसीपछमावें उनिकौशिल्याह
रषितकरी सकुमारिनुमलाएकनरी नदपिपाकनुमजाइवनावो गुरनपमुनिमसुतनजे
वावो भगिनीसहितसिधाजुतधाई पाकचारिविधिचारुवनाई सवजुनहाइरामहूआए म
नहिसीयकीछविछकाए पूछतजोकोउकछुमनलागो कहनसंभुसुमिरनवितपागो
उरमुंनिदुजगंनसंगलेआए सीपअैनकहंदसरथआए सोरठा फगपखारफकराइकासमनि
पीढंनमहंभूप वैठारेमुंनिगुरदुजंनतेसुखलहें अनूप उनिभूपतिनिजसुतनजुतवैठेजेवं
नहेत रंगनाथकहंअरपिसियपरुसतिभगिनिसमेत ८ चौपाई घूंघुटकरकंचनकीथारी
अैरकटोरनसाजसंवारी परसोप्रथमगुरुकेआगे दिजनवहुरिकहोनविभागे जथाजोगपु
निपरुसनभई रामहिंपरसनलाजहिछई गुरुप्रेरितनृपअतिसुखभीने सियकहुंचूडामनिवर
दीने सोलहिसियअनुपंमसुखछाई चूडामनिहिंलगाई करिभोजनसवअंचवंनकीने ग
एसभावीरिनसुखदीने पुंनिसासुनसियसवनिजेवांई सवरथसखिगंनफेरिखवांई अपनहुंरामप्र

रतेलसवासेंन मज्जनकरनसरजुकहेंगए सषेंनसंगसुषिसोभनछए मौनलानगईपरभातैंसी
पसषिनलगिनोरनिगातें मनिवैौकीविचित्रअनिवारु वैठीसियमलगाजितसिंगारु संदरस
षीदंतनकराएवें उपटनकुरनसअंगछविछावें रहैंठगीलषिअंगकमनीयां गठीदेकरविहं
सनिसीयां पुनिवरअंगफुलेललगाई अंगअंगोछहिअलिनहवाई उवनअंबुअलिवसं
ननिचोरें सियअंगनजनमनरुपेरोवें दोहा पहिराएनूतनवसनअंगअंगरागनकीन॥
भूषितकरिअंगभूषननिसभपदजाव्कदीन ६ चौपाई तिलकनिरषिपुनिदिष्टसिरवंदन॥
कियपरीरषदृगरेषाअंजन दंतरागदेअधरागकिय केसवासवेनीगुंदिसिय अंगनधु
रिहरगंधत्रनवर पहिराईफूलनमालागर करिसमसीपरामकोध्याने पुनिदियविविधि
भांतिकेदाने कोउलैकरअंजनलगावें कोउचमरकोउमुषछावें कोउवनाइवीरीअलिदेहीं
सियसेवांकरिसिषिसुषलेहीं पुनिसियसबसोहनगृहआई सबनिजयोग्यविनपूजिनभई सब
सोंआशिषवहुविधिपाई फिरिकौशिल्याभवननिआई दोहा सीसनाइआशिषलईवहुसेव

हे सतनु नवतन अनिल से उनिवि हंसत न अनु वांनी करी कुवरि कहि बोलन नैन समी जगत मिलि हि
कहै मोहि सम नारी मैरी भ्यो कुवरि हिहि बिहारी उनि सुनि वे न हंसन तसव भए आसिष दै नारद सुनि
गए सोरठा भूपति सुनि कल गांन रांनिन जुत रघुपति हिए दियो विविधि विधि दांन जो लाषि
लाजै सुरपति हु दोहा पाइ इनाम मनाम करि गे निज निज धाम रांनिन जुत नृप सुत सदन आइ कि सव
पेवि श्राम ३१३ चौपाई कछु निसि बीते रामहुं सोए जागि भोर निकसे सुष भोए तेज सषन संग
सरजू तट आए किए दंत निफलेल लगाए कीन बिनोद विविधि विधि जल के प्रकार प्रकार दैषी
है कारन तके मध पगपर सतन अति रुच छाए उछलत जल मह मीन मुराए जल ते अधि कै
मानसु पास्त जंतु मख हंसि राम संग वास उनि पीत वरष हिरिसो हाए नितिक मकरि य हक लंगा
ए जाइ मातु पद भोजन कीन्हे अनुज न सषन सहित रस भीने करि पेसाक आभूषन परिरे सषं
न संग आए पुनि वहिरे सोरठा भूपति के दरबार गए छबीले चारि उ सव बलि बलि सुष सार ८
सरष प्रकट कनक किरले दोहा प्रनन करत मनोम नृप अनुपम लहि आनंद बैठा पास रघुबंसी कै चारों
रघुकुल चंद सोरठा कछुक जानिन हदरबार आए रघुनंदन अपन निज निज सदन अगार गए सषा पर

साक्षी पाई भगिनि सहित अंचल न मुख छाई सोरठा गौरी हरषित नषाइ भगणि न ज्ञुन गे सां छुढि गा
वैठाई सुख छाइ कौशिल्यां सव वधू न कहै रानी सुन सुन वधू न जु न वैठे तराल भुडाल सुरपति पठई अ
प्सरा आई नहि नेरि काल नाचन लागी असरा कि पग धरव गांन चारु भाउ न्याव न करैं लहिं
वृविधि विधितांन ५ नारद तेहि अवसर तहं आए वीन कं धरि रजत सुहाए एनि नज्ञु न नृप
तीसन वाए स्जैन करि आसंन वैठाए रामहिं लषि मुनि अति अनुरागे हरषित चित्त नाचे
ने तहं लागे विभुरि निजरा वीन धरि कांधे जोरि मे घलाक सहि कोवांधे शोटे सुभ मृग चर्म सु
हाए वरवल कलन कोपी नव नाए कांधस केसी के कर करि कें सोनिलो न महं कं पहि धरि कैं राम छो
र गहि नगवव नाहि कौशिल्याके कर शठि गआं वाहिं भूपति पतिरा निन कं आगें नाचहि नारद अ
ति अनुराग दोहा परम विनोदित कैसवे कौतुक लषहिं अनूप विहंसि सराहहिं नारदहिं रानी
कुवर कुंभूप २९० चौपाई कैकेशी के पाछें लषि कुवरी मान कं भेषित दाढी वंदरी कारन माड मुनि
नाहिं विराइ वंधन सहित नवरसे मिमुख पावे हरषित है कुवरी तहं जाइ नारद छोर गहि सिमु सकाइ ॥
कहि सिन मोसें मसुंदरि नारी विरच्यो विधि वर तुम्हहि विचारी तिहि वांनी मुनि मिगरे हसे नारद

हिंजातगयोसंगमाहिदिन संध्याहुरहिनसकीकछुपतिबिनु जिगननायतजितियकरिसोका मिलन
हेनतंनेउतपकोका छंद रविबिगिगतचंगमकेंनलगेजोगंनकरतकुकउलूकहैं दिनराजबिनअति
सोक सोमंत्रहंसभेसवमूकहैं बिपरीतलखिअलिआजकमलिनिविषहिंभोजंतुजंतुक
रे सिंहबिनतंमगबिउलतवारेनविहारिजगवनमृगभरे दोहा तमहिपांइनभप्रगटभेनषतन
कीसमुदाइ मनिमेचकवधरिसममयेतेहिछितिनभसमहिलषांइ करिमसंन्नमाचीदिसासासि
५ प्रकासकियदोरें मनहुंसहसफनिमनिनकीजोतिकढीछितिछोर सोरठा सिरषिमानिनिनि
मान कोधिनसासिअरुनैअयो कियअलिअवलिपयांन उमदिनतेकढियोमकरं ११५ चौ
पाई हरिरहितनतेससिकरहिंपसारी मनहुंम्यानतेलिपत्तरजारी तमसिरछुनंदनसियहिंलषावहिं
करिसंदेहबरनिसुखपावहि तिमिरनासकरनकहिकेंहैं कैजुज्ञातिनसंजोगगुरेहैं चौकेंविधिविरचैंन
सिंगारेंहैं कैअमिभोजंनरजनपावैहैं निसितियमनिउरवसीचारुहैं कैंचंदीनभथ्रीलिलारुहैं कैन
भसरमंकमलहिछाजैं कैधोराजहंसपरूराजैं कैरतिपतिकोदांनसानहैं कैषमुकुरजउदुसलषानहैं
कैनुवैजससारविलढिंसितनन आपालेनरैनकुंदरसंन दोहा कैसंभोगअरंभकोकुंभरजनकोराज धरें

भरिकरियेनाथविहार सोसुनिहरिहरषितउठेसियजुतसुछविअगार ३१७ चौपाई चहुँदिसिअ
लीमंडलहिकीन्हे विविधिभांतिकेबाजेंनलीन्हे निरषहिरामवदनअनुरागी अनुपमगानकर
नतेलागी रमासारदाअरुइंद्रानी तुमहुँछकितछविदिवेकुंभवानी मधसषिनदोउकरिग
लवांहीं अनुपमलसहिपरमछविमांहीं मंजुकिंपमोहनगानसुबानी तीयवृजाइनवीन
सुपांनी लषेविटपहरितहैआए सासिमृगछकेसुनादछकाए थम्भ्योसमैतेहिसरजुम
वाहू त्रिभुवनमरुभरिरह्योउछाहू सोसुषउमावरनिनहिंजाई ज्योंकहिंजाइनसुधामि
ठाई दोहा तहंतेउंनिहरषितगएकवंलभवंनमंहराम सियसंगलसिवैठतभएआसंन
अतिअभिराम ९८ चौपाई सहसदलनिकोटिनअलिलसे जुथपनिजुथपनिविचविचब
से तिनहुंनमहंजेमुष्यसषीहैं लैसेवकाईसातुलसीहैं षोडशदलमंहषोडशठाढी रामरू
पनिरषहिंसुषबाढी सुधामुषीउज्जलावृषांनी कलीकांचनीसुरभिसयांनी चित्राचित्ररेषहं
हंसी कमलाविमलाछीहमप्रमंसी चंद्राननिसमसिकलासुदंता लषनमधर्यमालनीकंता वृनाव
एरोहांतहराजें कलप्रागिरिसारहोछाजें पंतिउपदलमंहषोडशपेहें तिनकेनांउकहेंविधिजेहें ॥

ननहिंकैमोदहैकैचंदहिनभछाज ९५ चौपाई ससिसोनिसिनिसिसोसजिससी तियसंगहहरिहरिसंगसि
पलसी चंदकिरनिनिरंधाहिकैआई फटिकेछरीइवसदनसुहाई उदितमीतगुनिमनसिजजाग्यो गहि
सोइछरीउछरो अनुराग्यो लहिप्रकासनिजसरसवहेरी लिपोचढाइकुसुमधनुफेरी लखिनिजसुह
दमदनवलपायो रोषितविशिषनिछोउनमायो चलेसिलीमुषकटेकुसुमधनु लगेसवैतेहिंकामुद
नियनमनु तेहिंछनसषिकरिसकलसिंगारै रामहिंनिरषिभईवसमारै अंजनाद्रिगदियकेसरिअंगनि
मुषनमोलालियभरिरसरंगनि दोहा अंगनमहुंएकरंगहैतेरंगरहेसोहाय अंवुजकंदकहुंजिमिभरेए
कैचरनलषाय बीजदंतकेसरछटाफलकपोलदलनैन विकसितवरवारिजवदनचहुंदिसिषरीस
चैन ९६ चौपाई लहेसुवासमुषनअरविंदन करहिंसषिकरिकमलननिंदन कालकपोलविधुविव
विहारी कहहिरामअसमनहिंविचारी विगसितनिसिहुंनिरषिभ्रमछायो चंदकमलमुषपरिषिनआयो
निरषिरामरूपसमैविचारी बोलीपानिजोरिकोइप्यारी नाथआपसोगोजोइहारी मनमहंमदनसोईरिसि
धारी रिपुहिंपरमप्रियहंमहिंविचार्यो तातेंकोपिअषमहसरमार्यो अवलनअंगकुसुमहुंतेकोमल २।५
सोसनिजानिकहैकविगनमन प्ररपुसके सरपारहिंभए आपसमीपहुंतापहिंदए दोहा गईजांमिनीजांम

चौपाई नमो मुष्यसीज्ञामहरांनी कमलापदुमाकहीं च षांनी से यामुषारिसु कैसी प्यारी लसतिक
मल पानतारा न्यारी धुनि विवीरगा नुजा सोहांई अरु अंनुपम सरुजा छवि छाई कोउ साषि पीक दां
नलिय ठांढी मांन हांन ले कोउ छवि बाढी कोउ लै विजंन चंमर कोउ कारहीं कोउ बीरी नि दै
अनि सुष भरहीं मेढ़ंन ले कोउ अली सोहांई कुसुम माल ले कोउ आलि भांई अंगराग हांन कों
उ लिए अली है कोउ लीन्हें आरसी भली है कोउ भूषन लिये कोउ अंगरागहिं कोउ पोसाक
लिय भरी सोहागहिं दोहा कमल दल न अलिगंन सजाहिं सब जिय कालन अवतंस जैसी तुहं
कीयछवि सरस को कवि कहहिं प्रसंस ३२० चौपाई जे आठौ कमल हिं मधि राजैं लषि तिन कोरि
नकमला लाजैं सिय मुष माकि भि जाइ वषांनी लहति न पार वरनि जेहिं वांनी एक नारी अनु
पम छवि धारी सिय सम सहिन विधि रच्यो विचारी पैंडी नाकिन रंगन रिलाजैं नरषं नसकुच विउरि
नरवि भाजैं चरनंहिं अंगुलि सम चंपक कलि ऊं गुनि अजांन नेहिं सागहिं आलि ऊं नषन नि
रषि उडुलन जिन रहहीं नातें आधि पारि न मह के कहहीं कंज चरन लषि अनि सुष एसी एकदं डग
हिं भौसंन्यासी वसन कपार अरुन दलधारी तिन भजन रूप हरि मीनन कमठंन सोरठा भए नासुज

छंद सुभसोभना सुभदा सुसांता सषी संतोषा कहीं सुषदा सुचारु स्मिता हेमा छेमदा छेम हुं रहीं र
सउत्सुका हंसा सुलोचनि चारुरूपा हें धरा धात्री हुं धीरा चारुवंगी एसषी हरिमन हरा द्वादशदल
निसषि सनी सुंदरी चारुसीला राजई छीरोमद्वा अरु भद्रा एंनि भद्ररूपा छाजई विदुल्लता अरु
पद्मरेषा भाव वरजित पांवकी नहें ऊंमकुं मांगी प्रेमदा रसनिपांरु सरुगांमिनी वारहों उपद
लसषी जे तिन नाम कहि सुषसों सनी मालामरु ली माधवी कामदा कों मदिरा भानी नृतिव
ती एनि छिनि ते प्रेमदा कुसला कला लीला गनी उपदलनि ये मषि कहि सेवा प्रेम पगे हिं लषे धनी
षोडश दलनि अमिता सिता गुन संभवा सुविसारदा पुनि उमा प्रकाति हुं महं मासा श्रुनी जाति
विसारदा हरिवल्लभा कमला विसाला छौ पदुमह लावनी अरुन हं प्रयेसी सुषधारिनि स्याम सुंदर

उ

मा वृंदा ठंनी शोनई सनिरत हिंरा मकहुं त्रिपक हि सवानी सुष छई उरवसी रंभा मेनका वंदावु
लीस भगाति लई हेमां हुं छेमा वरारोहा पदुमगंधा गालिनी मृगलोचनी हुं सुलोचनी हरिनी हुं श्रा
ति सुषमा सनी दोहा राधा पद्मा हंसिनी कर स्वरांगी नाम सखि प्रिया रसोत्सवा विशाला छि अभि
राम पारी राम हिं आठ जे कमल मंध्य रहिं सो हि तिनके नाम निको कहैं विमल ग्रंथमत जो हि ॥ ९२ ॥

तुपमतहं जानौं चंद्रहास्तलषिचंदरुचडांनो चंपकलीतिलरीसनलरी तेहिंकाछुछवितिलेवागुरिकरी सुनिमनम
गतहिमांडफंदासो तातेमदंनजगतजेपासो वाहुनलषतमृनाललजानें तातेंकीचहिंवीचछपानें करस
मत्निकिसलेकरिलालैं डोलिहारिबोलनसवकाले मंगफलीलषिअंगुरिनहारी अजहूंहृदयंदरार
निहारी मारचकासुदरिनिमिसिमाए मनहुंजगजैसीबंनआए करनितुरीसवसुषविसकेलीजेतु
छविसिबाहिहिंसिंगारहिबेली दोहा मधिविनरविहिंवनाइविधिरलषोअनपानिहारि करकंकनसों
देतभोनेहिंकाजोग्यविचारि पहुंचिनजउंसनवरतननवग्रहहारदेषि धुवंपरदक्षिनकरनवहिंसम
तानासुविसेषि २३ चौपाई राजतवंदलसहिंभुजआंधे मनहुंवसीकरजंत्रनिवांधे कामकंठरेजु
नरभरेषा दरसोउरसिहिंअंनुपमलेषा तेहिंधुनिस्वनिविधिअतिसछार विधुनिसीवत्रेरेखवंचा
पे समनहिंपीठिकदलिदलभयो तातेंटकटकफटिगयो फूलेक्रांमकरनढोढीसंम पिसरिपरीरिको
रिपरिकम लसतनचिवुकतिलसवसुखमनिनिगाहि मनहुंकांमचषतिलमनिविंवहि विंवहुंवहंहिअधरस
मताई तातेंनेहिंभोजेनतुधिजाई दंतनलषिमुकतंनगंनहारे भेगरषरुजदपिगुनधारे दोहा रसनतापत्र
पलंसमदस्वांसहिगएउपछोरी तेहिजुषजंजुसतिकिरिनगनउडिछारचहुंओर वीरीअरुनीमुषसुगंधलजि

बाल
८४

उगात सकुनसीन अरुषांमकों हारि गुन नवि लषात नजात आस्रम कारं दमिसि २१ चौपाई लषन राग जा
व करि अनूप तातें आपकुं भोइ वरूप अनवट विछियां अंगुरि नि भाई सकुल सधुनि हं सनि छवि छाई गुं ज
नूपुन लषि गुलावहियहारें अजहुं तातें कंटक धारें नूपुर धुनि करि अलि छवि पांवहिं मनहुं पदुमप
गति है
द के गुंनगावहिं जीनी गति हं सनि की जैहरि जप कंकनपे सनि हे जंघन लखि के नकि हि पजरी तातें छा
र तास उर भरी पीन कमल लषि जांनु लजांनें एंहिं कुवेरहि सरहि छपांनें कादलि उरू सम कि मि कबि
कहैं सीत भीत उरकंपहि रहैं दोहा मदन जांन के चक्र जुग लजे नितंवनि हारि प्राने निजरथ चक्र प्रकार
धी तरनि विचारि सोरठा लषन किरि निरंदिके रि तास धांघरीजुत नितंवनि उपमा जगत नहिं हेरि लहींन
लाजि अबहूं तपैं दोहा वरनत कटि कवि गंनकरहिं अपने मन अनुमांन ब्रम्ह निरूपन अकथ इमि अ
नुभौ है परमांन सोरठा रहीं कटि महं मुषार र सनासो म अभंग कमल आवलि विचकरि हिं जंनु कारन प्रसं
सअनंग लषि सेवार रोमावली समन होइ चहिं जाइ नाभि भली लषि भौरजल धुंमि धुंमि लाजि बिलाइ
नापन उदरहिं मूठि भरि षवि तिय अंगुरि नि रेष रेषा त्रय अंनरानि कटि त्रिवली मैं वरवेष सहित किंचु की
ऊंचल सैई मि उपमा कवि कीन कमल हंस चक्रन वर मय पहिरि जी निजं जु लीन २२ चौपाई विविधि चंद्रअ

तिकांमनादातैं अवहूलोसोंसमनहिंमांनैं सीसफूलसिरवेंनीवेंनी हारेचिंवरवहैंमनिफंनी
सोरठा छविपांवेनीपांन गुंहितिनवेंनीअनिलसे जीतीअतिविधिजांन पत्रगुहुपलेहृजितें
उ मंदिरसविरसराज बैठीहेंदेवीसुछवि तजभरेअतिलाज लषितेहिसारीस्योमजुन दोह॥
निरष्योविधिनेहितियहितवअंगअंगसुछिछविमेलि भईनसोसंमसीपकैधरीभंजारसके
लि सोरठा अवलोएषीसांचे लैलैनाहीकीसुछवि विरचतविसविरंचि जहंलगिसुंदरता
विसद २६ चौपाई ऐसीसियपछविकविकिमिकहहीं एमहुंहृदतउपमाहिरहहीं एमरूपत्र
तिअनुपमजोहैं होसववरनिकहेंकविकोहैं अवपदरूपहिमनहिंविचारी तदपिकहोकछु
मतिअनुसारी दुजपतिहरिपदसेवहिलसैं नषरभाउहेमप्रभुपदवसें दूरिहुनेपदपरस
हिंपाई दसगुनभसउअलंकनसाई परमनामरसवैरहिंसाजें जसोकमलपदअतिअनु
एग्पो दारुनसीनघांमसहिलीनें हरिगतिसमाहितअतिनपकीनें पाइनहेंससोगतिसम
नाई जाइमानसरवसेलजाई छंद रेषासुअठतालीसनरहेंनजांनधुजअठकोनहै हलम
सरोअ्रीशीमरेषाजमरछत्रहुंजोनहैं नरधनुसअंकुसअघदलद्रुमस्वालिकोवरजंद्र कलें वर

नकोकनंदपंक वसौभवंरकेंव्याज उराष्योपहैंकलंक सोरठा कविनाकेरिनिधांन सुंदरिरसनानीपकी
मुषरअधरपहिंचांनि नानेराषहिंगोपनेहिं दोहा मुछविगढनकेंचाकविधिनोसौनिरषिकपोल ॥
नानेरहीअक्रैलिछविफिरिनवनेवसगोल २४ चौपाई मुषपांनिपजलरासिउमंगै नाकीजंनुनासि
कानरंगै वेसरिसमवरहींकिमिकहीं भोजंनकरहिंभगरनेअहीं ज्रवलाकमोनीछविलहई ससिअ
मिविंदुचुवनजनुचहई दीरषछोरदाराढिगनीकें अंजनरेषसहितअतिनीकें कंवलपानजुनआलि
सिमुवली सकुचहिंनैननतकिछविनवली मोहनसंममनसिजधंनुकैसें विधिकुलालपरनरिये
जैसें सोकटासजेहिंदिसिनिचलाई असितकमलअवलीनलजाई लषतश्रवंनमुठिसुंदरगोरे ॥
नीकेलगतनकनककटोरे दोहा नरिवंननीकेनिरषिसठिमनमोंसकुचेभांनु षोजनवहुंकितमेरुकेंल
गेलोकउपमांन ३२५ चौपाई समरुतिभाल वदनविधुरोजहिं सरुननसमहिघटनतेहिंसोचहिं
अलकैंलटकिललकिअनिलसहीं कांमकसाकहेंजंनुपेहसहीं मुरकीमुषरिजाइकिमिवरनी लषे
नैत्रिभुवनकरेवसकरनी अनिसुंदरदांवनीसुहाई लषिलषिदुतिदांमिनिदुरिजाई लसनचंद्रिकाछ
निछविछाई हैजचंदसमसकतनपाई मोतिनगुंदेकेसविचवंदन निरषितिवेनीभरीअनंदन संमरुतिदे

और अंग रूप बकुंद सो हार पीन नितंब छबे तिहि भाए उलटि निसांन चढे सम जाई रहै मरनल
खि अस मन लजाई त्रिबलि तरंग अनिमा निधि मानाहि नाभि कदि भए बिराट सयां नहिं नीलकानि
न जुत किंकिनि नी की कमल अवलि अलि गंजत फीकी नाभी लखि अमिकुंड उलजानो छ
पौ पनाल व्याल संनठानो हरि समरूर भगतन अनुमांनी रोमरेख जमुना जंतु जानी त्रिबली
पाजहिं धरी त्रिदेउ हिं तहं अनंग तप करत अखंडहि डोलन चलद ल छबि [illegible] लसहैं मान दल
हुं उदर रस रहत रहैं दोहा है कपाट मरकत नाशिला जड सब जग विख्यात आनि सुंदर रघुनाय उ
रति नसम किमि कहि जात ५९ चौपाई रामहि गुनि छवि सीवं हि यां पो तानें दुज पद छापहि
छापो रूप वोप जंतु उद धि अपारो भौरहिं कविश्री रेख विचारो मोतिन मनि कुसुमनि की मा
ला मध्य तुलसि दल दाम विसाला हंस अवलि मधि की रनि पांती दांमिनि लखि लजि गंग न परां
नी पांचरंग मनि की दुति ज्ञंती दाम जो तुलौ है वैजंती पदलो प रूप माल है जोइ पहिरे भुवन मा
ला सोई कौ शासो तो तो रहन मोहे पै कलि कमाला सुठि सोहै दोहा संधी लंबी कंद नेरा जन माल
न लंब नाम अपीउ कासि रवधी मालासो भक दंब जंन मन मोहै निम निविधी कोटि नसासि पर कास

चक्र सिंघांसन सुकर सरस पं जे मद दुहुँ मलो जव माल गो पद कुंभ सर जु अव नित्रै कौन रुचै नो जि
प विंदु शक्ति हुँ मकर पवि विधु हरजं बुफल गनो षटकोंन आ षा चंद्र गदा पताक बिवली दरल से
अंमि कुंड चं द्रिक हंस वीना वेनु नूनरु स्यौव से दोहा अर्ध रेष पद सुषद महं लसन कहत जें तु सो
इ लहिहि उर्ध गति मोद में सुमिरि हिपद जो कोइ हरि पद दहिने रेष जे ते इ सिय के पद वाम सि
पद सिन पगरे षहरि पग वांये अभिराम २७ चौपाई कोमल पद परसे व डभागे सिरस सुम
न तिहिं एकठिन हिलागे उलटो नील कमल पद पीठहिं समन पाइ लजि जल वसि सोचहिं ॥
ऊ नननेव ढि सोभा हरि आई समिटि गुलफ जं नु सुई सोहाई नूपुर सधुं निपहरु ग्राना कहिं तेई
जें नु जं नमन ग हिरा षाहिं चिकान कोमल जो कल भंनका सकल लछ छवि भरि रस्वे पंच सर॥
तरुन सो जंघन सम सोहाई करसो जानु अति सुंदर जोई जुगुल कमठ हरि अति सब मोगाहि उरु
जंघ जंनु करन विभागहिं त्रिभुवन छवि सकुजी ति सिंगारो जघन षं भनु गमरस संवारो दोहा
तेऊ लारे नाषि उरु लाजे लषि रसराज तेहिं सोके भो सांमरंग वरनत कवि समाज वदनष
दतआ नपानिहिं छंनछविद्यं नछविहेत ३ चंपक कर सकन कजउ सम नपीतांबर कोइ २८ चोपाई

कंधवाढतनितहिंकंधनसमकेहेत होतनसमतवलाजिउरसिरनीचेकरलेत सोरठा रघुवरपीठिनिहा
रि पारीरचनसिंगारकी मदनैफेरिविचारि समनसमुझभेटनतुरत ३२ चौपाई कंठकपोनसमहिन।
हिंपाये विकलतुटनलोटनहिंकहार नीनिहुईसपहेंवपुधाए जंनुगुनिरसपनिरेषधंचार दोटील
षिजलरहनिसकानी नीलकमलकीकलीलजांनी अधरनलजिमगलजलमांही कदनहितेकठोर।
परिजोंरही दाडिमउरदरकोनकिदुजगंन ब्रलमकासेंसमहोतन लषिमुषरागरागहूंरागे मुषसुगंधहांस
कमलहुंलषुलागे रसनातकिपल्लवलजिवसवंन धुनिसेंनिलजिनभउउनाफिरतथंन मुकुरकपो
लनसमहिंविचारै तातेंपरैतासमुषछोरे दोहा कीरठोरमंग्गारहेंछविमोतीगहिलेह जुनसोतीहरिना
सिकाकिमिउपमाकविदेइ सममनसिजमषाकिमिकहैं विनपांनीजेधुजमहंरहें अमीसींविससिन
तासिगारें रचेसोभसमतानहिंधारें सषमाकूपहिंभरेरागजल तउअत्रनसमहोहिंनाहिंमल नरनि
किरिनिमहंजोपैसजे नषतनउकुंडलतलषिलजै नैपांचरेषजुनभालविलोके लजिनपंचसरभयोस
सोकैं पीतजिलकरेषेसुठिनीकी दीपजोतिलागहिलषिफीकी चीकनचिलकदारजुगअलकें जंनुयेह
रिमुषकीछविछलकें मदंनसिंगारजाकपषहोवे जुलफनितउअनूपमजोवे दोहा मनिकलंगीसिर

बाल
९७

नामकउरमुभलसनउरलषि आलिलहहिहिहुलास ३२० चौपाई यहिविधिमालाकौसुभधारी सुठि
सोहतजानिकीविहारी भजमलंवडेछुजानहिलेहीं साषीसुंडजीतिजंतुदेहीं जहांछत्रवीनारेषाक
र अंकुशाखगआरसीकमलवर वज्रगदाअरथतुकविजैनहल धुजतोरतसिविका षटतिल
कोल संन्दमदंगतुरंगहुमीना चमरपताकाबखरूपीना औमानिवंधधर्मकोरेषा सुरतरुध
जपताकरथमाला गदापदुमदरचक्राविसाला लंवेपोरिअंगुरिवरवेषा देहैपारनषटषटरे
षा सोरठा गांठिनवेहेरेष नौनौसोहैंअतिरुचिर सुनतिसुरेषहरेष वगलगंदोरीकेलसे सो
पहुंचनमैअतिसुषविकरवारिचारिहैरेष चारिचारिजिमिरेषहैतोहुसंधिवरवेष २१ चौपा
ई हरेरीएनषद्धजिदेषी गउरहेपहुमिलीविशेषी अंगुरिनमुदरिनमहिमानिहारे रतनषेचम
इनकुंसरहारे जउलषुषछविजेहिसवविधिअहै कारनकौकनेंदरसमकोकहै रतनचौककरपीठि
सुहाशी जेवविधिनसनहिपटनरपाऐ कमलउलटिनिजमनिनचौकदिए सोउताकीनहिसम
ताकिए अभावुडेकरसमडेकउंवर जिनहिलषेलछुमभामभागर करनफूलजुगवारुंसुहाई झूली
गलपलनानरहिभाई वांहुमनिनेजुगअंगदनीके तिनलषिनभसंसिउडगंनफीके दोहा वृषभ

जे
संगदीपतिन्हसौंदुंपतिदिसावारुनिछूटतईऊंमभाविनसोगिसौंचाहतउचितभोरपहिंधूतईअसगननि
माचीदिसामनमंहसमयअतितेहिलसतिहै कछुभयोरविपरकासजंनुरखासहितमृदुहंसतिहैं दो
हा कुसुममालवेनीतरुनिनिसिससिकैरवदीप सिथिलभएयेहरषपेकजलकोकअवनीप सोरठा वि
हसिसनीसुहाग विधुपतिसंगकामिनिनिसा किरिनिमनौअंगराग लगिअंबरमलिगमिचली सखि
पुकिकुमुदविहार पीतवरनभोसिथिलकर पछिमदिसिकरिप्यार तेहिंसंगजंनुसोहनचहत ईवौ
पाई छपाछपीछपिगईनरैयां कमुदिनिहूंअवमूंदिजवैयां देखिछितिनद्दुषससिदुषभरो जंनुगेरु
भाभयोइंद्वरो हरषिकोकउच्चरतउगई नवलोकोकीतिहिंढिगआई जलनिधितेंसरजघटभारी
वैचहिंगुनकिरिनिनिनदिगनारी तपेमनहुंवडवाग्गिनिज्वालहि तानेंरविअंगाररखवालहिं विकसि
तकमलवोमसकंनराजै तेहिउपमायहिविधिकीछाजै जंनुगलितरनिंवरकहंगारसौं सुधाविंदुकम
लंनपरउरसौं असकाहिंमागधरहरषिनिगाढे नौबतिनौबतिबालबजावैं सोरठा होतभोरसियराम
जागेबैठेपलंगपर सोउसमधाम कुकिगुकिराजहिंनीदसों सियपउररघुवरराषि सियपहुराषिरघु
वररतिउर मज्जनमनअभिलाष दोउचलेउठिपलंगतें दोहा प्रातकर्मकरिमातुगृहजाइसकलकैकीन

पेन्ह जुनकी रावहुं रंगजोइ सुरधेनु नषतें न संगकरैन ऊनतु हिंसमहोइ ३४ चौपाई कंषसरंगपद्मकासोहै
निरषनहिं सवकों मनमोहै तेहिंउपमासरस्वतिनहुंनपाई गंगजमुनमधिसरसीछपाई अरुनैअंगराग
अंगराजै जंनुसियरागअमि अतिभ्राजै फेरतकंजसिया अतिभाई हरिकरफूलछरीछविछाई अनु
पम सुंदरदोउनषसिषहै भूषंनवसनहिंनसन्नविन्नहै हावभाववरससंनिपरिहांसा नहंकरिविविधि
विशेषविलासा सैनभैनउनिगेअलसाने धारिकरिसायेसुषसांने रामहुंसियसीससोहायो जनु गो
नाससिनलांनजंनुआयो दोहा सियऊपरहरिवाहुंसुभसोहत अनुपमवेष चपलायकिजंनथिर
भईतेहिंमधिजंनुषेनरेष चारुचरनचासौलसैलषिअलिभरहिंअनंद पलंगउदैगिरिउदैजंनुचारित
रविसुषकंद ३५ चौपाई ओढेपीतपिछौरीदोऊ मगनलषहिंअलिगंनसवकोऊ कोउअलिरुषम
रिपांइदवावहि कोउअलिमधुरमधुरसुरगांवहि चलिचहुंओरचौकिलाभावै गृहचहुंकितपववाजववजा
वै होतमानमागधनिउचारे ललितकलिगराओभटपारे विविधितांनलैसुषउपजांवहि रसिकाहिम
उकंल्यानसुनावहि विमलवुद्धिनिसिअंतविधारै कविरजनपतिसुअर्थविचारै जांनिप्रानप्रकरुउगंन
बोले अवलनमनविरहागमषोले फिरीमानिनीम्रदेहआषी अलगीकंनउररसअभिलाषी छंद ममसं

वाल
१००

छमाजुतसीलविचारी षटविकारकामादिकजारे सत्रुमित्रमनरहतविचारे चारनैनसोंसवजगदेषैंजि
नकीजगमोरहिरेषैं दोहा सुहिदसवैनपराजहितदेहिंसुतहुंकहदंड कोसफोजकेसंग्रहीअतिउदा
रउरिदंड सोरठा आहिनहुंअरुरिपुजोइ हंनहिंनतेहिंअपराधविनु उतसाहितसवकोइ नीतिमा
त्रमहंनिपुनसव ३२९ चौपाई चोरीविनुनरजेनहिंपियारे सतिव्रतिनकेहेरषवारे नर्कनिपुंनअ
तिमंत्रगंभीरे सोरहेवीरधनुर्धरधीरे सिंहासनदिगतेसवसोहैं राजराजदसरथसुषजोहैं एं
निभ्रपतिभीतरपगुधारे करिमनामगइनेसुतनचारो हरिगृहमारिहरिकहंपहुंचाई गेनिज
निजभवननसवभाई सषिनसंगनसंगइमैराम चरितकरहिंनितिनतेनराम विहरतकहुं
सषेनकेसंगे गरुरंगनजुवतिनकेरंगै कहुंसुनहिंमुनिवरसौंग्यानहिं कहुंसामव्रषटकहूंपुरानहिं
छंद कौतुकनिसकेविस्तारवहुविधिचरितअगनिजरामके अषदहनदोनीचारिफलकेकारनमनस
दग्रामके जोकहतसुनतसुजाननपुनितेहिंसुलभचारिउमुकुतिहैं मनरंजनीसतग्रंथवहुकीपहिकु
पामरुबकुतिहैं सोरठा हरिकेचरितअपार कोवरनैमैमंदमति अपनीमतिअनुसारवरनीकछुमुकु
तिरूपा दोहा गुरुवानीहनिवंनशिवसंतसियारघुनाथ चरनकमलवंदनकरतपुनिपुनिमनविसुना

श्री

१००

जाइपितासरलाएपंनिकरिमनामसुषदींन सोरठा वैठेपितुदरवार रामचंद्रसवसवंनजुत भूपतिपरम
उदार ननैसहितराजतभयो ३७ चौपाई वैठेलसहिंवीररघुवंसी विरदप्रसंसहिंविरदप्रसंसी क
विको विद्ध सौरोछिति गायक सोहैंसभासवैसुषदायक वोलतचोपदारतहंभावैं जोजसजेहिंजसकु
हिवैठावैं दसरथछत्रसुछत्रछवीलो चारुचोरचहुंओरचलैवर चंचलभएमनहुंवकुससिकर॥
अतालेनअरुविजंनविसाला पांनदांनधनुसरअसिढाला चहुंदिसिषिजमततदारलिएहैं॥
भूपतिरुषमोविततरऐहैं सिंहासनसविनासंमछाजैं दसरथराजराजमधिराजैं छंद तहंलस
हिंमंत्रीआठसिहरषजपंनवषानिये क्रुशिऐसुराटहुरापवरधंतुअरुअकोपहिंजोतिए औध
मेपालतरमंतसतिवादी नृपतिहितकोचहैं नहिचकहिंस्वारथस्वामिअरथीदानदेतहिंसुषलहैं सो
रठा रितुजयमंत्रिहुदोइ वांमदेववशिष्ठ कुलमंत्रीसवकोइ तिनकेनामगनावहूं ३८ चौ
पाई कसपश्रीसुभजज्ञजवाली जिनकेअनुपंमवुधविसाली औरमारकंडेवरुगोतम कतायनजु
नमंत्रीअनुपंम यहमंत्रश्रीज्ञांनहिंजांना विद्याविवेकजुक्तिपहिचाना कारजनिपुनकरनजेज्ञांने वृत्तनि
रतआठधरसवजानें विक्रमदृढअरुकीरतिवंता सावधानन्रपकाजमंता सवेभूपकीअज्ञाकारी तेन